

# नक्षत्र मीमांसा



- मुनि कृपाबोधिविजय





॥ शासनपति श्री महावीरस्वामी ने नमः ॥ ॥ श्री धर्मनाथस्वामी ने नमः ॥

नमो नमः श्री गुरु प्रेम-भुवनभानु-पद्म-जयघोष-राजेन्द्र-हेमचन्द्र-संयमबोधिसूरीशेभ्यः

# नक्षत्र मीमांसा

जैन ग्रन्थों के आधार पर नक्षत्र सम्बन्धित ठोस चर्चा

❖ परामर्शदाता ❖

पू. आचार्य श्री जयसुन्दरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संकलन-चिन्तन ❖

पू. आचार्य श्री संयमबोधिसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्य  
मुनि कृपाबोधिविजयजी म. सा.

❖ प्रकाशक - प्राप्ति स्थल ❖

जैनम् परिवार,  
२२, नाकोडा पार्क, सिनेप्राइड की गली में, कृष्णनगर,  
नरोडा रोड, अहमदाबाद - ३८२ ३४६  
मो. ८९८०१ २१७१२

पुस्तक का नाम	: नक्षत्र मीमांसा
आधार ग्रन्थ	: सूर्यप्रज्ञप्ति, चंद्रप्रज्ञप्ति, ज्योतिष करण्डक, मण्डल प्रकरण, ठाणांग सूत्र आदि
अन्य ग्रन्थ	: वेदांग ज्योतिष, सूर्यसिद्धान्त, Ephemeris Data आदि
भाषा	: हिन्दी
प्रकाशन तारीख	: महा सुद १०, २२ फरवरी २०२१
संकलन - चिन्तन	: प.पू. मुनिराज श्री कृपाबोधिविजयजी म.सा.
अनुवाद	: पवनकुमार बैद
अनुवाद सौजन्य	: श्री पो. हे. जैननगर जैन संघ
विषय	: जैन ग्रन्थ, अन्य ग्रन्थ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नक्षत्र की मान्यता के सन्दर्भ में गहरा संशोधन

संशोधित आवृत्ति प्रतियाँ : ५००

मूल्य : १८०

# अनुक्रमणिका

अध्याय	पेज
ज्योतिषचक्र की व्यक्ति-समुदाय पर होने वाली असर का रहस्य	१
नक्षत्रों से सम्बन्धित जैन पंचांग का विच्छेद मानें या नहीं ?	५
संशोधन - पूर्वाचार्यों की विद्वता पर शंका या श्रद्धा ?	७
जैनेतर ज्योतिष / खगोल ग्रन्थों में नक्षत्रों का महत्त्व	१०
जैन आगमों में प्राप्त नक्षत्र-सम्बन्धित हकीकतें	१८
यूरोपीय खगोल के मतानुसार नक्षत्रों / राशियों की व्यवस्था	४७
सर्वज्ञमत की आधुनिक खगोल के साथ भेदाभेद की विचारणा	५१
शास्त्रीय सिद्धान्तानुसार और प्रत्यक्ष के साथ मेल साधने से पंचांग बनता है ?	५६
(१) नक्षत्रों की संख्या २८ है या २७ - एक मीमांसा	६१
(२) नक्षत्रोंका विस्तार समान या असमान ?	६३
नक्षत्रका चन्द्रके योग के साथ संस्कार	७१
(३) सायन-निरयन बिन्दु की सत्यता	७२
शास्त्रपाठ के अनुसार एक वर्ष का चन्द्र-सूर्य का नक्षत्र का गणित (संस्कार रहित)	८२
शास्त्रपाठ के अनुसार एक वर्ष का चन्द्र-सूर्य का नक्षत्र का गणित (संस्कार सहित)	१०७

## आगम रूपी दीप में नक्षत्रों का उजाला

सर्वज्ञ भगवन्तों के केवलज्ञान के प्रकाश में विश्वकी शाश्वत एवं अशाश्वत सभी व्यवस्थाएँ प्रतिबिम्बित हुई उसमें से वाच्य पदार्थों का भी अंश मात्र ही श्रुत में निबद्ध हुआ, फिर भी आज के ज्ञान की भिन्न-भिन्न अनेक शाखाओं का मूल इसी श्रुत में मिलता है।

चार अनुयोग में विभाजित श्रुतरत्नाकर में गणितानुयोग के ग्रन्थ और उनकी गहराई आज भी ठीक-ठीक मात्रा में उपलब्ध हैं, किन्तु उनका सचोट अर्थघटन करके सर्वज्ञ की सर्वज्ञता की यशोपताका को विश्वपटल पर लहराने वाले विद्वान ढूँढने पर भी नहीं मिलते। लगभग उपेक्षित हो चुके इन ग्रन्थों के पदार्थ आधुनिक यूरोपियन ग्रहादि गणित को दिशानिर्देश देने में समर्थ हैं, और साथ ही जिनशासन के अनेक अभ्यन्तर प्रश्नोंके सन्तोषप्रद समाधान देने में भी समर्थ हैं।

- ये सभी समाधान जन-कल्याणकारी और आत्म-हितकारी भी हैं,
  - ये समाधान संघर्ष और संक्लेशनाशक होने के साथ शासनोन्नतिकारक भी है,
  - ये सभी समाधान जिनशासन की अभ्यन्तर व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सक्षम तो हैं ही, और साथ ही बाह्य आक्रमण दूर करने में भी समर्थ हैं...।
- इसीलिए इस विषय के संशोधन में निष्पक्ष, शासनरसिक गीतार्थ विद्वानों की जागरूकता अत्यन्त आवश्यक है।

देव-गुरु कृपा से सूर्यप्रज्ञप्ति, मण्डल प्रकरण, क्षेत्र लोकप्रकाश इत्यादि ग्रन्थों के अभ्यास में मुझे जो उहा-पोह, स्फुरणाएँ हुईं, उस सन्दर्भ में विद्वानों के साथ बार-बार परामर्श करते-करते इस विषय में थोड़ी गति हो सकी। उपकारी महापुरुषों द्वारा इसे लिपिबद्ध करने की प्रेरणा होने पर उनकी प्रेरणा आज्ञातुल्य मानते हुए मैंने लेखन कार्य प्रारम्भ किया, जो आज 'नक्षत्र मीमांसा' के नाम से श्रीसंघ के चरण-कमल में प्रस्तुत है। अधिकृत विद्वान इसका सानुग्रह अभ्यास करके उपकृत करें, ऐसी नम्र विनती...

अभ्यास करते हुए वेदांग ज्योतिष पर आधारित मैसूर से प्रकाशित शामशास्त्री की टीका से युक्त एक ग्रन्थ मिला। ई. स. पूर्व ११०० से १५०० में रचित इस ग्रन्थ पर शामशास्त्री की टीका है, उसी टीकाकार के शब्दों में 'सूर्यप्रज्ञप्ति' के विषय में जो उल्लेख मिला, वह निम्नलिखित है :

**'सूर्यज्ञप्ति सुभाषितैस्समुच्चयैरम्लानमाला कृतां।**

**धृत्वा मूर्ध्नि कृतो मयाऽस्य विवृतौ यत्नस्सतां सम्मुदे ॥ १४ ॥'**

अर्थात् सूर्यज्ञप्ति (प्रज्ञप्ति) के सुभाषित रूपी पुष्पों से विकसित माला को मस्तक पर धारण करके सज्जनों के आनन्द हेतु मेरे द्वारा इसकी (वेदांग ज्योतिष की) टीका में यत्न किया गया है।। १४ ॥

अन्यदर्शनी की कलम से लिखे ये शब्द क्या यह सूचित करने हेतु पर्याप्त नहीं हैं, कि सूर्यप्रज्ञप्ति आदि जैन आगमों का स्थान और मान खगोलशास्त्र (ग्रहादिगणित) एवं ज्योतिष विषय के विद्वानों में कितना था ?

हृदय को प्रफुल्लित करने वाले इस प्रकार के अनेकानेक सुभाषित मिलने के कारण उत्साह में वृद्धि होती गई, उपरान्त देव और गुरु की असीम कृपा का बल मिलने से सूर्यप्रज्ञप्ति ग्रन्थ के सहारे नक्षत्र से सम्बन्धित जो ज्ञान खुलता गया वही 'नक्षत्र-मीमांसा' के द्वारा अस्तित्व में आया।

● दिव्य सांनिध्य से सतत बल प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वर जी म. सा. और पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय भुवनभानुसूरीश्वर जी म. सा. के चरणों में कोटिशः वन्दना...।

● इस ग्रन्थ के सृजन के आज्ञादाता, और अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से इस ग्रन्थ को नवपल्लवित करने वाले पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय जयघोषसूरीश्वर जी म. सा. के चरणों में वन्दना...।

● जिनकी शीतल छाया उपशम भाव की साधना का मूल है, ऐसे प्रशान्तमूर्ति वर्तमान गच्छाधिपति प.पू.आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वर जी म. सा. के चरणों में वन्दना ।

● पंचांग निर्माण का स्वप्न सृजित करने वाले और इस हेतु सतत प्रेरणा देने

वाले दादा गुरुदेव पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय हेमचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के चरणों में वन्दना...।

- समस्त विषयवस्तु को जाँचकर अपनी तार्किक प्रज्ञायुक्त कलम से इसका परिमार्जन करके उत्साह में सतत वृद्धि करने वाले पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय जयसुन्दरसूरीश्वरजी म. सा. के चरणों में वन्दना।
- प्रवरसमितिके अन्तर्गत पंचांग समिति के कार्यवाहक पद का उत्तरदायित्व सुचारु रूप से निभाने वाले प. पू. आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय भाग्येशविजयसूरीश्वरजी म. सा. के चरणों में वन्दना...।
- भवोदधितारक गुरु और विद्यागुरु के रूप में उभय उत्तरदायित्व वहन करके सतत मार्गदर्शक बनने वाले पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय संयमबोधिसूरीश्वरजी म. सा. के चरणों में वन्दना...।
- संयम जीवन ग्रहण करने की सहमति देकर सतत निर्मल जीवन जीने और सार्थक शासन सेवा करने की प्रेरणा देनेवाली प.पू.बापजी म.सा. के समुदाय की सा. श्री ज्योतिरत्नाश्रीजी म.सा. की शिष्या सा. श्री गुप्तित्रयाश्रीजी (पू. माँ म.सा.) सा. श्री नम्राशयाश्रीजी (पू. बहन म.सा.) के चरणों में वन्दन।
- मेरे संयम जीवन में सतत सहकार, सौहार्द और स्नेह की पूर्ति करने वाले बड़े बन्धु पू. मुनिराजश्री जिनबोधि म.सा., लघु बन्धु पू. मुनिराजश्री तारक, परार्थ, धन्य और शासनबोधि म.सा. और शिष्य मुनिश्री वर्धमानबोधि विजयजी म.सा. का भी कृतज्ञभाव से स्मरण।
- पुस्तक की विषयवस्तु पढ़कर, आवश्यक सूचनाओं के द्वारा इस ग्रन्थ की उपादेयता में वृद्धि करने वाले सुश्रावक जयेन्द्रभाई रमणभाई शाह (जरशा) को भी कृतज्ञभाव से धन्यवाद।
- २०१९ में भारत सरकार द्वारा संस्कृत एवं ज्योतिष विषय में राष्ट्रपति अवॉर्ड से सम्मानित पण्डितवर्य श्री सत्यदेव शर्मा ने जैन ग्रन्थों (सूर्यप्रज्ञप्ति - चन्द्रप्रज्ञप्ति) और जैनाचार्यों द्वारा कृत खगोल एवं ज्योतिष के विषय के विवेचन की प्रशंसा करते हुए अपने सूर्य सिद्धान्त, सिद्धान्त शिरोमणि आदि

ग्रन्थ पढ़ने का सुझाव दिया, जिनसे प्राचीन एवं आधुनिक काल की परम्परा का समन्वय करने की कुंजी मिली, अतः पण्डित जी का खूब-खूब धन्यवाद।

● मुद्रण कार्य में सतत सहायक अपूर्वभाई शाह (अहमदाबाद) और दिनेश भाई मुदकर्णी (घाटकोपर, मुम्बई) को भी धन्यवाद...।

निष्पक्ष गीतार्थों से नम्र विनती है, कि शास्त्रपाठ को (संस्कार सहित) व्यवस्थित उजागर करने से वर्तमान के प्रत्यक्ष आकाश के साथ भी शास्त्रीय गणित का तालमेल बैठता ही है, इसलिए 'मात्र पंचांग गणित का विच्छेद हुआ है' - ऐसा मानते हुए उपलब्ध श्रुत-विरासत की उपेक्षा करना उचित नहीं है। उपरान्त, आराधना हेतु तिथि गणित जितना आवश्यक है, उसी प्रकार आराधना शुद्धि के लिए नक्षत्र गणित उतना ही, बल्कि अपेक्षाकृत उससे अधिक आवश्यक है। आज भी नक्षत्र गणित की विरासत हमारे आगमों में सुरक्षित है, अतः इनकी उपेक्षा कैसे की जा सकती है?

उपरान्त, इस ग्रन्थ में प्राप्त सामग्री / साक्षी-पाठ द्वारा चिन्तनात्मक लेख लिखे गए हैं, जो अन्तिम निष्कर्ष नहीं, बल्कि ठोस विचारणा है। अतः सभी अधिकृत निष्पक्ष गीतार्थ इस लेख को पढ़ें, विचारें और अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा के द्वारा अधिक सत्य-शास्त्र सापेक्ष बनाते हुए मुझे एवं श्रीसंघ को मार्गदर्शन दें, ऐसी करबद्ध प्रार्थना है।

मुनि कृपाबोधिविजय  
कोसम्बा, फा. सु. १५

पू. मुनिराज श्री कृपाबोधिविजय जी म. सा.

द्वारा लिखित / सम्पादित खगोल विषयक ग्रन्थ

- जैन आगमिक गणित आधारित पंचांग प्रक्रिया
- मण्डल प्रकरण (पदार्थ प्रकाश भाग - २५)
- नक्षत्र मीमांसा
- तिथि मीमांसा
- संस्कारयुक्त जैन पंचांग (हाल प्रेस में)

॥ ॐ दुर्गायै नमः ॥

फोन : 332112



श्री नवदुर्गा ज्योतिष निकुलिनिका निकायः

ई-116, मुरलीपुरा स्कीम, सीकर रोड, जयपुर-302 029 (राज.)

संचालक :

पं. सत्यदेव शर्मा

एम.एस.सी. (गणित-विद्वान् ज्योतिष के साथ)

सी. ए. आई. आई. बी.

दिनांक : 14 मार्च 2020

### सम्प्रति पत्र

परमपूज्य मुनिस्री श्री 1008 कृपाबोधविजय जी महाराज द्वारा संकलित एवं लिखित 'नक्षत्र मीमांसा' नामक लघु ग्रंथ का मैंने आवेष्टांत अवलोकन किया। इसमें आचार्यश्री ने जैन, हिन्दु तथा आधुनिक ज्योतिष विधाओं का सम्बन्ध अध्ययन करके इन तीनों विधाओं में नक्षत्रों की अवधारणा के संबंध में आधारभूत मान्यताओं एवं सिद्धान्तों की समरूपता एवं भिन्नताओं को परिष्कृत करके का सुन्दर प्रकाश किया है। आपने ग्रंथ में आदिकालिक नक्षत्र अवधारणा तथा उसके आदिस्वरूप को महत्व देते हुए उनके संबंध में प्राप्त विषय सामग्री को, जो इन तीनों विधाओं में प्राप्त होती है, विस्तार से कहे का सराहनीय प्रकाश किया है।

ग्रंथके आरम्भ में जैन ग्रंथों के आधार पर ठोस विचार मुनिस्री ने प्रस्तुत किये हैं, जिनके अन्तर्गत ज्योतिष का व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभाव के रहस्य, जैन पञ्चाङ्गों में नक्षत्र विषय संबंधी विद्ये की मान्यता, पूर्वोक्तार्थों की विद्वत्ता पर शंका अथवा सन्देह जैसे बिन्दुओं के अन्तर्गत विषय को विस्तार दिया है। जैन साहित्य में ज्योतिष संबंधी ग्रंथों के उल्लेख के साथ ज्योतिष चक्र में अढ़ाई डीप, दो सूर्य, दो चन्द्र, जम्बू डीप, नक्षत्रों के मान तथा स्थान, ग्रहादि की महत्त्वता इत्यादि पर भी सम्पूज्य प्रकाश डाला गया है। नक्षत्र समूहों से समाग-मान की शक्तियों की मान्यता, नक्षत्रों के नाम-स्वाग-आकार तथा उनके चार-दश

पृष्ठ-2

पं. सत्यदेव शर्मा

पर भी उपोचित आगम जैन शास्त्रों के आधार पर प्रकाश डाला गया है।

चन्द्रमा तथा नक्षत्रों के (1) उत्तराभिमुख (2) दक्षिणाभिमुख तथा (3) प्रसद, तीव्र प्रकार के योग; सूर्य के साथ नक्षत्र तथा राशिओं के योग; युगारम्भ पर आकाश में सूर्य-चन्द्रमा-पुष्य तथा अभिहित नक्षत्रों की स्थिति आदि पर जैन आगम शास्त्रानुसार सुन्दर प्रकाश भी डाला गया है; जो बहुत ही सराहनीय तथा प्रभावशाली है।

ग्रंथ में आज के यूरोपीय मत से भगोल में नक्षत्रों तथा राशिओं की व्यवस्था एवं कोपनिकस की सूर्यकेन्द्रिक अवधारणा पर सरल तथा स्पष्ट वर्णन किया गया है।

जिनमत तथा आधुनिक मतानुसार नक्षत्रों की माप, नक्षत्रों से चन्द्रमा का योगकाल, नक्षत्रमास, साधनवर्ष, सूर्य के उत्तराधन-दक्षिणाधन मार्ग की दिक्सादि में माप, निर्धनवर्ष आदि पर भी सूक्ष्मता से तर्क-वितर्क द्वारा दोनों विधाओं में समानता-असमानता का प्रतिपादन मार्मिक रूप में मुनिहरी ने विद्वता पूर्वक किया है। मुनिहरी ने हिन्दु (भारतीय) ज्योतिष परम्परा में पूर्वाचार्यों तथा उनके ग्रन्थों का वर्णन करके उनमें कथित उपरोक्त विषयों के संबंधित उद्धरण दिये हैं, जो श्रेष्ठ हैं।

ग्रन्थ में 'साधन-निरधन बिन्दु की सत्ता' विषय पर तीनों विधाओं के सिद्धान्तों के मतों पर विश्लेषणात्मक अध्यापन प्रस्तुत किया है, जिसको जानना बहुत ही लाभदायक है तथा इसका ज्ञान शोध-कार्यों एवं विषय के भ्रान्चार्यों के लिए अति महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

मुनिहरी का 'नक्षत्रमीमांसा' ग्रंथ में विस्तार से जैन ज्योतिषमत के आगम सिद्धान्तों का आधुनिक तथा भारतीय (हिन्दु) ज्योतिष सिद्धान्तों के साथ तुलनात्मक अध्यापन प्रस्तुत करने

(3)

का अभिप्राय यह परि लक्षित होता (दिखाई देता) है कि जिन -  
ज्योतिषमत का सम्बन्ध <sup>अध्याय</sup> कि पाजाप तथा इसके सिद्धान्तों,  
मान्यताओं तथा गणनाओं की शुद्धता एवं प्राप्तियों के महत्व  
को उद्घाटन से सम्बन्धित जाण-चाहिए तथा उनको महत्व दिया  
जाण-चाहिए।

में मुक्ति के द्वारा संकलित तथा रचित 'नक्षत्रमीमांसा'  
नामक ग्रन्थ की विषय सामग्री तथा उसके प्रस्तुतिकरण  
से बहुत प्रसन्नता अनुभव करता हूँ एवं पूज्य मुक्ति से  
नमनवेदन करता हूँ कि वे अपनी पशुची लोचनी को इसी  
प्रकार गति देते रहें तथा जिन-भाग्यशास्त्रों के शुद्ध रहस्यमय  
जाण को सर्वसुलभ कराने का श्रेष्ठ कार्य करते रहें, जिससे  
सभी इसके महत्व को समझ सकें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

पं. सतपदेन शास्त्री  
14-03-2020  
ई-111 मुरलीपुरा स्कॉल  
जयपुर-302039  
रत्नस्थान

## नक्षत्र मीमांसा

### जैन ग्रन्थों के आधार पर नक्षत्रों से सम्बन्धित ठोस चर्चा विचारणा ज्योतिषचक्र का व्यक्ति-समुदाय पर होने वाली असर का रहस्य

विश्व के सभी पदार्थ भले वह जीव हो या जड़, सब पर द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की एक निश्चत असर होती दिखाई देती है। कैमेट्री के अनुसार  $O_2 =$  ऑक्सीजन (प्राणवायु),  $O_3 =$  ओजोन (जहरीली वायु) होती है। मतलब यह कि विज्ञान के अनुसार मात्र 'एक' व्यावहारिक परमाणु द्रव्य की इतनी ताकत है, कि वह प्राणवायु को प्राणघातक वायु में रूपान्तरित कर देता है। सर्वज्ञ भगवन्त तो कहते ही हैं, कि प्रत्येक द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपनी विशेष असर होती है, जो कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक होती है। ये असर समष्टिगत या व्यक्तिगत, दोनों प्रकार की होती है। इस प्रकरण में काल द्रव्य का विशिष्ट चिन्तन किया गया है।

वर्तमान में भरत क्षेत्र में हुण्डाअवसर्पिणी काल चल रहा है, इसलिए काल का अधिकतम नकारात्मक असर समष्टिगत रूप से हो रहा है। यहाँ प्रश्न उद्भव होता है, कि जीव और जड़ सृष्टि पर एक साथ ऐसी नकारात्मक असर डालने वाला तत्त्व आखिर क्या है? उसका स्वरूप कैसा है?

वास्तवमें काल के प्रवाहमें हर वस्तु या पदार्थ के अलग-अलग स्वरूप, पर्याय या अवस्थाओं का सृजन, विसर्जन या रूपान्तरण होता रहता है। छः द्रव्यों में जीव, अजीव, धर्म, अधर्म, आकाश और काल का समावेश होता है, और इसे (काल को) अजीव के उत्तरभेद के रूप में शामिल किया गया है।

प्रस्तुत निबन्ध में काल के परिवर्तन का स्वरूप और दर्शन की पहचान ज्योतिष के विविध भेद, सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और तारों के विमान - जो भिन्न-भिन्न रत्नों से बने हैं, उन विमानों की गति, उनके परस्पर योग आदि को अयन और मण्डलों द्वारा दिखाने का प्रयत्न किया गया है। 'इन रत्नों के प्रकाश की विशिष्ट असर मध्यलोक के सभी पदार्थों पर होती है। यहाँ विशेष रूप से यह बात उल्लेखनीय है,

१. रयणियर-दिणयरारणं नक्खत्ताणं च महागहाणं च ।

चारविसेसेण भवे सुहदुक्खविही मणुस्साणं ॥ ( देविंदत्थओ पयन्ना-गा.१३९ )

कि काल तत्त्व और ज्योतिष-चक्र के विमानों की सतह के रत्नों के प्रकाश की ऊर्जा ढाई द्वीप (मनुष्य लोक) में भी एक असर पैदा करती है।

ढाई द्वीप के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विभिन्न काल के अनुसार यह असर अच्छा या खराब हो सकता है। ढाई द्वीप के बाहर स्थित असंख्य द्वीप और समुद्रों के आकाश में स्थित ज्योतिष विमान स्थिर या अचल होने के कारण वहाँ इस प्रकार का परिवर्तनशील असर देखने को नहीं मिलता। इसलिए ढाई द्वीप से जुड़े काल के अशुभ असर से बचने या शुभ असर का अधिक लाभ पाने के लिए ज्योतिष चक्र के परिवर्तित होने वाले शुभ-अशुभ मुहूर्त और सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ग्रह आदि के सामंजस्य से बनने वाले शुभ-अशुभ योगों का शास्त्रों में सूक्ष्मता और विस्तार से विवेचन किया गया है।

ढाई द्वीप में सूर्य, चन्द्र आदि के स्थान सतत बदलते रहते हैं। तारों, ग्रहों और नक्षत्रों के भी परस्पर योग होने के उपरान्त भी (१) कल्पवृक्ष वाले युगलिक क्षेत्र में इस ऊर्जा का असर नहीं होता, (२) महाविदेह में अल्प असर होता है, और (३) भरत ऐरवत क्षेत्र में अधिकतम प्रभाव होता है, इसलिए विशेष परिवर्तन यहीं होता है।

जिस प्रकार क्रोध या क्षमा आदि भावों में प्रशस्त-अप्रशस्त भेद होते हैं, उसी प्रकार अवसर्पिणी या उत्सर्पिणी काल के भी प्रशस्त-अप्रशस्त भेद होते हैं। अवसर्पिणी काल क्रमशः अधोगति या पतन की ओर ले जाने वाला काल होने पर भी ज्योतिषचक्रके परिवर्तित होने वाले योगों के साथ शुभ और अशुभ दोनों प्रकार की असर होती रहती है। इसलिए शुभ योग में कार्य करने से इष्ट फल की सिद्धि भी प्राप्त हो सकती है। यह व्यवहारिक लाभ लेने के लिए ही ज्योतिषशास्त्र का उपयोग किया जाता है। अपेक्षा से ज्योतिष (भविष्यवाणी) की तुलना में ग्रहगति के गणित का ज्ञान होना अधिक आवश्यक है, क्योंकि सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ग्रह आदि की चाल, गति, मण्डल आदि की जानकारी के अभाव में उसके योग एवं उसका फलकथन (ज्योतिष) कैसे सम्भव हो सकता है? अतः ग्रहगति के गणितीय विज्ञान के द्वारा सूर्य, चन्द्र आदि की गति, ग्रहण और योग की जानकारी मिलती है और ज्योतिषशास्त्र के द्वारा इनके सकारात्मक या नकारात्मक असर की जानकारी

भी मिलती है। किन्तु दुःख इस बात का है, कि वर्तमान जिनशासन में ज्योतिष के अभ्यास का अच्छा खासा विस्तार होने के बावजूद ज्योतिष के आधारभूत ठाणांग, भगवतीजी, जीवाजीवाभिगम, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति जैसे अंग-उपांग सूत्रों में त्रैकालिक सत्यभूत ग्रहगति के गणित का जो उल्लेख मिलता है, उसका अभ्यास प्रायः उपेक्षित रहा है, और पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किए गए संशोधनों को त्रैकालिक सत्यवत् स्वीकार करके उनसे ही पंचांग और ज्योतिष चक्र की जानकारी ली जा रही है। यह उचित है या अनुचित, यह तो विशिष्ट ज्ञानी ही बता सकते हैं।

वैसे, खगोल विज्ञान का अभ्यास मुहूर्तशुद्धि के लिए अतिआवश्यक है। क्योंकि मुहूर्तशुद्धि से इष्टभावों की प्राप्ति और उस निमित्त से अशुभ कर्म का उपशम और शुभ कर्मों का उदय होता है। इसलिए जैन संघ में इस विषय पर अभ्यास बढे, इसकी अधिक आवश्यकता मेहसूस होती है।

ग्रहगति के गणित का ज्ञान → मुहूर्तशुद्धि → शुभ भावों का प्रकटीकरण → शुभ कर्मों का उदय

हम फिर से यह स्पष्ट करना चाहेंगे कि यह लेख अन्तिम निष्कर्ष नहीं, बल्कि निष्कर्ष में सहायक बने इस उद्देश्य से उपलब्ध सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

ज्ञान त्रैकालिक सत्य है, जिसका विच्छेद सम्भव नहीं है, इसीलिए द्वादशांगी को भी अर्थ से शाश्वत माना गया है। जैसे १८ लिपियों का ज्ञान भी शाश्वत है, हो सकता है कि उन लिपियों को पहचानने वाले विद्वानों का विच्छेद हो गया हो। वैसे ही पंचांग से सम्बन्धित ज्ञान भी विच्छेद नहीं होगा, किन्तु उसे जानने वाले विद्वानों का विच्छेद होना सम्भव है (जैसे ब्राह्मी लिपि) किन्तु यदि ज्ञान उपलब्ध है, तो (१) आत्मशुद्धि से, (२) दैवी सहायता से या (३) वर्तमान के आविष्कारक उपकरणों के द्वारा ग्रहगति से सम्बन्धित किए गए निरीक्षण और माप के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों के प्रामाणिक उपयोग से क्या वह परम्परा पुनर्जीवित नहीं हो सकती ? ब्राह्मी लिपि को पुनर्जीवित करने जैसी विविध घटनाएँ वर्तमान में और भी बनी है, बन रही है

जिसमें लुप्त हो चुकी परम्परा को पुरुषार्थ एवं संशोधन के द्वारा पुनर्जीवित किया गया। उसी प्रकार धर्म के क्षेत्र में भी आत्मशुद्धि या दैवी सहायता से ग्रन्थों का मिलान या जीर्णोद्धार किया गया हो, ऐसे दृष्टान्त भी देखने को मिलते हैं।

संयमी का मार्गस्थ पुरुषार्थ और वर्तमान के आविष्कारक उपकरणों के द्वारा ग्रहगति से सम्बन्धित किए गए निरिक्षण और माप के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों का गृहस्थ द्वारा किया जाने वाला प्रामाणिक उपयोग क्या इस परम्परा को पुनर्जीवित नहीं कर सकते? तो फिर इस ज्ञान का विच्छेद कैसे मान सकते हैं? क्या 'जैन पंचांग का विच्छेद हो गया' ऐसा कहना शत प्रतिशत सत्य है? यदि ऐसा है, तो सूर्यप्रज्ञप्ति आदि शास्त्रों के आधार पर  $^{61}/_{62}$  अंशात्मक तिथि का ज्ञान, जो आज सम्भव है, वह भी सम्भव नहीं रहा होता।

## नक्षत्रों से सम्बन्धित जैन पंचांग का विच्छेद मानें या नहीं ?

नक्षत्रों से सम्बन्धित जैन पंचांग (टिप्पणक) का विच्छेद हुआ है या नहीं, इस विषय में चर्चा करने से पूर्व इतिहास की ओर थोड़ा दृष्टिपात करने की आवश्यकता है।

(१) दीपावली (आ. व. ०)), शास्त्रीय (का. व. ०)) के दिन स्वाति नक्षत्र में प्रभु वीर का निर्वाण हुआ।

(२) प्रभु के निर्वाण से 3 वर्ष 8<sup>1</sup>/<sub>2</sub> महीने, अर्थात् वीर सम्बत् ४ (चौथे) वर्ष से पांचवें आरे की शुरुआत हुई।

(३) अत्यन्त गहन और गम्भीर पदार्थों से युक्त कालिकसूत्र सूर्यप्रज्ञप्ति की रचना भी प्रायः इसी समय की है।

(४) वीर सम्बत् १७० के आस-पास चौदहपूर्वधर श्री भद्रबाहुस्वामी द्वारा सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र पर निर्युक्ति की रचना हुई, अर्थात् उपांग होते हुए भी वीर सम्बत् १७० से पहले सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र की रचना हो चुकी थी। उपरान्त कालिकसूत्र में उसका समावेश है, जो यह दर्शाता है कि यह अति-गम्भीर और रहस्यपूर्ण सूत्र है।

(५) सूर्यप्रज्ञप्ति मूल सूत्र में सूर्य, चन्द्र एवं नक्षत्रों से सम्बन्धित सिद्धान्तों की समझ दी गई है, और इस मूल सूत्र में नक्षत्रों के जो स्थान, मण्डल आदि बताए हैं, वे वर्तमान में भी आकाश की स्थिति के साथ मेल खाते हैं। यद्यपि आज के पंचांग, जो ग्रीक परम्परा से प्रभावित हैं, उनमें यह जानकारी नहीं मिलती। अर्थात् आकाश अलग है, और आधुनिक पंचांग अलग बात बोलते हैं।

(६) उपरान्त ठाणांग मूल सूत्र में भी नक्षत्रों की जानकारी मिलती है। विक्रम की चौथी सदी में श्री पादलिप्तसूरिजी द्वारा रचित ज्योतिष करण्डक में भी यही जानकारी मिलती है।

(७) वीर सं. ९८० में हुई वल्लभीपुर वाचना में मौखिक ज्ञान को पुस्तकारूढ़ किया गया। उस समय लिखित आगमों में भी नक्षत्र से सम्बन्धित पाया जाने वाला सारा ज्ञान आज की प्राचीन या वर्तमान मान्यताओं से, अर्थात् लौकिक ज्ञान से भिन्न है।

(८) तत्पश्चात् विक्रम सम्बत् १४८६ में रचित पर्युषण स्थिति-विचार में तिथि से सम्बन्धित जानकारियों को केन्द्र में रखते हुए जैन टिप्पणक का विच्छेद बताया गया है, किन्तु कहीं भी नक्षत्रादि का उल्लेख नहीं है। उपरान्त सर्वप्रथम एक ही व्यक्ति रूपी मुनि द्वारा दर्शित 'जैन पंचांग के विच्छेद' के आधार पर तटस्थ बुद्धि से 'कष-छेद-ताप कसौटी' द्वारा विचार करने का क्या जैन संघ को अधिकार नहीं होता ?

(९) अन्य दर्शन (वैदिक) परम्परा की ओर देखें, तो प्रायः विक्रम की सातवीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त आचार्य, आठवीं शताब्दी में वटेश्वराचार्य और बारहवीं शताब्दी में हुए लीलावती गणित के रचनाकार भास्कराचार्य (द्वितीय) द्वारा रचित सिद्धान्तशिरोमणि आदि ग्रन्थों में जैनागमों में प्राप्त नक्षत्र की व्यवस्था को ही मुहूर्तशुद्धि के लिए मान्यता दी है, इसकी जानकारी पीछे दी गई है।

(१०) विक्रम की ११वीं सदी में वादिवेताल शान्तिसूरिजी के विद्याशिष्य वडगच्छीय आ. यशोभद्रसूरिजी की पाठ में हुए पू. आ. मुनिचन्द्रसूरिजी द्वारा कृत 'सूर्यचन्द्र मण्डल विचार' और 'कालविचारसयं' नामक ग्रन्थों में भी इसी प्रकार के उल्लेख प्राप्त होते हैं।

(११) इसके अलावा वि. सं. १६५२ में विनयकुशलगणि द्वारा पूर्वाचार्य मुनिचन्द्रसूरि कृत मण्डलकुलक और जीवाभिगम सूत्र के आधार पर मण्डल प्रकरणम् ग्रन्थ की रचना हुई। उस समय भी नक्षत्र से सम्बन्धित वे सभी जानकारियाँ मिलती हैं, जिसका रोचक वर्णन 'पदार्थ प्रकाश' भाग - २५ में दिया गया है।

(१२) तत्पश्चात् पू. उपाध्याय विनयविजयजी द्वारा रचित लोकप्रकाश ग्रन्थ में नक्षत्र के सम्बन्ध में भी यही जानकारी मिलती है।

क्या उपरोक्त जानकारी यह बताने के लिए पर्याप्त नहीं है कि नक्षत्र से सम्बन्धित गणित जानने के लिए आज भी जैनग्रन्थों में स्पष्टता है ?

क्या सूर्यप्रज्ञप्ति आदि लोकोत्तर ग्रन्थ और सिद्धान्त शिरोमणि आदि लौकिक ग्रन्थ नक्षत्र परम्परा का जो ज्ञान देते हैं, उसे देखते हुए भी इस ज्ञान परम्परा का

१. आप्तशास्तृकैः पुनराप्तवचनमेवमनूद्यते 'निकषच्छेदतापेभ्यः सुवर्णमिव पंडितैः,'

परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यं मद्बचो न तु गौरवात् ॥ १ले अष्टककी ५वीं गाथा की टीका

संशोधन

पूर्वाचार्यों की विद्वता पर शंका या श्रद्धा ?

उपरोक्त ठोस शास्त्रपाठ उपलब्ध होने पर भी वर्तमान लौकिक पंचांगों में प्राप्त नक्षत्र से जुड़ी जानकारी उनसे भिन्न है, और शास्त्र से भिन्न लौकिक स्वरूप को हमने स्वीकार भी किया है, अब यहाँ प्रश्न यह है, कि :

(१) लोकोत्तर और तदानुसार बने लौकिक ग्रन्थों से भिन्न परम्परा आज क्यों प्रवर्तमान है ? क्या इसका कोई शास्त्रसम्मत या तर्कसंगत कारण है ?

(२) अन्यदर्शन के विद्वान 'वेदांगज्योतिष' ग्रन्थ की टीका में कुन्दनलाल शर्मा द्वारा प्रकाशित 'वैदिक वाङ्मय का बृहद् इतिहास' पुस्तक के आधार पर लिखते हैं, कि विक्रम की पहली सदी में ग्रीक-यवन सभ्यता का आक्रमण हुआ, और उस समय वैदिक परम्परा ने अपनी परम्परा छोड़कर पाश्चात्य परम्परा अपनाई। किन्तु जैनाचार्यों ने अन्त तक अपनी शास्त्रसम्मत परम्परा नहीं छोड़ी। तो फिर आज हमने जैन परम्परा का विच्छेद मानकर लौकिक पाश्चात्य परम्परा स्वीकार की, इसका समझ में आने लायक कोई कारण है ?

(३) 'लोकप्रकाशकार' भी यदि अपने शास्त्रों में हमारी शास्त्रसम्मत परम्परा का ही उल्लेख करते हैं, तो लौकिक पाश्चात्य परम्परा का स्वीकार हमने कब से किया ? क्यों किया ?

इन तीन प्रश्नों के समाधान हेतु पूर्वग्रहरहित होकर (उपलब्ध निर्दोष सामग्री के द्वारा) संशोधन करना - क्या यह पूर्वाचार्यों की आशातना कही जाएगी ? क्या यह पूर्वाचार्यों की विद्वता पर शंका होगी ? क्या जैन सिद्धान्तों में कोई प्रचलित मान्यता या सिद्धान्त की कष-छेद-ताप कसौटी करना निषेध है ? नक्षत्र से सम्बन्धित वर्तमान की लौकिक मान्यता क्या पूर्वाचार्यों को स्वीकार थी ? मात्र गणित की सरलता के लिए हमने इसे स्वीकार किया था ? या मुहूर्त के लिए भी स्वीकार किया था ? जब तक इन सबका निश्चय न हो जाए, तब तक तटस्थ बुद्धि से कषादि कसौटी वाले संशोधन को पूर्वाचार्यों की आशातना के रूप में मानना (या उनके गौरववर्धन के रूप में ?) यह लौकिक प्रवाह में बिना सोचे-समझे बहने जैसा होने

के कारण मिथ्यात्व की पुष्टि करने जैसा है - क्या ऐसा नहीं लगता? प्राचीन काल की तुलना में आज का लौकिक नक्षत्र-गणित भिन्न है, बीच के समय के विद्वान महापुरुषों ने यदि इसकी कषादि कसौटी नहीं की, तो हम क्यों करें? क्या हम उन पूर्वाचार्यों से अधिक बुद्धिशाली हैं? ऐसा कुतर्क देकर सद्भाए मेहाए (श्रद्धा + तर्क = उभयगम्य) परम्परा के वाहक स्याद्वादियों की कषादि कसौटीरूप संशोधन वृत्ति को तोड़ने का यह प्रयास क्या सत्य तत्त्व तक पहुँचने में विघ्नभूत नहीं है?

(१) बीच के समय के विद्वान महापुरुषों ने सत्य मानकर लौकिक मत का स्वीकार किया हो, इस बात का प्रामाणिक उल्लेख अनेक गीतार्थ पूर्वाचार्यों ने प्रस्तुत किया हो, ऐसा कोई आधार नहीं मिलता, फिर भी;

(२) यदि मान लें कि पूर्वाचार्यों की अति-प्राचीन परम्परा काल के प्रभाव से कदाचित् लुप्त हो गई हो, और अन्य विकल्प के अभाव से लौकिक नक्षत्र-गणित स्वीकार किया गया हो, फिरभी वर्तमान के आविष्कारों के युग में अधिकृत विद्वानों के संशोधनों के निष्कर्षों के द्वारा पूर्व के ज्ञान का पुनर्मिलन असम्भव नहीं है - पूर्वकाल में इस सन्दर्भ में हुए प्रयासों की कोई जानकारी नहीं है, इसलिए यदि इस प्रकार मूल परम्परा के साथ हुए इस मेल-मिलाप के विषय में संशोधन किया जाए, उसे पूर्वाचार्यों की आशातना कैसे मान सकते हैं?

एक प्रश्न की व्यापक चर्चा है, कि आधुनिक विज्ञान टेलिस्कोप, सेटेलाइट आदि की मदद से आज की दुनिया जिस प्रकार की दिखा रहा है, वह जैन-दर्शन से काफी अलग है। फिर जैन ज्योतिष-गणित आज के ग्रह-गणित से कैसे मेल खा सकता है? इस प्रश्न का सन्तोषप्रद समाधान तो 'तत्त्वं तु केवलीगम्य' (केवली भगवन्त कथित बात ही तत्त्व है) है, किन्तु यह बात तय है, कि शास्त्रीय सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि का गणित, लौकिक सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र के गणित से अधिकांश रूप से एक सरीखा है, जिसका विवरण आगे के प्रकरण में है। इस बात से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि वर्तमान में आकाश में दिखने वाले सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि वे ही हैं जो शास्त्रों में बताए गए हैं, या शाश्वत सूर्यादि की जो गति है, उसके परिभ्रमण की कक्षाओं, मण्डलों का जो गणित है, उस गणित को ही आज के सूर्य, चन्द्रादि **Follow** करते हैं। इसलिए दृश्यमान और शास्त्रीय सूर्यादि दोनों एक न

भी हो, तो भी शास्त्रीय सूर्यादि के गणित से आज के प्रश्नों का समाधान अधिकांश रूप से मिल ही जाता है। खुद नासा की Site भी जैन और हिन्दू गणित की पद्धति को Follow करती है। तो यदि हम ही शास्त्रीय गणित की उपेक्षा करते हैं, तो क्या हमारे सम्यग्दर्शन में शंका, विचिकित्सा आदि दोष लगेंगे या नहीं ?

तटस्थ संशोधन करने से पूर्व इतनी जानकारी पर्याप्त है। तो आइए चलते हैं केवलज्ञान में प्रतिबिम्बित होने वाले आकाश की सफर पर, श्रुतज्ञान रूपी उपग्रह के द्वारा...

## जैनेतर ज्योतिष/खगोल ग्रन्थों में नक्षत्रों का महत्त्व

### ● अन्य (लौकिक) साहित्य की दृष्टि में :

- सनातन परम्परा के अति-प्राचीन ग्रन्थों, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद आदि मूल वेदों में ज्योतिष-विषयक जानकारी देने वाली सूक्तियों में नक्षत्र का उल्लेख मिलता है।

- तत्पश्चात् रचित सूर्यसिद्धान्त, रोमकसिद्धान्त, पोलिशसिद्धान्त, पैतामहसिद्धान्त आदि सभी में नक्षत्रों का उल्लेख है।

- लगधमुनि कृत 'वेदांगज्योतिष' नामक अति-प्राचीन और विश्वसनीय ग्रन्थ में भी नक्षत्र का उल्लेख मिलता है।

- चीन और तिब्बत के प्रदेशों में भी नक्षत्र-गणित स्वीकार किया गया था, वे नक्षत्र को 'सिऊ (Sicou)' कहते थे और उनकी संख्या २८ गिनते थे।

- अरब देशों के साहित्य में नक्षत्र का उल्लेख 'मनाज़िल' नाम से होता था, और उनकी संख्या २८ थी।

- इसके साथ 'विकिपीडिया' से मिली जानकारी के अनुसार चीन में २८ नक्षत्रों का उल्लेख [7 x 4 = 28] इस प्रकार ७-७ के ४ विभाग में किया गया है, उपरान्त उनके माप भी सम, सार्ध और अर्धक्षेत्री से प्रायः मिलते-जुलते हैं।

इस प्रकार अन्य दर्शन परम्परा में कहीं भी राशियों का उल्लेख प्रायः नहीं था, किन्तु नक्षत्रों का ही उल्लेख सर्वत्र मिलता था।

जैन साहित्य की दृष्टि में

सूर्य-चन्द्रप्रज्ञप्ति, ठाणांग आदि मूल आगमों में ज्योतिषकरण्डक, मण्डलप्रकरण, लोकप्रकाशादि विशिष्ट ग्रन्थों में हर स्थान पर नक्षत्र का ही उल्लेख मिलता है, कहीं भी स्पष्ट रूप से राशि का उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

\* 'गुजराती विश्वकोश' नामक पुस्तक में लिखा है, 'भारतीय ज्योतिष में राशि पद्धति लगभग १५०० वर्ष पूर्व 'सिद्धान्त ज्योतिष' के प्रारम्भ के समय अपनाई गई हो ऐसा दिखाया है। इससे पूर्व के भारतीय ज्योतिष में नक्षत्रों का ही उल्लेख मिलता है, राशि का नहीं। अतः राशिचक्र की पद्धति प्रायः ई. स. ४५० में ग्रीक प्रभाव में वराहमिहिर द्वारा अपनाई होगी ऐसा पता चलता है।'

इस बात से यह तो निश्चित है, कि प्राचीन भारतवर्ष की अन्य परम्परा में भी कहीं भी प्रायः राशि-गणित का उल्लेख था ही नहीं। और वीर सम्बत् ९५० से १००० के आस-पास भारतीय संस्कृति में राशि का Concept प्रचलित हुआ, फिर भी उस समय बने ग्रन्थों में और टीकाओं में भी नक्षत्र गणित का ही उल्लेख है, राशि का नहीं। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि, नक्षत्र का इतना महत्त्व क्यों है? क्या सूर्य, चन्द्र और ग्रहों के महत्त्व से अधिक नक्षत्रों का महत्त्व है? उत्तर यह है कि सूर्य, चन्द्र और ग्रहों की अपनी महत्ता अवश्य है, किन्तु नक्षत्रों की संख्या ग्रहों से अल्प होने, और अन्य की अपेक्षा इनकी शीघ्र गति होने के कारण खगोलीय घटनाओं में नक्षत्रों का योगदान अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसलिए नक्षत्र के ज्ञान के बिना ज्योतिषशास्त्र अधूरा है।

जिस प्रकार भारत देश के समस्त २८ राज्यों का अपना-अपना महत्त्व है, और इन सबके संगठन से ही भारत देश सम्पूर्ण बनता है। किन्तु राजनीति की दृष्टि से मुम्बई, उत्तरप्रदेश और दिल्ली का अधिक महत्त्व है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, ग्रह, तारे और नक्षत्र - इन पांचों के संयोग से ही ज्योतिषचक्र सम्पूर्ण बनता है, किन्तु फिर भी नक्षत्रज्ञान के बिना ग्रहाचार की घटनाओं को समझना असम्भव है। क्योंकि जैसा

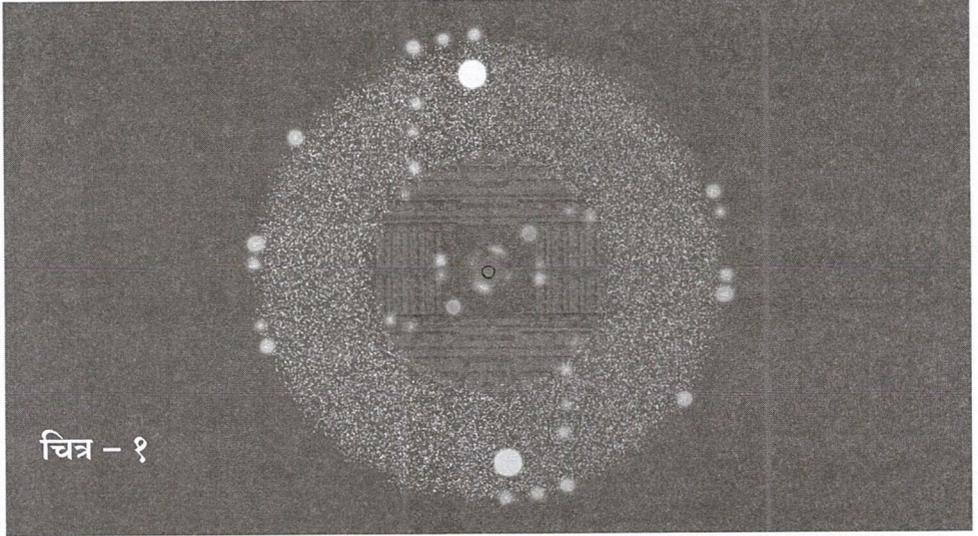
पहले देखा उसके अनुसार जैन शास्त्रों की दृष्टि में ये सब ज्योतिष देवों के विमान हैं। ये भिन्न-भिन्न रत्नों से बने हैं और सबके परस्पर योग से भिन्न-भिन्न प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न होती है जिसकी असर समग्र सृष्टि पर पड़ती है।

अब नक्षत्र का महत्त्व इस परिप्रेक्ष्य से समझते हैं। ढाई द्वीप में स्थित चर ज्योतिष चक्र में इन्द्र के मुख्य स्थान पर चन्द्र-सूर्य हैं, इनके परिवार में ८८ ग्रह, २८ नक्षत्र, ६६९७५ कोड़ाकोड़ी तारे हैं। जम्बूद्वीप के मेरू पर्वत के दोनों ओर ६६-६६ पंक्तियों से होकर ढाई द्वीप में १३२ सूर्यचन्द्र अपने अपने परिवारों के विमानों के साथ सतत प्रदक्षिणावर्त घूम रहे हैं। इसकी विशेष जानकारी मण्डल प्रकरण ग्रन्थ (पदार्थ प्रकाश - भाग २५) में दी गई है। (देखिए चित्र-१, पेज १३)

अब ध्यान से विचार करने पर यह पता चलता है, कि दो चन्द्रों का आज्ञावर्ती परिवार एकत्र होकर पूरा वर्तुल पूर्ण करेगा और एक चन्द्र का आज्ञावर्ती परिवार आधा वर्तुल पूर्ण करेगा।

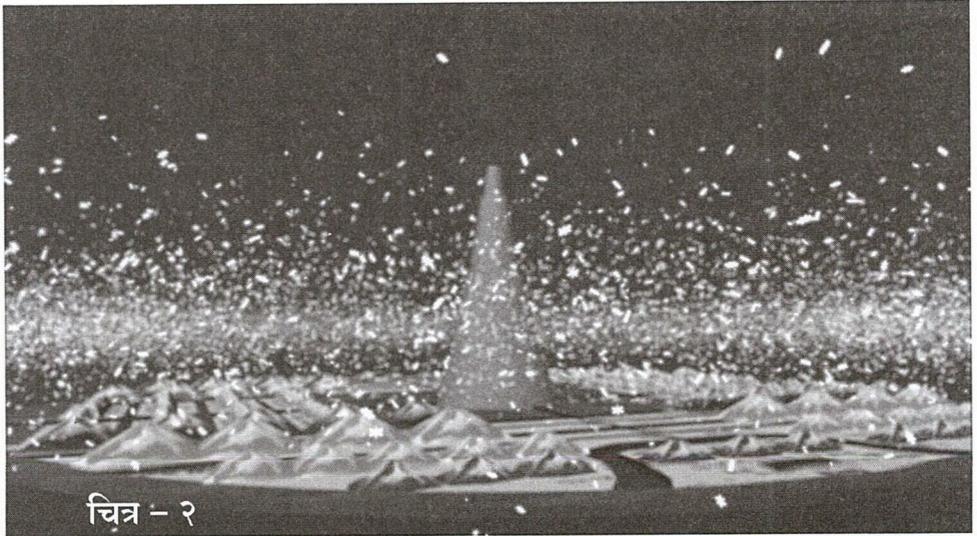
सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र और प्रायः ग्रह भी उत्तर-दक्षिण ५१० योजन के पट्टे में घूमते हैं, और तारे सर्वत्र व्याप्त हैं। उपरान्त तारों की संख्या ६६९७५ कोड़ाकोड़ी होने पर भी उनकी असर सृष्टि पर इतनी नहीं होती होगी, इसीलिए युगलिक क्षेत्रों में काल परिवर्तन की असर नहीं दिखती। इसलिए ज्ञानियों को तारों के भ्रमण से होने वाले योग बताने का कोई प्रयोजन नहीं होता। (देखिए चित्र-२, पेज १३) इसलिए अब सूर्य, चन्द्र, ८८ ग्रह और २८ नक्षत्रों के योग बताए गए हैं और उन्हीं से ज्योतिष शास्त्र की उत्पत्ति होती है। किन्तु यहाँ प्रश्न उठता है, कि (१) सूर्यादि चार में से किसे मुख्य मानकर योग दिखाए गए हैं? (२) भिन्न-भिन्न प्रकार के कितने योग होते हैं?

उत्तर १ : (a) किसे मुख्य मानकर विविध योगों का विचार करना चाहिए - इस प्रश्न का उत्तर जानने से पूर्व इतना अवश्य विचार करना होगा, कि एक चन्द्र या सूर्य का परिवार (देखिए चित्र-३, पेज १४) जो अर्धाकाश में = ५४९०० अवकाशी खण्ड में (शास्त्रों में मेरू के आस-पास किसी भी मण्डल के वर्तुलाकार अवकाश



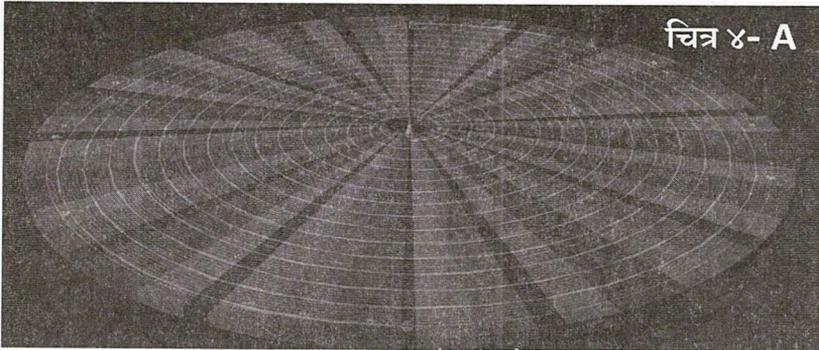
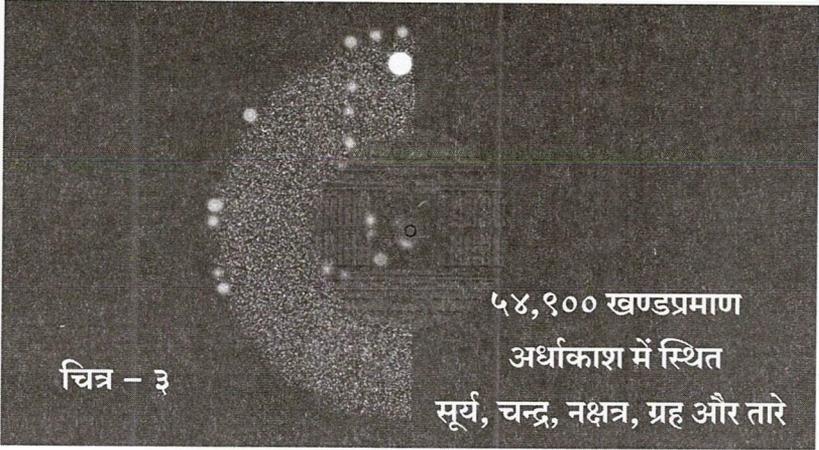
चित्र - १

जम्बूद्वीप में मेरूपर्वत के आसपास प्रदक्षिणावर्त घूम रहे  
२ चन्द्र, २ सूर्य, १७६ ग्रह, ५६ नक्षत्र और १,३३,९५० को.को. तारे

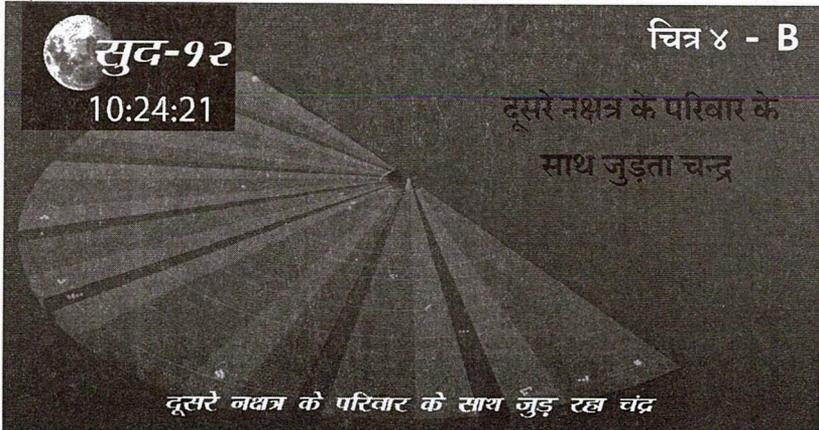


चित्र - २

जम्बूद्वीप में मेरूपर्वत के आसपास घूम रहे १,३३,९५० को.को. तारे



५४,९०० खण्डप्रमाण अर्धाकाश में फैले भिन्न-भिन्न प्रमाण के  
 ↓ (रंग से अलग-अलग) आधिपत्य क्षेत्र वाले २८ नक्षत्र ↑



के या अर्धावकाश के किए गए काल्पनिक विभागों में) स्थित है, उन ५४९०० खण्डों में (कुल १०९८०० खण्डों में) सम्पूर्ण रूप से सूर्य, चन्द्र, ग्रह या नक्षत्रों में से कौन कहाँ स्थित है? तो इसका उत्तर है, कि सूर्य और चन्द्र तो एक-एक हैं, इसलिए निश्चित रूप से एकाद खण्ड में स्थित होंगे, और बारी-बारी से सभी खण्डों में पहुँचते होंगे, किन्तु एक साथ सभी खण्डों में स्थित नहीं रहते। फिर ग्रह भी ८८ होने के बावजूद उनके मण्डल, गति आदि अनियमित होने के कारण सभी अवकाशीय खण्डों में वे होंगे ही, यह बात निश्चित तौर पर नहीं कही जा सकती। अनेक बार एक से अधिक ग्रह एक ही अवकाशीय खण्ड में हो, ऐसा दिखता है, इसलिए यह विकल्प उचित नहीं लगता। दूसरी ओर नक्षत्रों की संख्या मात्र २८ है, न बहुत अधिक, न बहुत अल्प। उपरान्त उनके मण्डल और स्थान शास्त्रोक्त तरीके से बिठाने पर पता चलता है, कि नक्षत्र अमुक आकाश खण्ड में स्थित होने पर भी उनकी सीमा<sup>१</sup> (आधिपत्य) का क्षेत्र बहुत लम्बा है, और इस गणित से यह पता चलता है, कि २८ नक्षत्र ५४९०० अवकाशीय खण्ड में एक साथ फैलकर रहते हैं। ५१० योजन उत्तर-दक्षिण और ५४९०० खण्ड प्रमाण क्षेत्र पूर्व-पश्चिम - इस अवकाश का एक भी भाग ऐसा नहीं है, कि जिसमें एकाद नक्षत्र या नक्षत्र का आधिपत्य क्षेत्र न हो। दो चन्द्रों के परिवार के ५६ नक्षत्रों के दृष्टिकोण से विचार करें तो १०९८०० खण्ड का एक भी भाग ऐसा नहीं है जिसमें एकाद नक्षत्र का आधिपत्य क्षेत्र न हो। **देखिएचित्र-४**

जिस प्रकार कोई चक्रवर्ती पूरे भरतक्षेत्र का राजा होने पर भी अलग-अलग प्रादेशिक राजा ही उस प्रदेश विशेष के राजा के रूप में प्रसिद्ध होते हैं, (और उन प्रादेशिक राजाओं के आधिपत्य क्षेत्र के समूह से ही समग्र भरतक्षेत्र बनता है) उसी प्रकार सूर्य और चन्द्र, इन्द्र होने पर भी अवकाश के उन निश्चित प्रदेशों में उन नक्षत्रों का प्रादेशिक राजा की भांति आधिपत्य होता है। और समग्र नक्षत्रों के

१. अष्टानवतिशताढ्यं लक्षं संपूर्णमंडलेषु स्युः ।

सर्वेष्वंशा एष च विज्ञेयो मंडलच्छेदः ॥ ५७४॥ लोकप्रकाशः सर्ग-२०

२. योगः किम् ? उच्यते, नक्षत्रसीमावर्तिना चंद्रेण सह नक्षत्राणां संबन्धो योगः ॥

इति मंडल प्रकरण-गा.८६ टीकायां

आधिपत्यक्षेत्र का समूह ही ५४,९०० खण्ड प्रमाण अर्धअवकाश है। इसलिए नक्षत्र सर्वव्यापी होने के कारण योग के केन्द्र स्थान पर नक्षत्र होना चाहिए, ऐसा ठोस रूप से पता चलता है।

(b) उपरान्त, नक्षत्रों की संख्या मध्यम होने के कारण हम उनके गणित का अनुमान लगा सकते हैं, इसलिए सर्वज्ञों की अवकाशीय प्ररूपणा के केन्द्र में नक्षत्र ही होने चाहिए, ऐसा लग रहा है।

(c) मेरू के पास घूमते (५४,९००+५४,९०० खण्ड = १,०९,८०० खण्ड प्रमाण) अपना-अपना एक सम्पूर्ण मण्डल पूर्ण करने वाली गति में क्रमशः 'तारे सर्वाधिक शीघ्र हैं, फिर नक्षत्र, ग्रह, सूर्य और चन्द्र क्रमशः धीमी-धीमी गति वाले हैं; या फिर यूँ कहें, कि अपना एक मण्डल पूर्ण करने की गति में सबसे मन्द गति चन्द्र की है, फिर सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और फिर तारे क्रमशः तेज एवं अधिक तेज गति वाले हैं। किन्तु नक्षत्र अन्य अवकाशीय पिण्डों से तेज गति वाले होने के साथ अमुक निश्चित अवकाशीय खण्ड में एक-एक नक्षत्र ही होने के कारण उनके साथ अन्य अवकाशीय पिण्डों के योग समझना और समझाना अत्यन्त सुगम बन जाता है। उपरोक्त सन्दर्भ को ध्यान में लेने से यह निश्चित होता है, कि योगों के केन्द्रस्थान में नक्षत्र ही हैं। अतः नक्षत्रों का ज्ञान और उनकी चाल ही ग्रहगति के गणित और ज्योतिषशास्त्र का मूल है।

उत्तर - २ : योग कितने हैं? कौन-कौन से हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार है :

इन प्रश्नों पर चर्चा करने से पूर्व हम फिर से याद कर लें, कि आकाशीय पिण्डों के योग की विचारणा के केन्द्रस्थान में नक्षत्र हैं, क्योंकि वे Speedy हैं और सर्वत्र व्याप्त हैं। इसलिए शीघ्रगति से आगे बढ़ने के द्वारा ये दूसरे सूर्य, चन्द्र और ८८ ग्रहों से क्रमशः मिलते रहेंगे, या चन्द्रादि की गति धीमी होने के कारण क्रमशः उनके साथ रहने वाले नक्षत्रों के पीछे चलते हुए अन्य २७ नक्षत्रों से क्रमशः मिलेंगे। इस प्रकार

१. गतेः शीघ्रविभागस्त्वेवम्-सर्वमंदगतिश्चंद्रः, तस्माच्छीघ्रो रविः, तस्माद्ग्रहाः, तेभ्यो नक्षत्राणि, ततस्ताराः। ग्रहमध्ये तु बुधाच्छुक्रः शुक्रान्मंगलो, मंगलाद् बृहस्पतिर्बृहस्पतेः शनिः शीघ्र इति संग्रहणीवृत्तिगतम् ॥

अवकाश का सूक्ष्मता से निरीक्षण करने पर निम्नांकित भिन्न-भिन्न योग बन सकते हैं:

Note : N = नक्षत्र, S = सूर्य, C = चन्द्र, G = ग्रह

क्रम	योग का प्रकार	भेद	विशेष (उपयोग)
१.	NN	<input checked="" type="checkbox"/> सम्भव नहीं	भिन्न-भिन्न खण्डों में होने के कारण
२.	NS	<input checked="" type="checkbox"/> २८	सूर्य का सायन वर्ष तय होता है
३.	NC	<input checked="" type="checkbox"/> २८	नक्षत्र माह बनता है
४.	NG	<input checked="" type="checkbox"/> २८ x ८८	ज्योतिषशास्त्र में
५.	NGC	<input checked="" type="checkbox"/> अगणित प्रकार	ज्योतिषशास्त्र में
६.	NGS	<input checked="" type="checkbox"/> अगणित प्रकार	ज्योतिषशास्त्र में
७.	NGG	<input checked="" type="checkbox"/> अगणित प्रकार	ज्योतिषशास्त्र में
८.	NSC	<input checked="" type="checkbox"/> २८ प्रकार से	ज्योतिषशास्त्र में + अमावस का ज्ञान, तिथि का ज्ञान
९.	NSCG	<input checked="" type="checkbox"/> अनेक	ज्योतिषशास्त्र में

इसके उपरान्त उन प्रत्येक नक्षत्रों से अनन्तर स्थान में या परंपर स्थान में (थोड़ा दूर) स्थित सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि को जानने से भी ज्योतिषशास्त्रों के रहस्य प्राप्त होते हैं। अतः इतना तय है, कि नक्षत्र से सम्बन्धित ज्ञान में और नक्षत्र-आधिपत्य के विषय के ज्ञान में नक्षत्रों की संख्या, गति, रचनादि विषय के मामले में यदि सहज भी भूल रह गया, तो ग्रहगति गणित या ज्योतिषशास्त्र और मुहूर्त के विषय के फलादेश के अनुमान भूल से भरे होंगे। इसीलिए सर्वज्ञता के प्रकाश में चर ज्योतिष में नक्षत्र से सम्बन्धित जो ज्ञान मिलता है, उसके रहस्य तक पहुँचेंगे तो ही ज्योतिष के सत्य तत्त्व तक पहुँच पाएँगे।

### जैन आगमों में प्राप्त नक्षत्र-सम्बन्धित हकीकतें

जिनमत में नक्षत्रों का अपना विशेष महत्त्व है। सूर्य और चन्द्र की तुलना में ऋद्धि में अल्प होने पर भी ज्योतिष शास्त्रों में नक्षत्रों का विशेष महत्त्व है। उपरान्त जिस प्रकार बड़े श्रेष्ठियों का अपना एक मूल घर होता ही है, साथ ही अलग-अलग फार्म-हाउस भी होते हैं, वैसे ही नक्षत्रों के अधिपति देवों के भी अपने २-३-४ से संख्याता विमान - तारे (ज्योतिष चक्र के पांचवें भेद के रूप में वर्णित तारों से भिन्न) होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र में भिन्न-भिन्न संख्या में तारे होते हैं, उनके समूह से बनने वाले वे नक्षत्र एक निश्चित आकार के होते हैं। भिन्न-भिन्न नक्षत्रों के समूह को राशि कहते हैं और राशि भी विशिष्ट आकार की होती है। उस आकार के अनुरूप उनका नाम होता है, जो व्यवहार में अत्यन्त प्रचलित है। इस प्रकार २८ नक्षत्र, उनके समूह से बनने वाली १२ राशियाँ और उनके द्वारा प्रत्येक राशि के प्रमाण वाले आकाश के (सूर्य-चन्द्रादि के चार क्षेत्र-५१० योजन) १२ भागों की कल्पना की गई है। इनकी आकृति पेज न. २५ पर दी गई है।

१-१ भाग को सूर्य पूर्ण करे, या १-१ राशि के साथ सूर्य का संयोग पूर्ण हो तब १-१ सूर्यमास पूर्ण होता है। ६ महीनों में ६ राशि पूर्ण होने पर सूर्य का दक्षिणायन पूर्ण होता है, फिर आने वाले ६ महीनों में बाकी की ६ राशियाँ पूर्ण होने पर सूर्य का उत्तरायण पूर्ण होता है। इस प्रकार सूर्यसंवत्सर पूर्ण होता है। उपरान्त नक्षत्र और चन्द्र का योग भी सतत होता है। अमुक निश्चित नक्षत्रों के साथ चन्द्र के योग से कार्तिक, मार्गशीर्ष आदि महीनों के नाम एवं वृद्धिमास की (वर्तमान लौकिक शास्त्रों के अनुसार क्षयमास की) व्यवस्था भी होती है। इस प्रकार नक्षत्रों की जानकारी के बिना ज्योतिषचक्र का ज्ञान अधूरा है, अतः नक्षत्रों की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है, जो नीचे दी गई बातों द्वारा स्पष्ट की गई है:

- (a) नक्षत्रों के नाम, स्थान, आकार, चारक्षेत्र आदि की जानकारी
- (b) राशि की रचना,
- (c) चन्द्र के साथ नक्षत्रों का योग, और
- (d) सूर्य के साथ नक्षत्र-राशि का योग।

(a) नक्षत्रों के नाम, स्थान, आकार, चार क्षेत्र आदि की जानकारी

नक्षरति इति नक्षत्र - जो अपने स्थान से कभी च्युत नहीं होता उसे नक्षत्र कहते हैं। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि मेरू के चारों ओर वलयकाकार में घूमते हैं, अर्थात् उनके उत्तर-दक्षिण चार (गति) सम्भव हैं, किन्तु नक्षत्र वर्तुल आकार में, अर्थात् एक नियत वर्तुल मार्ग पर रहकर मेरू के आस-पास प्रदक्षिणाकार में घूमते हैं, अतः इनके लिए उत्तर-दक्षिण चार (गति) सम्भव नहीं है। इन सबका कुल चारक्षेत्र भी सूर्यादि के अनुसार जम्बूद्वीप की जगती (किले) से १८० योजन अन्दर से लेकर लवण समुद्र में ३३० योजन तक, अर्थात् ५१० योजन का है। इसके अन्दर भिन्न-भिन्न नक्षत्र अपने-अपने नियत स्थान पर रहकर ही मेरूपर्वत के चारों ओर सतत घूमते हैं। एक चन्द्र के १५ मण्डल हैं, एक सूर्य के १८३ मण्डल हैं और उनके परिवारभूत २८ नक्षत्र अपने-अपने निजी १-१ मण्डल में, और कुल ८ मण्डल में रहकर ही गति करते हैं। चन्द्र के कौनसे मण्डल में ये स्थित हैं, उससे इनका चन्द्र के साथ योग तय होता है। नक्षत्र के दो मण्डल जम्बूद्वीप के आकाश में है, और बाकी छः मण्डल लवण समुद्र के आकाश में है।

नक्षत्र की मुहूर्त गति -

प्रथम मण्डल में नक्षत्र की मुहूर्त-गति

१ युग के १८३० अहोरात्रि में नक्षत्र के १८३५ अर्धमण्डल होते हैं।

∴ १८३५ अर्धमण्डल में १८३० अहोरात्रि गुजरे (बीते/व्यतीत हो), तो

२ अर्धमण्डल में कितने अहोरात्रि होंगे :

$$\frac{१८३० \times २}{१८३५} = \frac{३६६०}{१८३५} = ५९ \frac{१५३५}{१८३५} \text{ मुहूर्त}$$

५९  $\frac{१५३५}{१८३५}$  मुहूर्त में नक्षत्र ३१५०८९ यो. का अन्तर तय (पार) करे, तो १ मुहूर्त में :

$$\frac{३१५०८९}{१०९८००} \div ५९ \frac{१५३५}{१८३५} \text{ अन्तर पार होगा}$$

$$= \frac{३१५०८९ \times १८३५}{१०९८००} \text{ यो.}$$

$$= ५२६५ \frac{१८९६३}{२११६०} \text{ यो. अन्तर १ मुहूर्त में पार होगा}$$

१ : सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र की भिन्न-भिन्न मण्डलों की मुहूर्त-गति के ज्ञान हेतु मण्डल प्रकरण गाथा न. २० से २७ पढ़िए, उपरान्त क्षेत्रलोक प्रकाश भी पढ़िए (सर्ग-२०)

सर्वबाह्य मण्डल में नक्षत्र की मुहूर्त गति =  $\frac{३१५०८९}{१८३५} \div ५९$   $\frac{१५३५}{१८३५}$

$$= \frac{३१५०८९ \times १८३५}{१०९८००} = \frac{३१८३१५ \times ३६७}{२१९६०}$$

$$= ५३१९ \frac{१६३६५}{२१९६०} \text{ यो.}$$

शेष नक्षत्र मण्डलों की मुहूर्तगति =  $\frac{५९}{१८३५}$   $\frac{१५३५}{१८३५}$  यो.

उस मण्डल की परिधि

ग्रहों और तारों की मुहूर्तगति वर्तमान में उपलब्ध शास्त्रों में प्राप्त नहीं है।

न. नक्षत्र का नाम	नक्षत्र मण्डल की सं.	चन्द्र मण्डल की सं.	तारों की सं.	आकार	रचना
१) अभिजित	१	१	३	गोशीर्षावली	••
२) श्रवण	१	१	३	कासार	••
३) धनिष्ठा	१	१	५	पक्षिपंजर	••••
४) शतभिषा	१	१	१००	पुष्पमाला	••••••••••
५) पूर्व भाद्रपदा	१	१	२	अर्द्धवापी	••
६) उत्तर भाद्रपदा	१	१	२	अर्द्धवापी	••
७) रेवती	१	१	३२	नौकासंस्थान	••••••••••
८) अश्विनी	१	१	३	अश्वस्कन्ध	•••
९) भरणी	१	१	३	भगसंस्थान	••
१०) कृत्तिका	३	६	६	क्षुरधारा	•••

११) रोहिणी	४	७	५	शकटोद्धि	•••
१२) मृगशीर्ष	८	१५	३	मृगशीर	••
१३) आर्द्रा	८	१५	९	रुधिरबिन्दु	•
१४) पुनर्वसु	२	३	५	तुला	•••
१५) पुष्य	८	१५	३	वर्द्धमानक	••
१६) आश्लेषा	८	१५	५	पताका	•••
१७) मघा	२	३	७	प्राकार	••••
१८) पूर्वा फाल्गुनी	१	१	२	अर्द्धपल्यंक	••
१९) उत्तरा फाल्गुनी	१	१	२	अर्द्धपल्यंक	••
२०) हस्त	८	१५	५	हस्ततल	•••
२१) चित्रा	४	७	१	मुखमंडन सुवर्ण फूल	•
२२) स्वाति	१	१	१	कीलक	•
२३) विशाखा	५	८	५	पशुदामन	•••
२४) अनुराधा	६	१०	४	एकावली	•••
२५) ज्येष्ठा	७	११	३	गजदंत	••
२६) मूल	८	१५	११	वृश्चिक पुच्छि	••••
२७) पूर्वाषाढा	८	१५	४	गजविक्रम	•••
२८) उत्तराषाढा	८	१५	४	सिंहनीषदन	••

(b) राशियों की रचना: राशि = समूह, भिन्न-भिन्न नक्षत्रों का समूह ही राशि है।

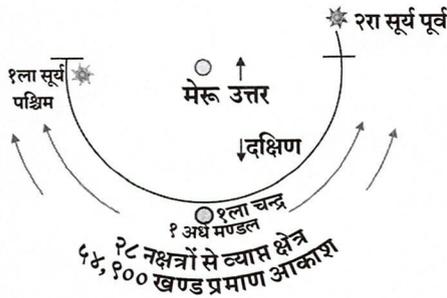
वास्तव में आकाश का परिकल्पित एक निश्चित विभाग, और उस निश्चित विभाग में स्थित नक्षत्रों के तारों से रचित तथाप्रकार का विशिष्ट आकार राशि है। एक चन्द्र तथा एक सूर्य के परिवार में रहे २८ नक्षत्र अपने-अपने सूर्य-चन्द्र के अर्धमण्डल में पूर्व-पश्चिम सम्पूर्ण रूप से व्याप्त होकर स्थित हैं। और दूसरी ओर अन्य सूर्य-चन्द्र के २८ नक्षत्र उनके अर्धमण्डल को व्याप्त होकर स्थित हैं।

किसी भी नक्षत्र के समीप स्थित प्रदेश उस नक्षत्र का विस्तार माना जाता है। जिस प्रकार कोई भी राजा रहता अपने महल में है, किन्तु उसका आधिपत्य पूरे राज्य में और कभी-कभी राज्य के बाहर स्थित जंगलों में भी होता है, उसी प्रकार उन नक्षत्रों के विमान (उन प्रत्येक तारों के विमान) एक गाउ के हैं, किन्तु उनका आधिपत्य एक निश्चित क्षेत्र (बहुत बड़े) तक फैला हुआ माना जाता है। इस प्रकार प्रत्येक नक्षत्र के आधिपत्य से युक्त विस्तार की कुल राशि = एक सूर्य द्वारा अहोरात्र में (३० मुहूर्त या २४ घण्टे में) पार किया जाने वाला अन्तर = सूर्य या चन्द्र का एक अर्धमण्डल = दो सूर्य या दो चन्द्र के बीच का अन्तर। उपरोक्त अन्तर से युक्त आकाश में २८ नक्षत्रों के परिवार सम्पूर्ण रूप से अपने-अपने निश्चित स्थान और क्षेत्र से युक्त पथ पर पूर्व-पश्चिम सतत परिभ्रमण करते हैं।

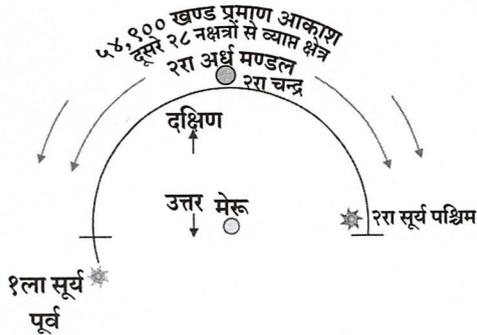
आकृति: २४

सुदी पूर्णिमा के सूर्य के १ अर्धमण्डल के  
विस्तार में स्थित २८ नक्षत्र

A.



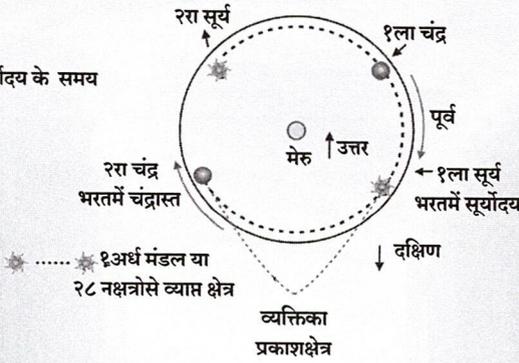
B.



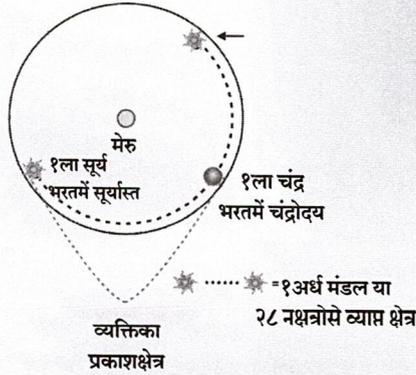
आकृति: २५

हमारी दृष्टि की मर्यादा के कारण दिखने वाली  
आकृति सुदी-१५ के अनुसार

१) सूर्योदय के समय



२) सूर्यास्त के समय

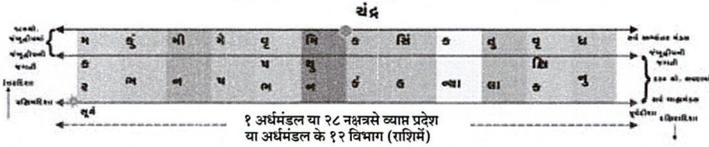


अब नक्षत्रों के विस्तार का कुल समूह, या सूर्य द्वारा अहोरात्रि में व्यतीत होते विस्तार को एक सरीखे १२ भाग में विभाजित करने से बनने वाली रचना राशि कहलाती है।

नोट : समझने में सरलता हो, इस हेतु अर्धवर्तुल की जगह सीधी रेखा द्वारा राशियों का आयोजन बताया गया है।

आकृति: २६

मकरसंक्रान्ति के दिन सूर्य-चन्द्र और राशियों का स्थान



इस प्रकार २८ नक्षत्रों को १२ से भाग करने से  $२\frac{१}{३}$  आएगा।

इस प्रकार (१) कभी दो नक्षत्र पूरे + तीसरे नक्षत्र का कुछ भाग, या

(२) कभी १ नक्षत्र पूरा + २ नक्षत्रों का कुछ भाग = भिन्न-भिन्न राशि बनेगी, तो कभी २ या ४ नक्षत्रों के संयोग से भी राशि बनती है।

नक्षत्रों का आकार छोटा-बड़ा हो सकता है, सूर्य-चन्द्र के साथ उनका संयोग लम्बा-छोटा हो सकता है, किन्तु प्रत्येक राशि के माप में कोई फर्क नहीं पड़ता, इसलिए राशि के साथ सूर्य-चन्द्र का संयोग समान समय का होता है।

सूर्य लगभग  $३०\frac{१}{२}$  दिन एक राशि में रहता है।  $\therefore ३०\frac{१}{२} \times १२$  राशि = ३६६ दिन में सभी राशियों का भोग (भ्रमण) पूर्ण करता है = २ अयन पूर्ण करता है, तथा चन्द्र  $२७\frac{२१}{६७}$  दिन में दो अयन = १२ राशियों को भोगता है।

$\therefore २७\frac{२१}{६७} \div १२$  राशि = २ दिन ६ घण्टे ३७ मिनट में चन्द्र १ राशि के साथ भोग (भ्रमण) करता है।

सूर्य-चन्द्र कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और धन इन ६ राशियों में उत्तर से

दक्षिण की ओर सरकते जाते हैं, तथा मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृषभ और मिथुन इन ६ राशियों में दक्षिण से उत्तर की ओर सरकते हैं।

### (C) चन्द्र के साथ नक्षत्रों के योग:

इस पदार्थ को समझने से पहले एक काल्पनिक उदाहरण देखते हैं। १ लाख कि.मी. व्यास वाली एक वर्तुल जगह है। इतनी विशाल जगह में आवश्यक माल-सामान पहुँचाने हेतु उस वर्तुल की सीमा के १८० कि.मी. अन्दर से लेकर बॉर्डर के बाहर ३३० कि.मी. तक कुल ५१० कि.मी. के वलयाकार पट्टे पर अलग-अलग ऊँचाई के ३ ओवरब्रिज बनाए गए हैं। इनकी विशेष जानकारी इस प्रकार है:

१. **प्रथम ब्रिज** ५१० कि.मी. चौड़ाई वाला ३ लाख १६ हजार कि.मी. परिधि वाला, अर्थात् १ लाख कि.मी. के वर्तुल को सम्पूर्ण रूप से कवर करते हुए स्थित है। उसका रास्ता १८३ लेन में विभाजित है और वह परस्पर मिला हुआ होने के कारण परस्पर आवागमन का व्यवहार है।
२. **दूसरा ब्रिज** प्रथम ब्रिज के ऊपर उसी प्रकार बनाया गया है। उसका रास्ता १५ लेन में विभाजित है। परस्पर जुड़ा हुआ होने के कारण परस्पर आवागमन का व्यवहार है।
३. **तीसरा ब्रिज** दूसरे ब्रिज के ऊपर बनाया हुआ है, किन्तु इसमें भेद इतना ही है, कि इस तीसरे ब्रिज के आठ भेद हैं। ये सभी १ लेन वाले ही मार्ग हैं, जो मात्र समान लेवल पर ही उस ब्रिज पर स्थित हैं। बाकी आठों का परस्पर कोई योग नहीं होता, इसलिए उनमें परस्पर आवागमन का व्यवहार नहीं है।

- प्रथम ब्रिज पर सदैव एक ही ट्रक क्रमशः १८३ लेन में ६० कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से सतत चलता है।
- दूसरे ब्रिज पर सदैव एक ही ट्रक क्रमशः १५ लेन में ५० कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से चलता है।
- तीसरे ब्रिज पर अलग-अलग आठ लेन में अलग-अलग स्थानों पर रही छोटी-छोटी २८ गाड़ियाँ ७० कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से चलती हैं। ये गाड़ियाँ भी अलग-अलग वर्तुल पथ पर उत्तर-दक्षिण रेखा में एक पंक्ति में नहीं, किन्तु पूर्व-पश्चिम विविध वलयपथ पर किन्तु एक-दूसरे से आगे-पीछे अवस्थित होकर परिक्रमण करती हैं, इसलिए जमीन पर रहे मनुष्य को दिखने वाले दृश्य में :

१. मध्यमगति वाली प्रथम क्रमांक वाले ब्रिज के ट्रक की तुलना में दूसरे ब्रिज की ट्रक वर्तुलाकार गति में एकदम धीमी गति वाली दिखेगी, किन्तु
२. परिधि से केन्द्र की ओर या केन्द्र से परिधि की ओर,  
दूसरे लेन वाली ट्रक अतिशीघ्र गति वाली  
पहले लेन वाली ट्रक मध्यम गति वाली, और  
तीसरे लेन वाली गाड़ी शून्य गति वाली दिखेगी।
३. मात्र दूसरे और तीसरे ब्रिज को देखने से :

२८ गाड़ियों की गति शीघ्र होने के कारण वे क्रमशः ट्रक के ऊपर की तरफ दिखेगी। अर्थात् दूसरे ब्रिज पर ट्रक जिस स्थान पर है, उसी स्थान पर तीसरे ब्रिज पर १ नम्बर वाली गाड़ी है। उसकी गति अधिक शीघ्र होने के कारण वह कम समय में आगे बढ़ेगी। इसलिए तीसरे ब्रिज पर २ नम्बर की गाड़ी उस स्थान पर आकर ट्रक के ऊपर दिखेगी। इसी प्रकार क्रमशः ३ से २८ नम्बर की गाड़ियाँ भी ट्रक के ऊपर थोड़े समय के लिए दिखेगी। अर्थात् गाड़ियों की गति ट्रक की गति से अधिक तेज होने के कारण दूसरे ब्रिज के ट्रक के ऊपर से ऊपर वाले तीसरे ब्रिज की सभी २८ गाड़ियाँ क्रमशः एक के बाद एक निकलेंगी।

दूसरे ब्रिज की ट्रक उस समय १५ में से किसी भी लेन में हो सकती है, और तीसरे ब्रिज की वह गाड़ी ८ में से किसी भी एक लेन में हो सकती है।

यानी, ट्रक ५१० यो. चौड़ाई में या १५ लेन में से किसी भी लेन में हो और उसके ऊपर रही गाड़ी ८ में से किसी भी ट्रैक में हो तो भी एक ही गाड़ी उस ट्रक के ऊपर और समांतर साथ है ऐसा दिखेगा। बाकी की गाड़ियाँ ऊपर होने पर भी समांतर साथ न दिखते हुए आगे-पीछे ही दिखेगी।

कदाचित् ट्रक जिस लेन में है उसके ठीक ऊपर स्थित किसी ट्रैक में रही गाड़ी भी आगे-पीछे हो, यह सम्भव है और अन्य ट्रैक में रही गाड़ी ट्रक के ठीक ऊपर या समांतर साथ है, ऐसा लगेगा। इस प्रकार दो ट्रक और गाड़ी के बीच तीन प्रकार का सम्बन्ध होगा। या फिर समान त्रिज्या रेखा पर ट्रक और गाड़ियों का परस्पर सम्बन्ध तीन प्रकार से होगा।

- टूक और गाड़ी एक ही लेवल पर भिन्न-भिन्न ऊँचाई पर दिखे - प्रमर्द योग, या भिन्न-भिन्न ऊँचाई के समतलों में समान्तर लम्बक्षितिज वलयपथ पर गाड़ी और टूक एक-दूसरे के ऊपर-नीचे साथ-साथ चलते हुए दिखे, यह प्रमर्द योग हुआ।
- टूक गाड़ी से दूर स्थान पर भिन्न-भिन्न ऊँचाई पर दिखे - उत्तराभिमुख योग, या भिन्न ऊँचाई के समतलों में समान त्रिज्यारेखा पर टूक गाड़ी से परिधि की दिशा में दिखे, यह उत्तराभिमुख योग हुआ।
- टूक गाड़ी से समीप स्थान पर भिन्न-भिन्न ऊँचाई पर दिखे - दक्षिणाभिमुख योग, या भिन्न ऊँचाई के समतल में समान त्रिज्यारेखा पर टूक गाड़ी से केन्द्र की दिशा में दिखे, यह दक्षिणाभिमुख योग हुआ।

यही वस्तु पहले ब्रिज और तीसरे ब्रिज सभी जगह पर भी जान लें।

बस, इसी दृष्टान्त को अब ज्योतिषचक्र में लागू करते हैं।

**पहले ब्रिज की टूक :** समभूतला से ८०० यो. ऊँचाई पर १८३ मण्डलों में ५१० यो. क्षेत्र में मेरूपर्वत के पास अयनमार्ग में फिरते हुए **सूर्य का विमान**

**दूसरे ब्रिज की टूक :** ८८० यो. ऊँचाई पर अलग-अलग १५ मण्डलों में ५१० यो. विस्तार में मेरूपर्वत के पास अयनमार्ग में फिरते हुए **चन्द्र का विमान**

**तीसरे ब्रिज की गाड़ियाँ :** ८८४ यो. ऊँचाई पर अलग-अलग ८ वर्तुलपथ पर ५१० यो. क्षेत्र में मेरूपर्वत की प्रदक्षिणा करते हुए २८ नक्षत्रों के विमान।

**प्रश्न : चन्द्र शीघ्रगति क्यों है ?**

उत्तर : चन्द्र, सूर्य और नक्षत्रों की वर्तुलाकार गति क्रमशः अधिक शीघ्र है, नक्षत्र निश्चित वर्तुलपथ पर घूमते हैं, इसलिए (Spiral) गति सम्भव नहीं है। चन्द्र २७  $\frac{२१}{६७}$  दिन में ५१० योजन में अयनमार्ग पर एक चक्कर पूर्ण करता है, इसलिए चन्द्र केन्द्र या परिधि की दिशा में शीघ्रमार्गी लगता है।

**अब वर्तुलपथ और अयनमार्ग की (उत्तरायण-दक्षिणायन की) गतियों की भिन्नता के कारण सूर्य और नक्षत्रों की और चन्द्र और नक्षत्रों के योगों की रचना होगी।**

नक्षत्रों की गति शीघ्र होने के कारण चन्द्र या सूर्य के साथ कोई निश्चित समय पर जो नक्षत्र होगा, वह थोड़े समय में चन्द्र या सूर्य से आगे निकल जाएगा और पीछे

वाला नक्षत्र चन्द्र-सूर्य से जुड़ेगा। प्रस्तुत में नक्षत्र का विमान १ गाउ का होने पर भी उसका आधिपत्य क्षेत्र तो पूर्व-पश्चिम हजारों योजन प्रमाण है, इसलिए उस क्षेत्र के अन्दर चन्द्र या सूर्य आते हैं, तो उस नक्षत्र के साथ उनका योग हुआ जानें।

पहले देखा उसके अनुसार प्रत्येक नक्षत्र का आधिपत्य क्षेत्र निश्चित है।

१ सूर्य एक मुहूर्त में १८३० अंश गति करता है

१ चन्द्र एक मुहूर्त में १७६८ अंश गति करता है

१ नक्षत्र एक मुहूर्त में १८३५ अंश गति करता है

उपरान्त, सभी नक्षत्रों के आधिपत्य क्षेत्र को जोड़ा जाए तो ५४,९०० अंश आता है, और यह माप सूर्य द्वारा अहोरात्रि में व्यतीत होने वाला क्षेत्र है। एक मुहूर्त में १८३० अंश हुआ, इसलिए ३० मुहूर्त में ५४९०० अंश का ताला मिल जाता है।

अब प्रत्येक मुहूर्त में नक्षत्र १८३५ अंश गति करता है। प्रत्येक मुहूर्त में चन्द्र १७६८ अंश गति करता है। नक्षत्र की तुलना में चन्द्र की गति प्रति मुहूर्त ६७ अंश कम है, इसलिए कुल २७ दिन  $\frac{३१}{६७}$  समय में = ५४९०० अंश चन्द्र पीछे रह जाता है

और दूसरे २८ नक्षत्रों के साथ योग करता है, जो इस प्रकार है:

१ मुहूर्त में ६७ अंश पीछे रहता है,

∴ ३० मुहूर्त में  $६७ \times ३० = २०१०$  अंश पीछे रहता है,

इसलिए  $२७ \frac{३१}{६७}$  दिन  $\times २०१० = ५४९००$  अंश आता है, यह माप नक्षत्र के क्षेत्र की लम्बाई का, या अहोरात्रि में सूर्य द्वारा काटे गए अन्तर का है।

नक्षत्र एक अहोरात्रि में जितनी गति करता है उसके ६७ भाग करें। अब चन्द्र और कोड़ी भी नक्षत्र इन ६७ भाग में से कितने भाग तक साथ गति करते हैं, यह तय करें।

१) अभिजित नक्षत्र  $\frac{३१}{६७}$  समय = ९ मुहूर्त  $\frac{२७}{६७}$  अंश के साथ गति करते हुए आगे बढ़ेगा।

२) बाकी के अमुक ६ नक्षत्र अर्धक्षेत्री हैं, इसलिए  $\frac{३३}{६७} \frac{१}{२}$  काल चन्द्र के साथ = १५ मुहूर्त साथ रहेंगे।

३) बाकी के अमुक ६ नक्षत्र सार्धक्षेत्री हैं, इसलिए  $\frac{१००}{६७} \frac{१}{२}$  काल चन्द्र के साथ = ४५ मुहूर्त साथ रहेंगे।

४) बाकी के १५ नक्षत्र समक्षेत्री हैं, इसलिए  $\frac{६७}{६७}$  काल चन्द्र के साथ = ३० मुहूर्त साथ रहेंगे।

म ण्ड ल न.	नक्षत्र का नाम	वर्तमान मान्यतानुसार राशियों की रचना	नक्षत्रों के प्रकार	चन्द्र के साथ भोग- भ्रमण का काल		सूर्य के साथ भोग- भ्रमण का काल	
				मुहूर्त में	अंश में	अंश में	दिवस में
१	अभिजित	मकर	-	१मु + $\frac{२७}{६७}$	$\frac{२१}{६७}$	$\frac{२१}{५}$	४दि, ६मुहूर्त
१	श्रवण		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२मुहूर्त
१	धनिष्ठा		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२मुहूर्त
१	शतभिषा	कुम्भ	अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त	$\frac{३३}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{३३}{५} \frac{१}{१०}$	६दि, २१ मुहूर्त
१	पू. भाद्रपदा		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
१	उ. भाद्रपदा	मीन	सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त	$\frac{१००}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{१००}{५} \frac{१}{१०}$	२०दि, ३ मुहूर्त
१	रेवती		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
१	अश्विनी	मेष	समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
१	भरणी		अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त	$\frac{३३}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{३३}{५} \frac{१}{१०}$	६दि, २१ मुहूर्त
३	कृत्तिका		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
४	रोहिणी	वृषभ	सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त	$\frac{१००}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{१००}{५} \frac{१}{१०}$	२०दि, ३ मुहूर्त
८	मृगशीर्ष		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
८	आर्द्रा	मिथुन	अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त	$\frac{३३}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{३३}{५} \frac{१}{१०}$	६दि, २१ मुहूर्त
२	पुनर्वसु		सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त	$\frac{१००}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{१००}{५} \frac{१}{१०}$	२०दि, ३ मुहूर्त

८	पुष्य	कर्क	समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
८	आश्लेषा		अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त	$\frac{३३}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{३३}{५} \frac{१}{१०}$	६दि, २१ मुहूर्त
२	मघा	सिंह	समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
१	पू. फाल्गुनी		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
१	उ. फाल्गुनी		सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त	—	$\frac{१००}{५} \frac{१}{१०}$	२०दि, ३ मुहूर्त
८	हस्त		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
४	चित्रा	कन्या	समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
१	स्वाति		अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त	$\frac{३३}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{३३}{५} \frac{१}{१०}$	६दि, २१ मुहूर्त
५	विशाखा	तुला	सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त	$\frac{१००}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{१००}{५} \frac{१}{१०}$	२०दि, ३ मुहूर्त
६	अनुराधा		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
७	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त	$\frac{३३}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{३३}{५} \frac{१}{१०}$	६दि, २१ मुहूर्त
८	मूल		समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
८	पूर्वाषाढा	धन	समक्षेत्री	३० मुहूर्त	$\frac{६७}{६७} = १$	$\frac{६७}{५}$	१३दि, १२ मुहूर्त
८	उत्तराषाढा		सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त	$\frac{१००}{६७} = \frac{१}{२}$	$\frac{१००}{५} \frac{१}{१०}$	२०दि, ३ मुहूर्त
(अन्य चन्द्र के परिवार की)				$\frac{८१९}{६७}$ मुहूर्त	$\frac{२१}{६७}$		३६६ दिवस

प्रश्न : सभी नक्षत्रों के विमान १ गाउ के हैं, भिन्न-भिन्न मण्डल में होने पर

भी प्रत्येक नक्षत्र ५९  $\frac{३०७}{३६७}$  मुहूर्त में अपना-अपना मण्डल पूर्ण करते हैं, अर्थात् उनकी कोणीय गति भी समान है। इस प्रकार समान कोणीय गति, समान आकार के विमानों वाले नक्षत्रों का चन्द्र के साथ होने वाले योगकाल में भेद क्यों है? इनमें समक्षेत्री, सार्धक्षेत्री और अर्धक्षेत्री ऐसे भेद क्यों हैं? सभी एक ही समान काल का योग क्यों नहीं करते?

उत्तर : यह भेद उन नक्षत्रों के आधिपत्य क्षेत्र की भिन्नता के कारण होता है। प्रत्येक की समान गति, और विमानों का आकार भी समान होने पर भी आधिपत्य क्षेत्र भिन्न होने से (छोटा-बड़ा) होने से चन्द्र के साथ होने वाले योग का काल भिन्न-भिन्न होता है, इसलिए समक्षेत्री आदि भेद होते हैं।

सभी नक्षत्रों का आधिपत्य क्षेत्र दो भेद वाला है:

१) उत्तर-दक्षिण : ५१० यो. या उससे साधिक

२) पूर्व-पश्चिम : अनिश्चित (हजारों योजन प्रमाण)

● उत्तर-दक्षिण के ५१० यो. के आधिपत्य क्षेत्र के कारण चन्द्र के साथ नक्षत्र का उत्तराभिमुख, दक्षिणाभिमुख और प्रमर्द ऐसे तीन प्रकार से योग होता है।

● पूर्व-पश्चिम आधिपत्य क्षेत्र, नक्षत्र की लम्बाई चौड़ाई पर भी आधार रखता है। अर्थात् जो नक्षत्र उत्तर-दक्षिण अधिक फैला हुआ होने के बावजूद पूर्व-पश्चिम कम फैला हुआ हो, उसका चन्द्र के साथ भोग काल अल्प होता है।

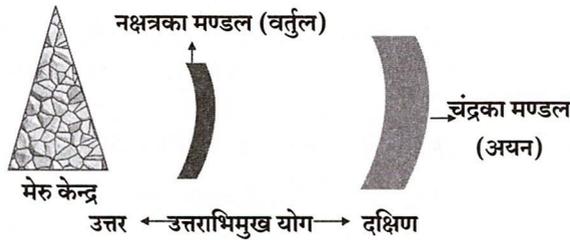
● आगे-पीछे के नक्षत्रों की सीमा निकट हो तो उसका आधिपत्य क्षेत्र ज्यादा कम होगा। जैसे, रेवती नक्षत्र जो ३२ तारों के परिवार वाला है, यह उत्तर-दक्षिण अधिक फैला होने पर भी, पूर्व-पश्चिम आधिपत्य का विस्तार अल्प होने के कारण इसका चन्द्र के साथ भोग-भ्रमण का काल ३० मुहूर्त है, जबकि उत्तर भाद्रपदा में २ तारे होने पर भी पूर्व भाद्रपदा से जरा सा अधिक अन्तर होने के कारण चन्द्र के साथ योगकाल ४५ मुहूर्त का है। या फिर, सभी नक्षत्र पूर्व से पश्चिम तक परस्पर भिन्न-भिन्न अन्तर रखते हुए अवस्थित हैं और उत्तर-दक्षिण में ५१० यो. तक आधिपत्य रखते हैं। इसलिए वहाँ से गुजरते चन्द्र के साथ उनका योग होता है।

पूर्वविदित ३ योग अब समझ आते हैं।

आकृति : २७

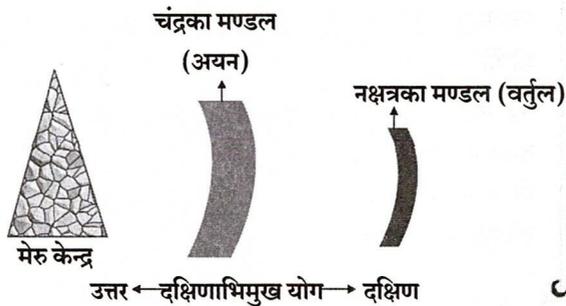
चन्द्र और नक्षत्रों के ३ प्रकार के योग

१) उत्तराभिमुख योग



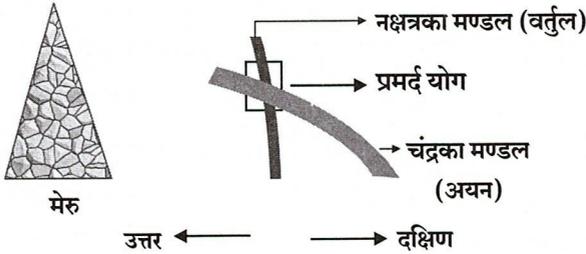
१) उत्तराभिमुख योग : नक्षत्र चन्द्र के उत्तर (अन्दर की ओर) हो तब, अर्थात् चन्द्र का मण्डल नक्षत्र के मण्डल के बाहर की ओर (दक्षिणी ओर) हो तब।

२) दक्षिणाभिमुख योग



२) दक्षिणाभिमुख योग : नक्षत्र चन्द्र के दक्षिण (बाहर की ओर) हो तब, अर्थात् चन्द्र का मण्डल नक्षत्र के मण्डल के अन्दर की ओर (उत्तरी ओर) हो तब।

३) प्रमर्दयोग :



३) प्रमर्द योग : नक्षत्र के वर्तुल के ठीक नीचे से चन्द्र अयन गुजरे तब।

अब प्रत्येक नक्षत्र का चन्द्र के साथ उपरोक्त तीन में से किस प्रकार के योग होते हैं, यह बताया है। मण्डल प्रकरण गाथा ८६ की टीका :

अष्टाविंशतिनक्षत्राणां मध्ये द्वादशनक्षत्राणि सर्वाभ्यन्तरमंडलस्थानि चंद्रस्योत्तरेणोत्तरस्यां सदा योगं युजन्ति। अष्टौ नक्षत्राणि सर्वबाह्यमंडलस्थानि चंद्रस्य दक्षिणस्यां दिशि व्यवस्थितानि सदा योगं युञ्जन्ति। सर्वाभ्यन्तरसर्वबाह्ये नक्षत्रमंडले त्यक्त्वा शेषाणि षण्मध्यमंडलस्थान्यष्टौनक्षत्राणि कदाचिदुत्तर-योगीनि कदाचिदक्षिणयोगीनि कदाचित्प्रमर्दयोगीन्यपि।

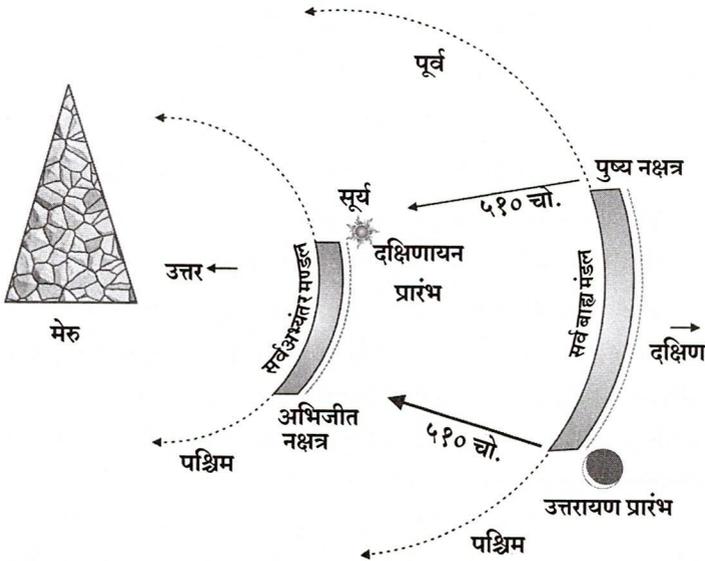
२८ नक्षत्रों में से सर्वअभ्यन्तर मण्डल के १२ नक्षत्रों का उत्तराभिमुख योग ही होता है। सर्वबाह्य मण्डल के ८ नक्षत्रों का दक्षिणाभिमुख योग होता है। बाकी के २ से ७ मण्डल के ८ नक्षत्रों का ३ प्रकार का योग जानने में आता है। लोकप्रकाश में तो ७वें मण्डल में स्थित ज्येष्ठा के ३ प्रकार के योग न कहते हुए

१. इसके उपरान्त सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र-४४ में भी इस प्रकार की बात की है, किन्तु उसमें सामान्य मतान्तर है

प्रमर्द योग ही कहा है। उपरान्त ८वें मण्डल में स्थित पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा के २-२ तारों का दक्षिणाभिमुख योग होता है और पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा के २-२ तारों का प्रमर्द योग होता है, ऐसा बताया गया है।

आकृति : २८

युग की शुरूआत : श्रा. व. १ के आकाश में  
सूर्य, चन्द्र, पुष्य, अभिजित आदि की स्थिति



नोट : १) चन्द्र से पुष्य = लगभग १२ घण्टों में सूर्य द्वारा तय (पार) होता हजारों योजन का अन्तर,

२) सूर्य से अभिजित = लगभग १२ घण्टों में सूर्य द्वारा तय होता हजारों योजन का अन्तर,

३) ●...अभिजित = ५९० यो.

४) ●...पुष्य = ५९० यो.

इसका शब्दार्थ तो स्पष्ट है, किन्तु भावार्थ समझे बिना पदार्थ का बोध होना असम्भव है। इसलिए सर्वप्रथम चन्द्र आदि के अयनों की जानकारी में युग का शब्दार्थ और उसकी शुरुआत समझनी जरूरी है।

युग = काल का माप = ५ वर्ष का समूह। इसकी विशेष जानकारी बाद में बताई जाएगी, किन्तु युग की शुरुआत श्रा. व. १ (शास्त्रीय) अर्थात् आषाढ़ वदी १ से मापी जाती है।

उक्तं हि-सावणबहुलपडिवए, बालवकरणे अभीङ्गनक्खत्ते सव्वत्थ पढम समए, जुगस्स आइं विआणाहि। सर्वत्रेति भरतैरावतविदेहेषु भाव्यम् अवसर्पिण्यां षण्णामरकाणाम् अप्यादिरत्रैव।

उपरान्त, लोकप्रकाश में बताया है :

चंद्रोत्तरायणारम्भो युगादिसमये भवेत्।

प्रागुत्तरायणं पश्चाद्याम्यायनमिति क्रमः॥ ४६६ ॥ सर्ग-२०

प्रवृत्तिः स्याद्यतो ज्योतिश्चक्रचारैकमूलयोः।

सूर्ययाम्यायनशीतांशूत्तरायणयोः किल ॥ ४६७ ॥ सर्ग-२०

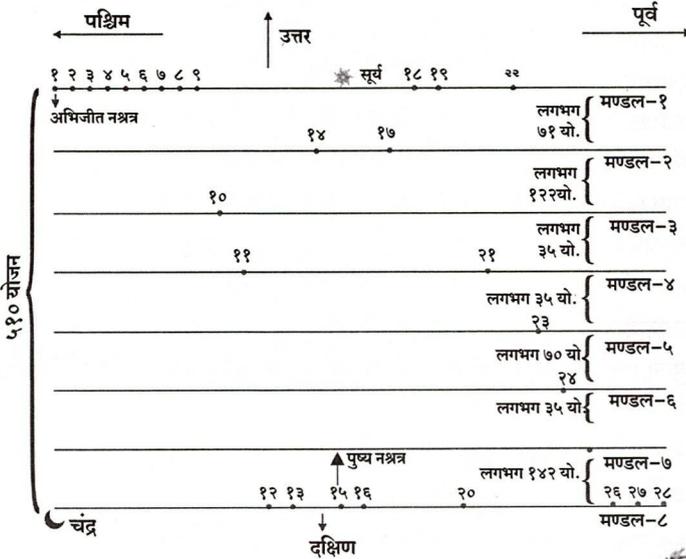
अर्थात् श्रावण वदी १ के बालव नामक करण में भरत-ऐरवत में सूर्योदय के प्रथम समय से युग की शुरुआत होती है, इसके साथ-साथ चन्द्र का उत्तरायण और सूर्य का दक्षिणायन शुरू होता है। अर्थात् चन्द्र सर्वबाह्य मण्डल में हो, बाद में उसका उत्तरायण शुरू होता है, तब युग की शुरुआत होती है, और सर्वबाह्य मण्डल में स्थित चन्द्र का सर्वअभ्यन्तर मण्डल में स्थित अभिजित के साथ योग होता है, और सर्वअभ्यन्तर मण्डल में स्थित सूर्य का दक्षिणायन उसी समय शुरू होने से सर्वअभ्यन्तर मण्डल में स्थित सूर्य का सर्वबाह्य मण्डल में स्थित पुष्य के साथ योग होता है।

इस प्रकार सूर्य और अभिजित नक्षत्र दोनों एक ही प्रथम (सर्वअभ्यन्तर) मण्डल में तथा चन्द्र और पुष्य दोनों एक ही सर्वबाह्य मण्डल में होने पर भी उनका परस्पर पूर्व-पश्चिम अन्तर हजारों योजन का है। जबकि पहले मण्डल में स्थित

सूर्य और ८वें मण्डल में स्थित पुष्य के बीच मात्र ५१० यो. तथा ८वें मण्डल में स्थित चन्द्र और पहले मण्डल में स्थित अभिजित के बीच ५१० यो. का ही अन्तर है। इसलिए उनका योग युक्तिसंगत है। अतः मण्डल की भिन्नता योग हेतु बाधक हो, ऐसा नहीं है। किन्तु सूर्य या चन्द्र से निकट स्थित नक्षत्रों के साथ ही उनका योग होता है। उपरान्त प्रत्येक नक्षत्र के बीच पूर्व-पश्चिम अन्तर हजारों योजन का तो जघन्य से बताया है, इसलिए कभी प्रथम मण्डल में किसी के साथ योग करके चन्द्र-सूर्य सीधे अन्य कोई भी मण्डल में स्थित नक्षत्र के साथ योग कर सकते हैं।

### आकृति २९

युग की शुरूआत में (श्रा. व. १) सर्वाभ्यन्तर मण्डल में सूर्य, सर्वबाह्य मण्डल में चन्द्र स्थित हैं। उस समय भिन्न मण्डल में रहे नक्षत्रों का आयोजन (Setting): (समझने की सरलता हेतु आकृति सीधी रेखा में दी गई है)



चित्र की समझ:

१ — २ या परस्पर कोई भी अनन्तर नक्षत्र - हजारों योजन (पूर्व-पश्चिम)  
अन्तर :

- (१) १ से २८ नम्बर = अभिजित से उत्तराषाढा तक के नक्षत्र,  
(२) सूर्य तथा १५वें पुष्य नक्षत्र के बीच पूर्व-पश्चिम अन्तर नहीं,  
उत्तर-दक्षिण = ५१० यो. अन्तर है।  
(३) जबकि सूर्य और १४वें नक्षत्र के बीच पूर्व-पश्चिम अन्तर - हजारों योजन,  
उत्तर-दक्षिण अन्तर = ७१ योजन है,  
इसलिए पुष्य के साथ सूर्य का योग  
अधिक सुसंगत है।  
(४) चन्द्र तथा १ (अभिजित नक्षत्र) के बीच पूर्व-पश्चिम अन्तर नहीं,  
उत्तर-दक्षिण ५१० यो. अन्तर है।

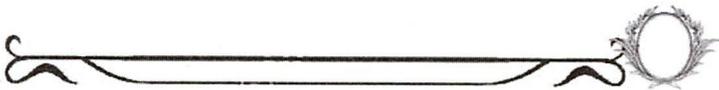
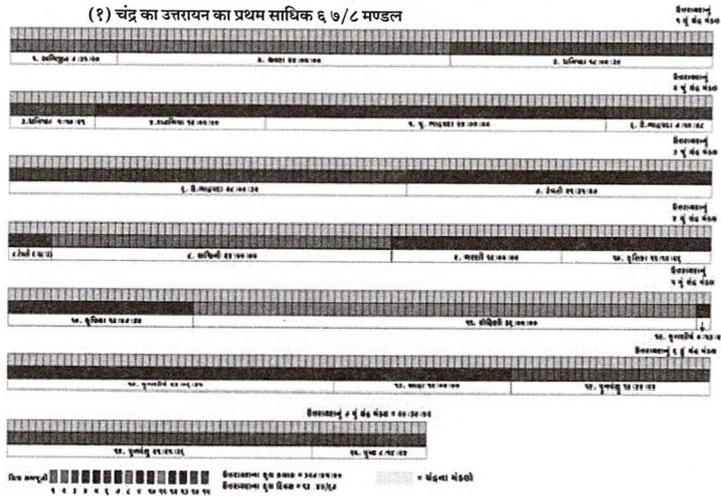
युग की शुरूआत के बाद इस प्रकार, १३ १/२दिन के आस-पास चन्द्र का उत्तरायण पूर्ण होता है, अतः सर्वप्रथम अभिजित के ९ मु. (२७) / ६७ = लगभग ७ घण्टे १२ मिनिट का समय पूर्ण होने के बाद श्रवण-धनिष्ठा नक्षत्र क्रमशः ३०-३० मु. के लिए चन्द्र के साथ योग करेंगे। प्रथम मण्डल पूर्ण करने में चन्द्र को साधिक ६२ मु. होता है, और उपरोक्त नक्षत्रों का संयुक्त काल कुछ कम ७० मु. का होता है, इसलिए चन्द्र के बाह्य से प्रथम मण्डल में या उत्तरायण के प्रथम मण्डल में अभिजित-श्रवण के साथ का योग पूर्ण होगा, और धनिष्ठा का बहुधा भाग भी पूर्ण होगा। लगभग ७ मुहूर्त का धनिष्ठा का योग चन्द्र के उत्तरायण के दूसरे मण्डल में होगा उसके बाद के शतभिषा और पूर्व भाद्रपद के कुल ४५ मुहूर्त भी चन्द्र के उत्तरायण के दूसरे मण्डल में होंगे, और उत्तर भाद्रपद के लगभग १० मुहूर्त भी उसी में होंगे। फिर उसके ३५ मुहूर्त, रेवती के लगभग २७ मु. तीसरे मण्डल में भोगे जाएँगे और चौथे मण्डल में रेवती के ३ और अश्विनी के ३० मु. भोगे जाएँगे।

इस प्रकार सर्वअभ्यन्तर मण्डल में स्थित ९ नक्षत्रों का भोग जब चन्द्र बाह्य

मण्डल में हो तभी होता है, अर्थात् उत्तराभिमुख योग ही होता है। इस प्रकार विचार करने से यह तर्कसंगत हो जाएगा। उसके बाद के ६ नक्षत्रों का भोग करते-करते चन्द्र का सर्वबाह्य मण्डल में स्थित पुष्य के साथ योग होगा। पुनः चन्द्र का दक्षिणायन शुरू हो जाने से चन्द्र दक्षिण की ओर जाएगा। आश्लेषा-मघा के ४५ मु. भोगते हुए चन्द्र के दक्षिणायन में दो मण्डल पूर्ण होंगे। इससे प्रथम मण्डल में स्थित पू. फाल्गुनी - उ. फाल्गुनी के साथ योग करते हुए चन्द्र दक्षिण की ओर (बाहर के मण्डल में) होगा, इसलिए उसका भी स्थाई उत्तराभिमुख योग होगा। इस प्रकार सूक्ष्म बुद्धि से तथा गणित से विचार करते हुए सभी नक्षत्रों का आकाश में स्थान और उन नक्षत्रों के योग में चन्द्र का स्थान और उनके योगो आदि को सुज्ञ लोग स्वयं जान लें। सूर्य के साथ के योग के सन्दर्भ में भी इसी प्रकार स्वयं जान लें। इस हेतु नीचे की आकृति उपयोगी रहेगी।

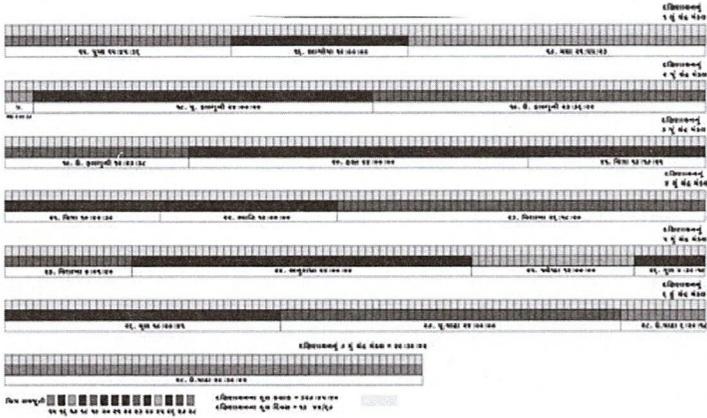
आकृति ३० : समझने की सरलता हेतु चतुर्ल की जगह नक्षत्रों को सीधी रेखा में रखा गया है।

६२ २३/२२१ मु. = ४९ क. मी. ५९ से. मां पूर्ण होते चंद्रके मण्डलो में नक्षत्रका योग  
(१) चंद्र का उत्तरायन का प्रथम साधिक ६ ७/८ मण्डल



आकृति : ३०

६२२३/२२१ पु. = ४९ क. मी. ५९ से. मां पूर्ण होते चंद्रके मण्डलो में नक्षत्रका योग  
(१) चंद्र का दक्षिणायन का द्वितीय साधिक ६ १/२ मण्डल



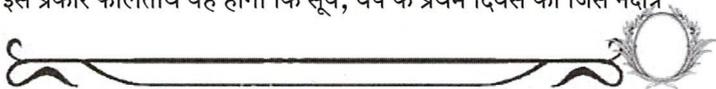
(d) सूर्य के साथ नक्षत्र-राशियों के योग

सूर्य अहोरात्र में जो दूरी पार करता है उसके = ५४,९०० कोणीय विभागों की धारणा करें। उपरान्त, सूर्य १ मुहूर्त में १८३० विभाग गति करता है, ∴ ३० मुहूर्त = १८३० × ३० = ५४,९०० विभागों की गति होती है। नक्षत्र एक मुहूर्त में १८३५ विभाग गति करता है, अतः सूर्य से नक्षत्र की गति ५ विभाग अधिक होती है इसलिए सूर्य ५ विभाग पीछे रहता है, नक्षत्र प्रत्येक मुहूर्त में ५ विभाग आगे बढ़ता है।

$$\begin{aligned} \text{अतः } ३६६\text{वें दिन सूर्य} &= ५ \text{ विभाग} \times ३० \text{ मुहूर्त} \times ३६६ \text{ दिन} \\ &= ५४,९०० \text{ विभाग पीछे रहता है, या नक्षत्र आगे बढ़ते हैं।} \end{aligned}$$

शास्त्रों में १ अहोरात्रि में सूर्य द्वारा पार होता अन्तर भी इतना ही (५४,९०० विभाग) बताया गया है। इस प्रकार सभी नक्षत्रों से व्याप्त प्रदेश या अर्धमण्डल = ५४,९०० विभाग ही माप होता है, जो सिद्ध होता है।

इस प्रकार फलितार्थ यह होगा कि सूर्य, वर्ष के प्रथम दिवस को जिस नक्षत्र

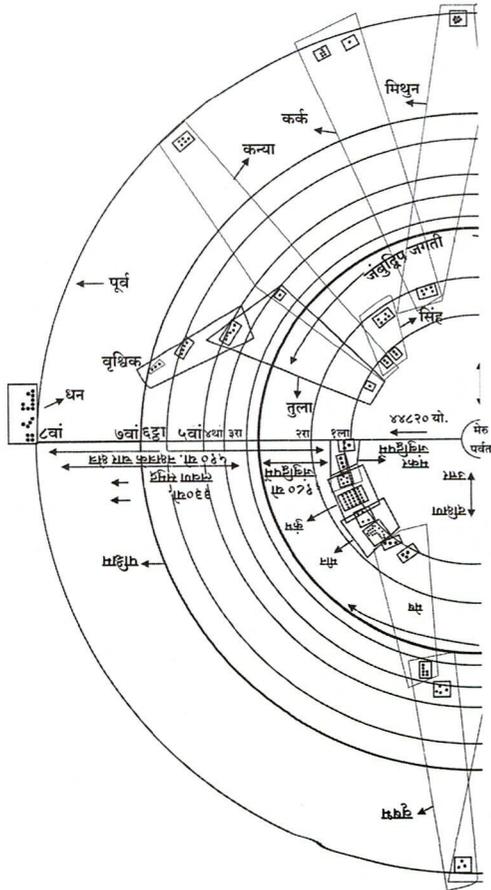


के साथ होगा, वह नक्षत्र वर्ष के अन्तिम दिन सूर्य से ५४,९०० विभाग आगे बढ़ चुका होगा। इसी बात का आधुनिक दृष्टिकोण से (घण्टे, मिनट के माप से) मापें तो भी सिद्ध होता है।

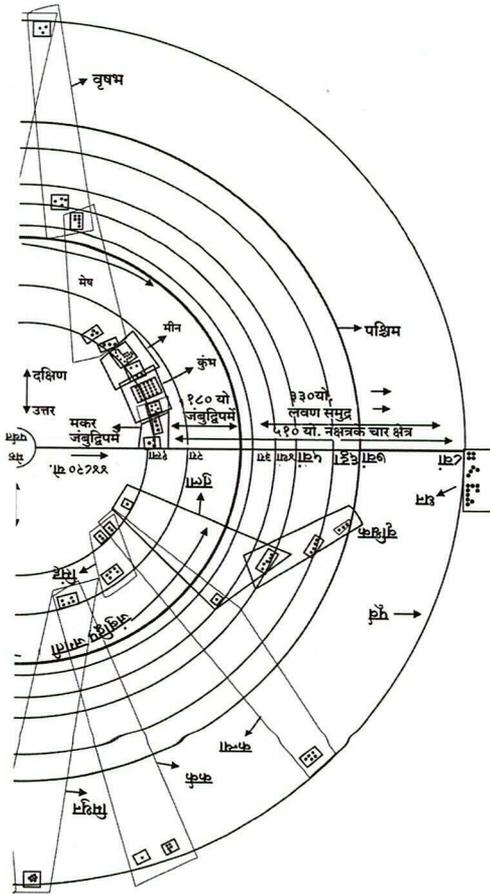
नोट : उपरोक्त विचारणा स्थूल गणित से प्राप्त की गई है, अतः थोड़े भेद की जगह है। सूर्य अहोरात्रि में आकाश में जितना अन्तर पार करता है, उतने प्रमाण क्षेत्र सूर्य ३६६ दिनों में नक्षत्र से पीछे पड़ता है। अर्थात् एक अहोरात्रि में २४ घण्टे का अन्तर पार होता है, अतः ३६६ दिनों में सूर्य २४ घण्टे पीछे पड़ता है, क्योंकि सूर्य लगभग ६० मुहूर्त = ४८ घण्टे में १ मण्डल पूर्ण करता है, जबकि नक्षत्र  $५९ \frac{३०७}{३६७}$  मुहूर्त = ४७ घण्टे ५१ मिनट ३६ सेकिण्ड ∴ लगभग ४७ घण्टे ५२ मिनट में १ मण्डल पूर्ण करता है। इसलिए प्रत्येक मण्डल = २ दिन में सूर्य लगभग  $८ \frac{१}{३}$  मिनट = ८ मिनट २४ सेकिण्ड पीछे रहेगा। इसलिए ३६६वें दिन सूर्य लगभग साधिक २४ घण्टे (१४४० मिनट) पीछे रहेगा। इस प्रकार यह माप (२४ घण्टे) = एक अहोरात्रि में सूर्य जितनी गति करता है उतने माप से नक्षत्र से पीछे रहता है, इसका ताला मिल जाता है। ३६६ दिनों में पीछे रहा सूर्य क्रमशः अर्धमण्डल में (२४ घण्टों में सूर्य द्वारा पार किया जाने वाला क्षेत्र) स्थित २८ नक्षत्रों के साथ योग करके उन्हें मुक्त करता है और नए वर्ष में दूसरे सूर्य के २८ नक्षत्रों के साथ योग करके मुक्त करेगा। इस प्रकार युग की शुरुआत से १-३-५-७-९-११ आदि विषम संख्या के वर्ष में सूर्य अपने परिवार के नक्षत्रों (राशि) के साथ योग करता है, और २-४-६-८-१० अर्थात् सम संख्या के वर्ष में दूसरे सूर्य-चन्द्र के परिवारभूत २८ नक्षत्रों (राशियों) के साथ योग करता है। इस प्रकार सतत किसी न किसी नक्षत्र (राशि) के साथ सूर्य का योग रहेगा। इसकी विवरण तलिका पहले बताई ही है, उससे जान लें, बाकी चन्द्र का नक्षत्रों के साथ योग प्रकरण में बहुत कुछ बताया है, उसके अनुसार यहाँ भी स्वयं जान लें।

आकृति : ३१

प्रचलित मान्यतानुसार नक्षत्रों तथा



राशियों का आकाश में आयोजन



न.	नक्षत्र का नाम	नक्षत्र मण्डल की सं.	चन्द्र मण्डल की सं.	तारों की सं.	आकार	रचना	नक्षत्रों के प्रकार	चन्द्र के साथ भोगभ्रमण का काल
१)	अभिजित	१	१	३	गोशीर्षवली	••	-	१मु+ $\frac{२७}{६७}$
२)	श्रवण	१	१	३	कासार	••	समक्षेत्री	३० मुहूर्त
३)	धनिष्ठा	१	१	५	पक्षिपंजर	••••	समक्षेत्री	३० मुहूर्त
४)	शतभिषा	१	१	१००	पुष्पमाला	••••••••	अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त
५)	पू. भाद्रपदा	१	१	२	अर्द्धवापी	••	समक्षेत्री	३० मुहूर्त
६)	उ. भाद्रपदा	१	१	२	अर्द्धवापी	••	सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त
७)	रेवती	१	१	३२	नौकासंस्थान	••••••••	समक्षेत्री	३० मुहूर्त
८)	अश्विनी	१	१	३	अश्वस्क्न्ध	••	समक्षेत्री	३० मुहूर्त
९)	भरणी	१	१	३	भगसंस्थान	••	अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त
१०)	वृत्तिका	३	६	६	क्षुरधारा	••••	समक्षेत्री	३० मुहूर्त
११)	रोहिणी	४	७	५	शकटोद्भि	••••	सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त
१२)	मृगशीर्ष	८	१५	३	मृगशीर	••	समक्षेत्री	३० मुहूर्त
१३)	आर्द्रा	८	१५	९	रुधिरबिन्दु	•	अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त
१४)	पुनर्वसु	२	३	५	तुला	••••	सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त
१५)	पुष्य	८	१५	३	वर्द्धमानक	••	समक्षेत्री	३० मुहूर्त
१६)	आश्लेषा	८	१५	५	पताका	••••	अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त

न.	नक्षत्र का नाम	नक्षत्र मण्डल की सं.	चन्द्र मण्डल की सं.	तारों की सं.	आकार	रचना	नक्षत्रों के प्रकार	चन्द्र के साथ भोगभ्रमण का काल
१७)	मघा	२	३	७	प्राकार		समक्षेत्री	३० मुहूर्त
१८)	पू.फाल्गुनी	१	१	२	अर्द्धपल्यंक		समक्षेत्री	३० मुहूर्त
१९)	उ.फाल्गुनी	१	१	२	अर्द्धपल्यंक		सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त
२०)	हस्त	८	१५	५	हस्ततल		समक्षेत्री	३० मुहूर्त
२१)	चित्रा	४	७	१	मुखमंडन सुवर्ण फूल		समक्षेत्री	३० मुहूर्त
२२)	स्वाति	१	१	१	कीलक		अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त
२३)	विशाखा	५	८	५	पशुदामन		सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त
२४)	अनुराधा	६	१०	४	एकावली		समक्षेत्री	३० मुहूर्त
२५)	ज्येष्ठा	७	११	३	गजदंत		अर्धक्षेत्री	१५ मुहूर्त
२६)	मूल	८	१५	११	वृश्चिक पुच्छि		समक्षेत्री	३० मुहूर्त
२७)	पूर्वाषाढा	८	१५	४	गजविक्रम		समक्षेत्री	३० मुहूर्त
२८)	उत्तराषाढा	८	१५	४	सिंहनीषदन		सार्धक्षेत्री	४५ मुहूर्त
								८१९ <sup>२७</sup> / <sub>६७</sub> मुहूर्त

## यूरोपीय खगोल के मतानुसार नक्षत्रों / राशियों की व्यवस्था

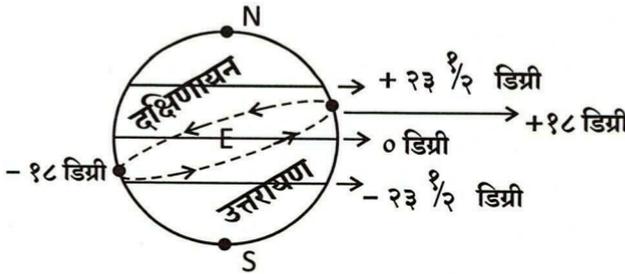
● कोपरनिकस की सूर्यकेन्द्रित विचारणा के अमल में आने से वर्तमान यूरोपीय खगोलशास्त्रों द्वारा तय किए गए सिद्धान्त : (१) ब्रह्माण्ड के अंदर अनेक गैलेक्सियाँ (आकाशगंगाएँ) हैं।

● उनमें से मन्दाकिनी आकाशगंगा में स्थित सूर्य के चारों ओर आसपास यह पृथ्वी सतत घूमती है। उपरान्त पृथ्वी के आसपास चन्द्र सतत घूमता है। हम (१) सूर्य को a = First Object, (२) पृथ्वी को b = Second Object, (३) चन्द्र को c = Third Object के रूप में पहचानेंगे। इस प्रकार a के आसपास b, और b के आसपास c सतत घूमता है। तिथि या नक्षत्र के साथ के योगों के लिए आधुनिक खगोलशास्त्र का गणित ऊपर लिखे a, b और c objects पर ही अवलम्बित है, जिसकी बात आगे देखेंगे। विशेष रूप से यूरोपीय खगोलशास्त्र के अनुसार ये ३ objects के चारों ओर के अवकाश के काल्पनिक १२ भाग किए गए हैं, जिन्हें Zodiac कहते हैं; जिस पर से राशि का object प्रचलित बना। इसके अन्दर कुछ Fix Star रहते हैं, जिनकी संख्या ९०० से अधिक है। ये Fix Stars के समूह से कोन्स्टिलेशन - नक्षत्र बनते हैं, गतिशील होने पर भी हमसे बहुत दूर होने के कारण उनकी गति हजारों वर्षों में हमें कुछ ही होती हुई प्रतीत होती है, इसलिए उन्हें Fix Stars कहा गया। अब पृथ्वी सूर्य के आसपास फिरती है, अतः पृथ्वी के केन्द्र से रोज सूर्य का स्थान बदलता दिखेगा, इसलिए सूर्य के पीछे अलग-अलग Fix stars और Zodiac दिखेंगे। इस प्रकार सूर्य अमुक राशि-नक्षत्र में है, ऐसा कहा जाता है, और इसी प्रकार से चन्द्र, पृथ्वी के आसपास सतत घूमता है,

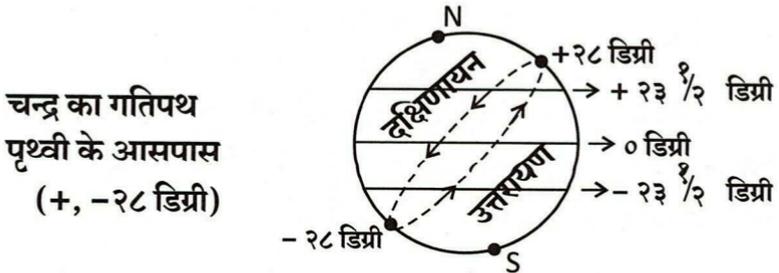
अतः पृथ्वी से चन्द्र के पीछे के अवकाश में Fix stars / Zodiac भी रोज बदलते दिखेंगे। इसे चन्द्र का राशि-नक्षत्र के साथ हुआ योग कहते हैं। इसकी सूक्ष्म समझ नीचे दिए अनुसार है। [Page H, I, J जैन आगमिक गणित पर आधारित पंचांग प्रक्रिया से साभार]

## (३) सूर्य, चन्द्र और ग्रहों का राशि और नक्षत्रों के साथ योग

(a) यूरोपीय खगोलशास्त्र : चन्द्र पृथ्वी से सबसे नज़दीक का अवकाशीय पिण्ड है, और यह पृथ्वी का चक्कर (चारों ओर घूमना) लगाता है, इसलिए चन्द्र पृथ्वी का उपग्रह है। चन्द्र की तुलना में पृथ्वी का व्यास ३.६७ गुना है, अर्थात् पृथ्वी चन्द्र से ३.६७ गुना चौड़ी है। उपरान्त चन्द्र पृथ्वी के आस-पास गोलाकार के स्थान पर Eliptic (थोड़ा लम्बगोल) Orbit पर घूमता है। चन्द्र, पृथ्वी के आस-पास पश्चिम से पूर्व दिशा में तथा पृथ्वी के ऊपर के (+, -) १८ डिग्री अक्षांश से (+, -) २८ डिग्री अक्षांश तक गति करता है।



चन्द्र का गतिपथ  
पृथ्वी के आसपास (+, -१८ डिग्री)



चन्द्र को इस प्रकार पृथ्वी के आसपास एक चक्कर पूरा करने में २७ दिन ७ घण्टे ४३ मिनिट लगते हैं, जिसे सायडीरीयल मास (नक्षत्र मास) कहते हैं। जिससे चन्द्र का

सभी राशियों और नक्षत्रों के साथ योग २७ दिन ७ घण्टे ४३ मिनट में पूर्ण होता है और लगभग उसके आधे समय को (१३ दिन १५ घण्टे ५२ मिनट) चन्द्र का उत्तरायण / दक्षिणायन कहते हैं। हाँ, पृथ्वी और सूर्य के परस्पर गुरुत्वाकर्षण के कारण सायडीरीयल महीना (नक्षत्र मास) २-४ घण्टे छोटा-बड़ा होता है, किन्तु आदर्श ओरिजिनल टाइम तो ऊपर बताए अनुसार ही जाना जाता है।

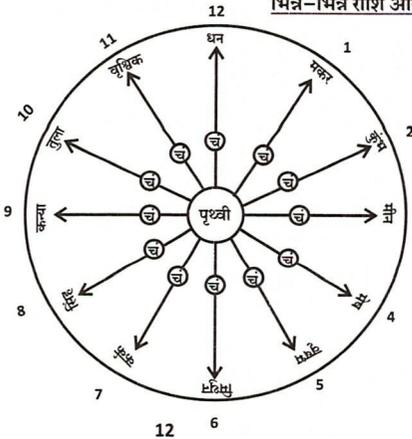
(यहाँ विशेष रूप से यह याद रखना है, कि राशि की व्यवस्था कहीं भी जैन आगम शास्त्रों या मूल हिन्दू शास्त्रों में नहीं थी, राशि की व्यवस्था पश्चिम के विद्वानों द्वारा दिया गया कॉन्सेप्ट है।) वे मानते हैं कि राशि = आकाश का निश्चित खण्ड। हमारी पृथ्वी के आस-पास के अखण्ड आकाश के १२ भाग की कल्पना करते हुए १२ राशियों का अस्तित्व उत्पन्न होता है, उपरान्त वह स्थिर है। उपरान्त नक्षत्र = तारों का समूह, निश्चित नक्षत्र निश्चित आकाशखण्ड में आयोजित हैं, इसलिए उन नक्षत्रों के समूह से राशि बनती हैं ऐसी मान्यता है; उपरान्त उस नक्षत्र के नाम से पहचाने जाने वाले तारे हमसे हजारों प्रकाशवर्ष दूर हैं, इसलिए गतिशील होने पर भी हमें स्थिर लगते हैं।

इस प्रकार साधिक २७ दिनों में पृथ्वी के आसपास घूमता चन्द्र इन सभी राशियों में से (नक्षत्रों में से) गुजरता हुआ हमें लगता है। इसे चन्द्र का राशि-नक्षत्र के साथ योग कहते हैं। **देखिएचित्र-१**

इसी प्रकार पृथ्वी का सूर्य के आसपास होने वाला भ्रमण  $365\frac{1}{8}$  दिन का है। इसलिए उस दौरान सूर्य भी पृथ्वी से भिन्न-भिन्न राशि में जाना जाता है और राशि/नक्षत्र का भोग पूर्ण करता है। **देखिएचित्र-२**

इसी तरह से जो भी ग्रह पृथ्वी के केन्द्र से आकाशखण्ड में जाने जाते हैं उसके अनुसार की राशि और नक्षत्र में वे ग्रह हैं, ऐसा जानें...। इस प्रकार यह राशि या नक्षत्र का (आकाशखण्ड का) सूर्य, चन्द्र और ग्रहों के साथ योग हुआ कहलाता है।

भिन्न-भिन्न राशि और नक्षत्र के साथ चन्द्र के योग - २७d. ७h. ४३m.

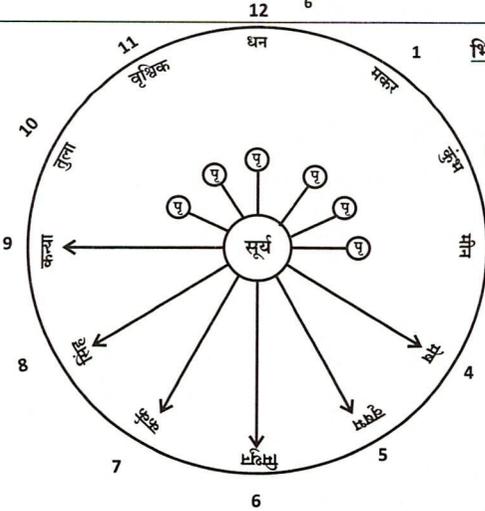


(१) कुल ३६० अंश × १२ राशि = ३० अंश  
अन्तर चन्द्र काटे तो १ राशि पार हुई

(२) कुल ३६० अंश × २७ नक्षत्र = १३.३३ अंश  
अन्तर चन्द्र काटे तो १ नक्षत्र पार हुआ

चित्र-१

भिन्न-भिन्न राशि और नक्षत्र के साथ सूर्य के योग

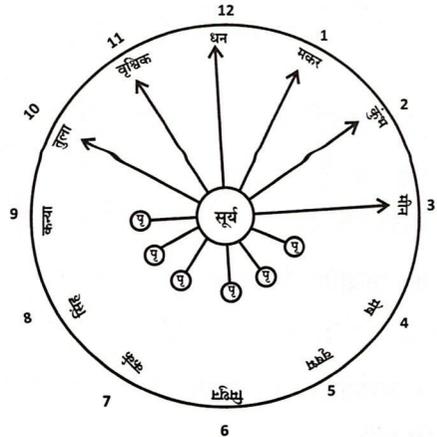


(१) कुल ३६० अंश × १२ राशि = ३० अंश  
अन्तर पृथ्वी काटे तो सूर्य की १ राशि पार हुई

चित्र-२

चित्र-३

(२) कुल ३६० अंश × २७ नक्षत्र  
= १३.३३ अंश अन्तर पृथ्वी काटे  
तो सूर्य का १ नक्षत्र पार हुआ



**सर्वज्ञमत की आधुनिक खगोल के साथ भेदाभेद की विचारणा**

(१) सर्वज्ञके मत में नक्षत्रों की संख्या २८ है। आधुनिक खगोल के मत में भी नक्षत्रों की संख्या २८ है, किन्तु अभिजित को श्रवण और उत्तराषाढ़ा में समावेश करके वे नक्षत्रों की संख्या २७ बताते हैं।

(२) सर्वज्ञके मत में नक्षत्रका अधिपत्य क्षेत्र या नक्षत्रका विस्तार असमान माना गया है, जबकि आधुनिकखगोलशास्त्र सभी नक्षत्रोंके विस्तार को समान ही मानता है।

- जिनमतके अनुसार नक्षत्रके विस्तार के समक्षेत्री, अर्धक्षेत्री, सार्धक्षेत्री और शेष इस प्रकार चार विभाग किए गए हैं, आधुनिक खगोलशास्त्र के अनुसार नक्षत्र के विस्तार का मात्र समक्षेत्री ही भेद किया जाता है।

- आधुनिकखगोलशास्त्र के अनुसार प्रत्येक नक्षत्र १३°२०' का, अर्थात् सबका कुल क्षेत्र  $१३^{\circ}२०' \times २७ = ३६०^{\circ}$  होता है जबकि जिनमत के अनुसार:

१. १५ समक्षेत्री नक्षत्र = $१५ \times १३^{\circ}१०'३५''$ =	$१९५^{\circ} १५०' ५२५''$
२. ६ अर्धक्षेत्री नक्षत्र = $६ \times ६^{\circ}३९'१७.५''$ =	$३६^{\circ} २१०' १०५''$
३. ६ सार्धक्षेत्री नक्षत्र = $६ \times १९^{\circ} ४५'५२.५''$ =	$११४^{\circ} २७०' ३१५''$
४. १ अभिजित नक्षत्र = $१ \times ४^{\circ} १४'१५''$ =	$४^{\circ} \quad १४' \quad १५''$
कुल =	$३६०^{\circ}$ होता है।

(३) आधुनिक खगोलके अनुसार चन्द्रके साथ प्रत्येक नक्षत्रके योग का काल १३°२०' है, जो लगभग २२ से २७ घण्टे का होता है, और सूर्य के साथ योग का काल १३°२०' अर्थात् लगभग साधिक १३ दिन का होता है।

● जबकि जिनमतानुसार समक्षेत्री नक्षत्रका चन्द्रके साथ का योगकाल १३°१०'३५'' अर्थात् २४ घण्टे का होता है,

- अर्धक्षेत्री नक्षत्रका चन्द्रके साथ योगकाल  $६^{\circ}३९'१७.५''$  अर्थात् १२ घण्टे का होता है,

- और सार्धक्षेत्री नक्षत्रका चन्द्रके साथ योगकाल  $१९^{\circ}४५'५२.५''$  अर्थात् ३६ घण्टे का होता है। सूर्य के साथ भी इसी प्रकार क्रमशः नक्षत्र का योग साधिक १३ दिन, साधिक ६ दिन और साधिक २० दिन का होता है।

(४) आधुनिक खगोल अभिजित को नहीं मानता और उसकी डिग्री को सभी नक्षत्रों में समान भाग में बाँट देता है, फिर भी उत्तराषाढा और श्रवण के अन्दर हमने अभिजित को समाहित किया, ऐसा ही प्रतिपादन होता है। जबकि जिनमतानुसार चन्द्र के साथ अभिजित  $४^{\circ}१४'१५''$  अर्थात् लगभग ७ घण्टे ३१ मिनट जितने समय रहता है और सूर्य के साथ साधिक ४ दिन रहता है।

(५) चन्द्र के साथ हुए नक्षत्र के योगों से नक्षत्र मास बनता है, जिसका माप शास्त्रीय मत में  $२७-२१/६७$  दिन = २७ दिन ७ घण्टे साधिक ३१ मिनट = २७.३१३ दिन का दिखाया गया है, जबकि आधुनिक खगोलशास्त्र के अनुसार यह माप  $२७.३२१६६१$  = २७ दिन ७ घण्टे साधिक ४३ मिनट बताया है। अर्थात् दोनों के बीच मात्र १२ मिनट का ही फर्क है। इसका निश्चित संस्कार जानने के लिए देखें इस पुस्तक का पेज न. ७१

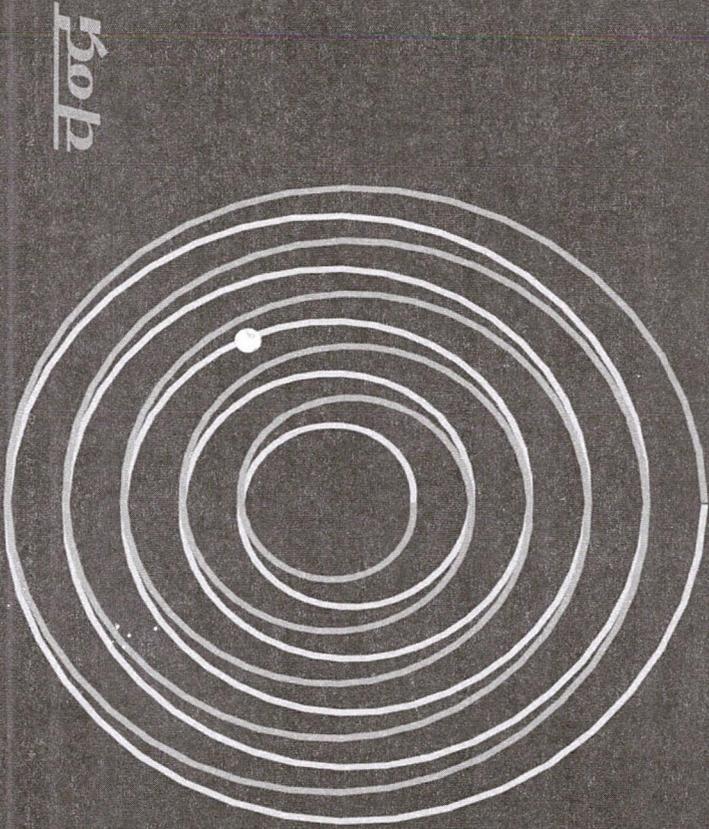
(६) सूर्य के साथ हुए नक्षत्र के योगों से आधुनिक खगोल के अनुसार Sidereal year अर्थात् सायनवर्ष का निर्माण होता है, जिसका माप  $३६५.२५६३६४$  दिन का बताया गया है। उपरान्त यह माप प्रत्येक वर्ष सामान्य रूप से बदलता भी है। जिनमतानुसार नक्षत्र और सूर्य के योग का कुल माप ३६६ दिन बताया है, अतः हर वर्ष अंदाजित १८ घण्टे का भेद होता है।

(७) जिनमत के अनुसार सूर्य के उत्तरायण-दक्षिणायन का माप ३६६ दिन है, जबकि वर्तमान खगोलशास्त्र के अनुसार यही माप  $३६५.२४२१९$  (निरयन वर्ष) दिन का है। अर्थात् जिनमतानुसार सूर्यका नक्षत्रके साथ का भोगकाल और सूर्य का उत्तरायण-दक्षिणायन दोनों का समय ३६६ दिन बताया है, जो आधुनिक खगोलशास्त्रके अनुसार क्रमशः  $३६५.२५६३६४$  (सायन - Sidereal year) और  $३६५.२४२१९$  (निरयन - Tropical year) होता है, और इन्हीं दो

सायन-निरयन वर्ष के माप के भेद से सायन-निरयन दो पद्धतियाँ अस्तित्व में आई हैं। यहाँ याद रहे, कि ३६५.२५ वाली वैल्यू को निरयन और ३६५.२४ वाली वैल्यू को सायन भी कहा है। यहाँ मात्र परिभाषा का भेद है, तत्त्व तो समान ही है।

(८) इसके अलावा जिनमत के अनुसार सूर्य के १ वर्ष में ३६६ मण्डल हैं, उसके चार क्षेत्र ५१० योजन में फैले हुए हैं। चन्द्रका एक नक्षत्रमास साधिक २७ मण्डल है, और उसके चारक्षेत्र भी ५१० योजन में फैले हुए हैं। यह माप भी आधुनिक खगोल के साथ लगभग मिलता है।

इस प्रकार मूलभूत सिद्धान्तों में दोनों पक्ष कहीं समान कहीं असमान होने के बावजूद भी आंकड़ों के सन्दर्भ में अमुक भेद आने के कारण दोनों परम्पराएँ एक-दूसरे से काफी अलग दिखाई देती हैं।



ब्रह्म

सूर्य

वलयकाकार में घुमते सूर्य, चन्द्र

चित्र -५

वत्सुलाकार में घुमते नक्षत्र।

चित्र - ६

## शास्त्रीय सिद्धान्तानुसार और प्रत्यक्ष के साथ मेल साधने से पंचांग बनता है?

पूर्व में बताया उसके अनुसार जिनमत और यूरोपीय खगोलमत में कहीं परस्पर भेद है, फिर भी दोनों समानता भी रखते हैं। प्रश्न यह है कि दोनों में से एक को भी गौण नहीं कर सकते, क्योंकि शास्त्रीय सिद्धान्तों के साथ समझौता करें, तो सम्यक्त्व मलिन होता है, और यूरोपीय खगोलमत में निर्दिष्ट अवकाशी मान्यता से अलग चले तो प्रत्यक्ष को बाधा आती है, इसलिए क्या किया जाए? किसे अधिक प्राथमिकता दी जाए यह समझ नहीं आता। शास्त्रपाठों को प्रायोरिटी देंगे तो प्रत्यक्ष आकाश के साथ बाधा आएगी, ऐसा लगता है और मात्र प्रत्यक्ष को पकड़ेंगे तो शास्त्रपाठ गौण हो जाएँगे, ऐसा लगता है। त्रैकालिक सत्य के प्ररूपक सर्वज्ञ भगवन्त प्रत्यक्षके साथ बाधा आए, ऐसी प्ररूपणा तो नहीं ही करेंगे। इसलिए यह मानना चाहिए कि प्रभुने जिस अर्थ में (जिस दृष्टिकोण से) ये पदार्थ दिखाए, उनका अर्थघटन करनेमें हम कहीं असफल रह रहे हैं। यत् अभ्रान्तप्रत्यक्षं तत् सर्वज्ञस्य अनुमतं एव स्यात् तथा यत् सर्वज्ञस्य अनुमतं तत् अभ्रान्त प्रत्यक्षेण अवश्यं संवादि भवतीति न्यायेन। किसी ऐसे सत्य तत्त्व तक पहुँचना है जहाँ सर्वज्ञ की वाणी और प्रत्यक्ष - दोनों संवादी हो जाएँ।

अब शान्ति से, गहराई से, सूक्ष्म बुद्धि से या मार्गानुसारी प्रज्ञा से विचार करें, तो सूर्यप्रज्ञप्ति आदि ज्योतिषचक्र विषयवाले शास्त्रोंमें आनेवाली जानकारी को अपनी समझकी स्पष्टता हेतु दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। (१) सैद्धान्तिक विषय (निश्चय), और (२) गाणितिक विषय (व्यवहार)।

**(१) सैद्धान्तिक विषयक (निश्चय) :** जिसमें त्रैकालिक अबाधित सिद्धान्त की प्ररूपणा होती हो, जैसे

a) सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र मेरू के पास अयनमार्ग या वर्तुलमार्ग में घूमते हैं।

b) जम्बूद्वीप में ज्योतिषचक्र के पदार्थ दो की जोड़ी में हैं। (इस समग्र ज्योतिषचक्र के थोड़े भाग को ही यूरोपियन विद्वान गैलेक्सी मान रहे हैं।)

c) जम्बूद्वीप के आश्रय से ज्योतिषचक्र के आधे विभाग में १ चन्द्र, १ सूर्य, २८ नक्षत्र, ८८ ग्रह, ६६९७५ कोडा-कोडी (करोड × करोड) तारे हैं।

d) सूर्य-चन्द्र की उत्तरायण-दक्षिणायन को सूचित करने वाली उत्तर-दक्षिण गति और नक्षत्रों के योगों को तथा अहोरात्रि को सूचित करने वाली पूर्व-पश्चिम गति इस प्रकार उभय प्रकार की गति है।

e) एक चन्द्र के परिवार के २८ नक्षत्र अर्धअवकाश को व्याप्त होकर रहे हुए हैं, उनका आधिपत्य क्षेत्र समान न होते हुए सम, अर्ध, सार्ध, और शेष - इस तरह ४ प्रकार का है। उपरान्त उनके अन्दर सूर्य, चन्द्र और ग्रह आते हैं, तब उस नक्षत्र के साथ उनका (सूर्य, चन्द्र और ग्रह का) योग होता है, ऐसा कहा जाता है, इत्यादि

(२) गणितिक विषयक <sup>१</sup>(व्यवहार) : सैद्धान्तिक तत्त्वों को तथा उनकी गहराई को अधिक अच्छे तरीके से शिष्य को (छद्मस्थको) समझाने हेतु उसकी प्रज्ञाको केन्द्र में रखते हुए सत्यसापेक्ष आंकड़ों में उन तत्त्वों का प्रतिपादन किया जाता है। कदाचित् ऐसा कह सकते हैं कि अतीन्द्रिय और अवकाशीय पदार्थों की जानकारी गणित की परिभाषा में अधिक अच्छे तरीके से समझाने हेतु सत्यसापेक्ष किन्तु व्यवहारिक (औपचारिक) कथन किया जाता है। जैसे,

a) मेरू के पास घूमते सूर्य-चन्द्र की प्रथम मण्डल में परिधि ३,१५,०८९ योजन है, तो प्रश्न होता है कि, अयनमार्ग की परिधि कैसे होगी? क्या उसकी कोई निश्चित त्रिज्या होगी? नहीं। फिर भी सिद्धान्त में छद्मस्थ शिष्य को कुछ स्पष्ट बोध प्राप्त हो, इस हेतु इस प्रकार से प्ररूपणा की गई है।

b) सूर्य तथा चन्द्र की उत्तर-दक्षिण गति के द्वारा क्रमशः १८३वें दिन और साधिक १३ दिन में तय होने वाला अन्तर ५१० योजन है, और पूर्व-पश्चिम गति तो परिधि को ३० मुहूर्त के साथ भाग देने से मिलती है। इस प्रकार अयनमार्ग में परिधि ही न हो तो पूर्व में दिखाए गए प्रश्न खड़े होते हैं, फिर भी व्यवहार से इस प्रकार का प्रतिपादन होता है।

१. ववहारो वि हु बलवं, जं वदेह केवली वि छउमत्थं ।  
आहाकम्मं भुंजइ, सुयववहारं पमाणतो ॥२२९॥ पुष्पमाला

c) सूर्य के कुल चार क्षेत्रों को सूर्य ३६६ दिन में पूर्ण करता है। चन्द्र २७-२१/६७ दिन में पूर्ण करता है। चन्द्रमास २९-३२/६२ मुहूर्त प्रमाण है।

d) नक्षत्र क्रमशः १५, ३०, ४५ मुहूर्त सूर्य-चन्द्र के साथ योग करते हैं, शेष नक्षत्र अभिजित ९-२१/६७ मुहूर्त चन्द्र-सूर्य के साथ योग करता है आदि। नक्षत्र मास का प्रमाण  $२७-२१/६७ = २७.३१३$  दिन का दिखाया है।

e) पांच प्रकार के मासका माप - उनके परस्पर मेल का, समादि सांत आदि का प्रतिपादन...

अतः यहाँ यह तय होता है कि छद्मस्थ जीवों को समझाने हेतु केवलज्ञान में प्रतिभासित होनेवाले ज्ञान से कुछ अलग लेकिन लोकभोग्य पद्धति से केवली प्ररूपणा करते हैं। उदा., सूर्य-चन्द्र के मण्डल निश्चय से न होने पर भी मण्डलके रूप में उनकी कल्पना, उनकी परिधि, उनकी (सूर्य-चन्द्र की) मुहूर्त गति, उनका प्रकाशक्षेत्र आदि का प्रतिपादन।

व्यवहारभाषासे होने वाला प्रतिपादन शास्त्रीय है, क्योंकि

१. दशवैकालिकसूत्रकी निर्युक्तिकी २७३वीं गाथा में सत्यभाषा के दस भेद बताए गए हैं:

जणवयसम्मयठवणा नामे रुवे पडुच्च सच्चे अ ।

ववहारभावजोगे दसमे ओवम्मसच्चे अ ॥

उपरान्त द्रव्य लोकप्रकाश के सर्ग-३ के ३१वें योगद्वार की गा. नं. १३६१ से १४०९ में विविध प्रकार की भाषा का वर्णन है। इसमें दस प्रकार की सत्यभाषा में से एक प्रकार व्यवहार सत्यभाषा है, और असत्यअमृषा जो बारह भेद वाली है, उन सभी भेदों को व्यवहार भाषा माना गया है। सत्यभाषा मोक्षमार्गकी आराधक है और व्यवहारभाषा मोक्षमार्गकी विराधक नहीं है। अतः कहा जा सकता है, कि केवली प्ररूपित ग्रन्थों में सत्य के भेद के तुल्य व्यवहार सत्यभाषा और केवली के बोलने योग्य व्यवहारभाषासे भी प्ररूपणा की जा सकती है।

२. इसके उपरान्त १४ पूर्वधर पूज्यपाद भद्रबाहुस्वामीजी द्वारा संकलित कल्पसूत्र में माता त्रिशला को आए छठे स्वप्न - चन्द्र के वर्णन में चन्द्र के विशेषण के रूप में (समुद्र दगपूरंगं) जलधिवेलावर्धकम् रखा है। जिनमतानुसार समुद्र में ज्वार-भाटे का कारण पाताल कलश हैं, फिर भी व्यवहार से ही यह विशेषण रखा गया होगा न?

३. कल्पसूत्र के मूलपाठ में १४ पूर्वधर पूज्यपाद भद्रबाहुस्वामीजी ने परमात्मा ऋषभदेव, प्रभु नेमिनाथ, प्रभु पार्श्वनाथ तथा प्रभु वर्धमानस्वामी के जन्म कल्याणक के वर्णन में सभी स्थानों पर:

**‘नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्टमाणं राइंदियाणं विइकंताणं’**

लिखा है। किन्तु वास्तव में सभी तीर्थकरों का गर्भकाल अलग-अलग है यह बात प्रसिद्ध ही है, तो क्या यह सूत्र व्यवहारभाषा का प्रतिपादन करता है, ऐसा नहीं लगता ?

४. उपरान्त, सिद्धोंकी अवगाहना के विषयमें आवश्यकनिर्युक्ति ९७१, ९७२ और ९७३ की टीका देखने से मरूदेवी माता की अवगाहना जो साधिक ५०० धनुष्य दिखाई गई है, जो व्यवहारिक प्रतिपादन है, ऐसा सिद्ध होता है।

५. जिस प्रकार तिथि का क्षय-वृद्धि वास्तव में तो नहीं होती, फिर भी सूर्योदय को ध्यान में रखते हुए तिथि के क्षय-वृद्धि का व्यवहार होता है।

६. जिस प्रकार किसी भी तिथि की शुरूआत रात या दिन, किसी भी घड़ी से होती है, फिर भी लौकिकपंचागवाले सूर्योदय से सूर्योदय तक ही उन तिथियों का व्यवहार चलाते हैं।

**सूर्यप्रज्ञप्ति, लोकप्रकाश, सूर्य-चन्द्रमण्डलविचार** आदि ग्रन्थों में सूर्य और चन्द्र के मण्डल 'अयनमार्गी होने के कारण एक ओर मण्डल का अभाव दिखाया होने

१. ता नो निच्छयरूवं, निष्फज्जइ मंडलं दिणयरारणं, चंदाण वि एवं चिअ,  
निच्छयओ मंडलाभावो ॥७॥ चंद्र सूर्यमंडल विचार ॥१५॥ मंडल प्रकरण

के बावजूद दूसरी ओर मण्डल की परिधि ३१५०८९ योजन बताई गई, उसके आधार पर सूर्य-चन्द्र की मुहूर्त गति दिखाई गई है, क्या इससे सिद्ध नहीं होता कि शास्त्रों में सैद्धान्तिक ज्ञान त्रैकालिक सत्य के आधार पर दिखाया है और गणितीय ज्ञान लोकव्यवहार को केन्द्र में रखते हुए स्थूल पद्धति का दिखाया गया हो सकता है, इसलिए उसमें प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर सामान्य संस्कार करने में शास्त्रीयता कहीं भी खण्डित नहीं होती। अतः यह निश्चित होता है, कि सैद्धान्तिकदृष्टि से लौकिक और शास्त्रीय सिद्धान्तों में जहाँ भेद है, वहाँ शास्त्रीय सिद्धान्त अधिक सूक्ष्म है, अतः उसका स्वीकार करें और गणित में जहाँ लौकिक और शास्त्रीय गणित में भेद आता है, वहाँ कष-छेद-ताप द्वारा उसकी सूक्ष्मता जाँच कर आवश्यक संस्कार करें। मुख्य रूप से (१) नक्षत्रों की संख्या, (२) नक्षत्रों का चन्द्र एवं सूर्य के साथ के योग सम्बन्धित (क्षेत्र एवं काल से सम्बन्धित) विचारणा, और (३) सायन-निरयन बिन्दु की सत्यता। इन तीन मुद्दों पर सैद्धान्तिक-गणितीय दृष्टि से विचार कर लोकसंगत और शास्त्रसंगत मार्ग ढूँढकर उभयमान्य प्रतिपादन करना चाहिए।

१. तिन्नेव सयसहस्सा, पन्नरस हवति जोअणसहस्सा ।

एगुणनउआ परिही, अब्भंतरमंडले तेर्सि ॥१८॥ मंडल प्रकरण

(१) नक्षत्रों की संख्या २८ है या २७ – एक मीमांसा

नीचे दिए गए सूर्यप्रज्ञप्ति आदि लोकोत्तर ग्रन्थ, और लौकिक में सूर्यसिद्धान्त की टीका आदि ग्रन्थ, और आधुनिक ध ओरायन आदि ग्रन्थों के पाठों से सिद्ध होता है, कि प्राचीन काल में भारतवर्ष की परम्परा में भी २८ नक्षत्र ही थे। नक्षत्रों की संख्या २७ मानने का कारण या उन्हें साबित करने का कोई ठोस तर्क आज भी नहीं मिलता। मात्र गणित की सुविधा हेतु ही २७ संख्या की गई, यह साबित होता है। वि. सं. १६५२ में विनयकुशलगणि रचित मण्डल प्रकरण की स्वोपज्ञ वृत्ति में ५वीं गाथा और उसकी टीका में बताया है, कि एक चन्द्र के परिवार में २८ नक्षत्र होते हैं, जम्बूद्वीपमें दो चन्द्र होने के कारण ५६ नक्षत्र होते हैं।

‘छप्पत्रं’ पंतीओ, नक्खत्ताणं तु मणुअ लोगम्मि।

छावट्टी छावट्टी, होइ इक्किक्कियापंती॥ ५ ॥ तथाहि—किलास्मिन् जंबूद्वीपे दक्षिणतोऽर्द्धभागे एकस्य शशिनः परिवारभूतान्यभिजिदादीन्यष्टाविंशति—संख्याकानि नक्षत्राणि क्रमेण व्यवस्थितानि चारं चरन्ति।

उपरान्त, सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र—३२ में बताते है, कि अभिजित से लेकर उत्तराषाढा तक के सभी नक्षत्र क्रमशः सूर्य-चन्द्र के साथ योग करते हैं, इस प्रकार अभिजित का समावेश करने से फलित होता है कि नक्षत्र २८ हैं।

वयं पुण एवं वदामो सव्वेवि णं णक्खत्ता अभिई आदीया उत्तरासाढा—

पज्जवसाणा पण्णात्ता, तंजहा—अभिइ, सवणो जाव उत्तरासाढा॥ (सू. ३२)

और सामने प्राचीन सनातन (वैदिक) परम्परा में भी २८ नक्षत्र ही स्वीकृत थे। प्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्रामी बाल गंगाधर तिलक द्वारा वेद कब लिखे गए, उस पर हुए संशोधन प्रकाशित करने वाली ध ओरायन पुस्तक, जिस पर मुम्बई समाचार में रविवारीय कॉलम देनेवाले प्रसिद्ध खगोलशास्त्री जे. जे. रावल की सरल प्रस्तुति है, उसके पेज नं. ४८-४९ का ब्यौरा पढ़ते हुए अभिजित नक्षत्र और २८ की संख्या की पुष्टि होती है, जो निम्नानुसार है:

निवेदना वर्षनी परिभाषामां वरसना मध्य भागनो दिवस, मध्य दिवस, विषुवन छे अने तेनी पहेलां चार दिवस पहेलां अभिजित दिवस आवे छे.

छ महिनाना सत्रमां त्रय अभिप्लव सलाहा छे. दरेक सलाहा छ दिवसनुं होय छे. माटे त्रय सलाहाना १८ दिवस थया अने अेक प्रिस्थ्य सलाहा अेटले कुल २४ दिवस. पछीना दिवसने अभिजित दिवस कहे छे, पछी ३ दिवस रवरसमन दिवसो होय छे अने बीजा बे दिवस अतिरात्र अने यतुर्विंश दिवस अने छेले विषुवन अथवा सत्रनो मध्यदिवस. विषुवन दिवस अेक अलग ज दिवस तरीके रहे छे. अतिरात्र अने यतुर्विंशना बे दिवसो सत्रनी शउआत पहेलांना उजवणीना दिवसो छे. आम छ महिनानुं सत्र पूर्ण थाय छे. आम अभिजित दिवस विषुवन दिवस पहेलनो योधो दिवस होय छे.

जे अभिजित दिवसनुं नाम अभिजित नक्षत्र परधी पड्युं होय तो, अेटले के सूर्य अभिजितमां होय तो, पछी विषुवन दिवस अथवा तो शरदसंपातनो दिवस अभिजित दिवस पछी चार दिवसे आवे. सूर्य दररोज १ अंश चाले छे. माटे चार दिवस पछी ते तेना मार्गमां बीजा ४ अंश चाले. जगोणीय गणतरी करतां मालूम परे के अदिती के पुनर्वसु ज्यारे वसंतसंपातबिन्दु अे होय त्यारे निवेद धरावाय तो आपणने ते ज परिणाम मणे. सूर्य सिद्धांतमां पुनर्वसुनो लोन्छट्यू ८३° छे, ज्यारे अभिजितनो २६६°४०° छे. अेटले के अभिजित शरदसंपात करता ६° पाछण छे. अेटले के ते ६° विषुवनना लोन्छट्यू ४थी पाछण छे, जे आपणो वसंतसंपातबिन्दुने पुनर्वसु साथे मणतो मानी अे तो (२६७°-८३° = १८४° जे १८०° नथी) तेमां छ उमेरी अे तो ते १८०° थाय.

ज्यारे वसंतसंपात पुनर्वसुमां होय त्यारे शरदसंपातबिन्दु परे के तेनी नञ्जकमां कोठ विषुवन दिवसना आगमननी अगाउथी ज़ाहेरात करतुं बीजुं तेजस्वी नक्षत्र नथी. तेथी आपणो समञ्ज शकी अे छी अे के प्राथीनतम समयमां जेके अभिजित नक्षत्र रविमार्गथी धणुं दूर होवा छतां, शा माटे तेने जूना नक्षत्रनी यादीमां लेवामां आव्युं छतुं. ते प्रारंभिक निवेदना के लेन-उरमां विषुवन दिवसना आगमननी अगाउथी ज़ाहेर करतुं नक्षत्र छतुं, पण ऋतुओ पाछण पडवाधी तेनो अे कार्य माटे कोठ उपयोग रबो नथी, तेथी तेने नवी नक्षत्र यादीमां पडतुं भूकवामां आव्युं, कारणके आमैय ते रविमार्गथी धणुं दूर आवेवुं नक्षत्र छे.

इसके अलावा चौखम्भा विद्याभवन द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध वैदिक ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त की टीका और (संस्कृत-ज्योतिष विषय में ई. स. २०१९ में राष्ट्रपति अवाॉर्ड से सम्मानित पं. सत्यदेवशर्मा कृत) हिन्दी भाषान्तर की प्रस्तावना में भी २८ नक्षत्रों की बात को पुष्टि मिलती है। प्रस्तावना पेज नं. (xx) में निम्नलिखित जानकारी मिलती है:

अपेक्षाकृत और भी अल्प पुष्टि होती है। तै. ब्रा. में एक स्थान पर (4.4,10,1-3) प्रत्यक्षरूप से एक नवागत नाम 'अभिजित्' का उल्लेख है। मैत्रायणी संहिता (2.13,20) तथा अथर्ववेद की तालिकाओं (19.7,1, 8,1) में इसका अनुसरण किया गया है। यह सर्वथा संभव है कि आरम्भिक नक्षत्र संख्या 28 ही रही हो, जिसमें से 'अभिजित्' इसलिये निकल गया क्योंकि वह धुँधला अथवा अत्यधिक उत्तर की ओर स्थित है। अथवा इसलिये भी हो सकता है कि 27 एक अपेक्षाकृत रहस्यमयी (3×3×3) संख्या है। यह ध्यान रहे कि चीन के 'सिऊ' (Sieou) और अरब के 'मनाजिल' की संख्या भी 28 ही है।

इससे यह फलित होता है, कि २८ नक्षत्र और उसमें अभिजित का समावेश जैनशास्त्र और प्राचीन आर्य परम्परा द्वारा सम्मत है।

## (२) नक्षत्रों का विस्तार समान या असमान ?

पिछले प्रकरणों में देखा कि खगोल और ज्योतिष दोनों का आधार नक्षत्र के सूर्य, चन्द्र और ग्रहों के योग में है। इसलिए प्रत्येक नक्षत्र का विस्तार कितना है, यह तय करना पड़ता है। इस हेतु जैनमत और प्राचीन सनातन (वैदिक) मत मानता है, कि नक्षत्रों का विस्तार असमान है। फिर भी अर्वाचीन वैदिक ग्रन्थ तथा यूरोपीय खगोलशास्त्र का मत है, कि नक्षत्र के विस्तार समान हैं।

सबसे पहले जिनमत और प्राचीन वैदिक मत को जानते हैं:

**जिनमत :** सूर्यप्रज्ञप्ति, ज्योतिषकरंडक, जीवाजीवाभिगम, ठाणांग, मण्डलप्रकरण आदि ग्रन्थों में १५ नक्षत्रों को समक्षेत्री, ६ नक्षत्र अर्धक्षेत्री, ६ नक्षत्र सार्धक्षेत्री और अभिजित को शेष क्षेत्र दिया है।

मण्डल प्रकरण की गाथा नं. ८७ से ९० में चन्द्र-सूर्य का नक्षत्र के साथ का योगकाल दिया गया है:

८७. अभिइस्स चंदजोगो, सत्तट्टीखंडिओ अहोरत्तो ।  
ते हुंति नव मुहुत्ता, सत्तावीसं कलाओ अ ॥
८८. सयभिसया भरणीओ, अह अस्सेस साइ जिट्टाय ।  
एए छनक्खत्ता, पन्नरसमुहत्तसंजोगा ॥
८९. तिन्नेव उत्तराई, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य ।  
एए छन्नक्खत्ता, पणयालमुहत्तसंजोगा ॥
९०. अवसेसा नक्खत्ता, पन्नरस हवंति तीसइ मुहुत्ता ।  
चंदम्मि एस जोगो, णक्खत्ताणं मुणेयव्वो ॥

सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर द्वारा प्रकाशित छोटुभाई सुथार द्वारा लिखित ब्रह्माण्ड दर्शन पुस्तक के १४९वें पेज पर भी प्राचीनकाल के असमान नक्षत्र का उल्लेख है, जो इस प्रकार है:

वेदांग ज्योतिष के बाद भारतियों का दूसरा ज्योतिष ग्रन्थ गर्गसंहिता है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल ई. स. पू. ९००-७०० तक का है। इस ग्रन्थ में वेदांत ज्योतिष की समान नक्षत्र विभाग की रचना के बदले असमान नक्षत्र विभाग की योजना है। यह योजना अयनों का मेल मिलाने हेतु धनिष्ठारम्भ में उत्तरायण लाने हेतु की गई। तत्पश्चात् यह योजना जैन विद्वानों ने भी चालू रखी, किन्तु अयन सरकते रहने के कारण बाद के खगोलशास्त्रियों ने उसे छोड़ दिया।

गर्ग संहिता आज उपलब्ध नहीं है। इसके बाद रचित ग्रन्थों में मुख्यतः सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, अथर्वज्योतिष और पांच सिद्धान्त (पितामह, वशिष्ठ, पोलिश, सौर और रोमक) हैं।

राष्ट्रपति अवॉर्ड द्वारा सम्मानित वैदिक पण्डित सत्यदेव शर्मा द्वारा लिखित सूर्यसिद्धान्त की हिन्दी टीका की प्रस्तावना के पेज नं. (xvi) से (xvii) पर निम्नलिखित उल्लेख है। इसका मूल सिद्धान्तशिरोमणी ग्रन्थ के स्पष्टाधिकार में भास्कराचार्य द्वितीय ने दिखाया है:

लेकिन अभितक इन संस्कारों की ओर ध्यान न देकर पुराने 400 वर्ष पूर्व के बीज संस्कारों का ही उपयोग किया जाता है।

भारत में वैदिक काल में क्रान्तिवृत्त को 28 नक्षत्र भागों में विभक्त किया गया था जो असमान मान के थे। यह बात भास्करादि आचार्यों के ग्रन्थों में प्राप्त होती है। ये मान चन्द्रमा के एक दिन की गति  $13^{\circ} 10' 35''$  तुल्य, इसके अर्धतुल्य तथा इसके डेढ़ गुना तुल्य के थे। तथा शेष मान  $4^{\circ} 14' 15''$  तुल्य अभिजित नक्षत्र का था। लेकिन बाद में इनको समान मान के करके गणनायें अश्विनि नक्षत्र से की जाने लगी जो शायद वैदिक काल में (2000 ई. पू.) कृत्तिका नक्षत्र से क्रान्तिवृत्तारम्भ मानने से आरम्भ हुई तथा वेदाङ्गज्योतिष काल (1350 ई. पू.) तक पूर्ण रूप से स्थापित हो गई, जब नक्षत्र चक्र धनिष्ठा नक्षत्र से आरम्भ होता था।

यहाँ एक सारिणी देते हैं जो श्री मुखर्जी ने बनाई थी। इसमें इन्होंने योग ताराओं के नामकरण की नई पद्धति दी है जो आधुनिक ग्रीक अक्षरों के नामकरण के आसन्न है। यह सारिणी सिद्धान्त ग्रन्थों में दी गई सारिणी से बहुत विस्तृत है। यह कार्य शोधार्थियों के लिए अति महत्वपूर्ण तथा उपयोगी सिद्ध होगा।

सारिणी

Nakshatra	Initial Point (Equal div.)			Initial Point (Unequal div.)			Yogatara-with Nirayana Long. (After Burgess)			As Identified by the author		
	S	0	1	S	0	1	S	0	1			
Asvini	0	0	0	0	0	0	β Arictis	0	10	7	1	Meshasya
Bharani	0	13	20	0	13	11	41 Arietis	0	24	21	3	Meshasya
Krittika	0	26	40	0	19	46	η Tauri	1	0	8	20	Vrishasya
Rohini	1	10	0	1	2	56	α Tauri	1	15	56	1	Vrishasya
Mrigasiras	1	23	20	1	22	42	λ Orionis	1	29	51	11	Mrigasya
Ardra	2	6	40	2	5	53	α Orionis	2	4	54	2	Mrigasya
Punarvasu	2	20	0	2	12	28	β Geminor	2	29	22	1	Mithunasya
Pushya	3	3	20	3	2	14	δ Cancrī	3	14	52	3	Karkatasya
Aslesha	3	16	40	3	15	25	δ Hydrac	3	18	29	2	Hrada-Sarpasya
Magha	4	0	0	3	22	0	α Leonis	4	5	58	1	Simhasya
P.Phalguni	4	13	20	4	5	11	δ Leonis	4	17	27	4	Simhasya
U.Phalguni	4	26	40	4	18	21	β Leonis	4	27	46	2	Simhasya
Hasta	5	10	0	5	8	7	δ Corvi	5	19	36	2	Karkatasya
Chitra	5	23	20	5	21	18	α Virginis	5	29	59	1	Kanyah
Svati	6	6	40	6	4	28	α Bootis	6	0	23		Nishthya
Visakha	6	20	0	6	11	3	α Libra	6	21	14	1	Tulasya
Anuradha	7	3	20	7	0	49	δ Scorpī	7	8	43	5	Vriscikasya
Jyestha	7	16	40	7	14	0	α Scorpī	7	15	54	1	Vriscikasya
Mula	8	0	0	7	20	35	λ Scorpī	8	0	44	2	Vriscikasya
P.Asadha	8	13	20	8	3	46	δ Sagittarii	8	10	43	3	Dhanusah
U.Asadha	8	26	40	8	16	56	α Sagittarii	8	18	32	2	Dhanusah
Abhijit	-----	9		9	6	42	α Lyrac	8	21	27	1	Vinayalu
Sravana	9	10	0	9	10	57	α Aquilac	9	7	55	1	Garudasya
Dhanistha	9	23	20	9	24	7	β Delphini	9	22	29	1	Sravisthasya
Satabhisaj	10	6	40	10	7	18	λ Aquarii	10	17	43	7	Kumbhasya
P.Bhadrapada	10	20	0	10	13	53	α Pegasi	10	29	38	3	Pakshirajasya
U.Bhadrapada	11	3	20	10	27	4	γ Pegasi	11	15	18	1	Dhruvamatuh
Revati	11	16	40	11	16	49	ι Piscium	11	26	1	6	Minasya
Asvini	12	0	0	12	0	0						

इस मामले में ब्रह्माण्ड दर्शन ग्रन्थ के १६१वें पेज पर छोटुभाई सुथार बताते

हैं:

भारत के पुराने विख्यात खगोलशास्त्रियों में भास्कराचार्य काफी प्रसिद्ध हैं। ई. स. १११४ में जन्मे इस विद्वान ने ३६ वर्ष की उम्र में सिद्धान्त शिरोमणी और ६९वें वर्ष में करणकुतूहल नामक ग्रन्थ रचे। सिद्धान्तशिरोमणी में ज्योतिष सिद्धान्त की सभी हकीकतें विस्तार और उपपत्ति से दी गई है। खगोलशास्त्रीय सिद्धान्तशिरोमणी की उत्तम ग्रन्थ के रूप में गणना करते हैं। करणकुतूहल पंचांग बनाने हेतु एक उपयोगी ग्रन्थ है।

भास्कराचार्य ने आकाश के प्रत्यक्ष वेध कम लिए हैं। इसके बाद भी

चन्द्रगणित का तिथिसंस्कार की खोज का उनका कार्य अत्यन्त महत्त्व का माना जाता है।

खगोलशास्त्रियों में भास्कराचार्य वास्तव में भास्कर या सूर्य जैसे थे। उनके बाद उनके जैसा समर्थ शास्त्री कोई नहीं हुआ।

उन्होंने भी विक्रम की सातवीं और आठवीं सदी में हुए प्रसिद्ध खगोलशास्त्री, गणितशास्त्री ब्रह्मगुप्त और वटेश्वराचार्य के ग्रन्थों में से यह जानकारी ली। ब्रह्मगुप्त के बारे में जानकारी सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर से प्रकाशित ब्रह्माण्ड दर्शन पुस्तक में (ले. छोटुभाई सुथार) दी गई है, जो इस प्रकार है।

आर्यभट्ट और वराहमिहिर के बाद हुए प्रख्यात खगोलशास्त्री ब्रह्मगुप्त थे। ब्रह्मगुप्त का जन्म उस समय के उत्तर गुजरात की प्रसिद्ध राजधानी भीमाळ (या श्रीमाळ) में ई. स. ५९६ में हुआ था। उन्होंने खगोलशास्त्र पर दो ग्रन्थ लिखे, (१) ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त, और (२) खण्ड खाद्यक। ये दोनों ग्रन्थ बाद में अरबीभाषा में भाषान्तरित होकर अल सिंह हिंद और अल अर्कन्द के नाम से विख्यात हुए। उन ग्रन्थों के कारण भारतीय खगोल और गणितशास्त्र आरब लोगों द्वारा सम्मानित हुआ। इतना ही नहीं, दूर तुर्किस्तान तक भी इसकी प्रतिष्ठा पहुँची। ब्रह्मगुप्त ने प्रथम ग्रन्थ ३२ वर्ष की उम्र में और दूसरा ग्रन्थ ६९ वर्ष की उम्र में लिखा था।

ब्रह्मगुप्त खगोलशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे। सिद्धान्त शिरोमणी छे. २०६ से २०८ नीचे प्रस्तुत किया गया है।

इदानीं सूक्ष्मनक्षत्रानयनमाह—

स्थूलं कृतं भानयनं यदेतज्ज्योतिर्विदां संव्यवहारहेतोः॥७१॥

सूक्ष्मं प्रवक्ष्येऽथ मुनिप्रणीतं विवाहयात्रादिफलप्रसिद्धयै।

अध्यर्धभोगानि ११८५।५२ षडत्र तज्ज्ञाः।

प्रोचुर्विशाखादितिभध्रुवाणि॥७२॥

षडर्धभोगानि च ३६५। १७ भोगिरुद्र-

वातान्तकेन्द्राधिपवारुणानि।

शेषाण्यतः पञ्चदशैकभोगा-

न्युक्तो भभोगः शशिमध्यभुक्ति ७६०।३५ ॥७३॥

सर्वर्धभोगोनितचक्रलिप्ता वैश्वाग्रतः स्यादभिजिद्धभोगः।

कलीकृतादिष्टखगाद्विशोध्य दास्रादिभोगान् गतभानि विद्यात्॥७४॥

विशुद्धसंख्यानि गतं तु शेषमशुद्धभोगात् पतितं तदेष्ट्यम्।

गतागते षष्टिगुणे विभक्ते ग्रहस्य भुक्त्या घटिका गतैष्या॥७५॥

सूक्ष्म नक्षत्र आनयन—

सूर्य-प्रभा टीका— अभी तक पूर्व में जो नक्षत्र का आनयन करना बताया है वह स्थूल है उसको मात्र लोक व्यवहारार्थ के लिए कहा गया है। अब पुलिश, वशिष्ठ, गर्गादि आचार्यों के अनुसार विवाह, यात्रादि के सम्यक फल सिद्ध्यर्थ के लिए उनके सूक्ष्म आनयन को कहते हैं। विशाखा, पुनर्वसु, रोहिणी और तीनों उत्तरा नक्षत्र अध्यर्ध-भोग संज्ञक हैं। आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाती, भरणी, ज्येष्ठा तथा शतभिषा ये छः नक्षत्र अर्ध-भोग संज्ञक हैं तथा शेष १५ नक्षत्र समान भोग संज्ञक हैं। इनका चंद्र गति ७६०/३५ के तुल्य भोग होता है। चंद्रगति में इसकी अर्ध गति युक्त भोग ११८५।५२ तुल्य वाले नक्षत्र अध्यर्ध संज्ञक हैं। चंद्र गति से अर्धगति के भोग तुल्य नक्षत्र अर्ध भोग संज्ञक हैं। सर्वर्धभोग २१३४६ को चक्र कला २१६०० में से घटाने से प्राप्त शेष तुल्य अभिजित नक्षत्र का भोग २५४।१८ होता है।

ग्रह की कला बनाकर अश्विन्यादि से नक्षत्रों की भुक्त कला को घटाने से जो शुद्ध संख्या घटे वह गत नक्षत्र जाने तथा शेष कला वर्तमान नक्षत्र की कला होती है। जो अशुद्ध नक्षत्र भोग का शेष है वह उसका भोग्य है तथा उसकी ऐष्य संज्ञा है। उस गत तथा ऐष्य कला को ६० से गुणा करके ग्रह गति से विभक्त करने से प्राप्त फल गत तथा ऐष्य घटियाँ होती हैं।

उपपत्ति— इनकी उपपत्ति का आगम ही प्रमाण है। क्योंकि इस प्रकार नक्षत्रानयन पौलिश-रोमक-वसिष्ठ-सूर्य-ब्रह्म सिद्धान्तोक्त प्रकार से कहे गये हैं।

विशेष— वटेश्वराचार्य ने वटेश्वर सिद्धान्त के स्पष्टाधिकार के अध्याय ६ में पूर्णरूप से भास्करोक्त ही कहा है। यथा—

“स्थूलोऽयं स्पष्टोऽसावध्यर्धं समार्धभोगो यः।

तं वचम्यधुनाऽभिजितः स्फुटभोगोऽहं विशेषेण ॥३॥

ब्राह्मोत्तरा विशाखादित्यान्यध्यर्धभोगसंज्ञानि।

वारुण सार्पाद्रानिलयाम्येन्द्रान्यर्धं भोगीनि ॥४॥

समभोगीन्यन्यानि समभोगो मध्यमा गतिः शशिनः।

स्वदलयुताऽध्यर्धाख्यो भागो दलिताहिखण्डमध्यः ॥५॥

भगणाश्चक्राच्छुद्धा भोगोऽभिजितोऽथवेन्दु भगणहताः।

क्षमहाः फलं भहीनं घटिकाद्यो भघ्नशशि भगणाः ॥६॥

वियुक्ताः क्वहाद्गतिघ्ना भगणविभक्ताः विधोः कलादिर्वा।

भगणकला शशिभुक्त्या भजिताः शेषोऽथवा प्रोक्तः ॥७॥

द्युचरो भभोगहीनो गतयेया लिप्तिकाः स्वभुक्तिहताः।

भवति दिवसादिभोगो द्युचराक्रान्तस्य धिष्यस्य ॥८॥”

यहाँ आचार्य ने कुछ विशेष भी कहा है। वटेश्वर ने ब्रह्मगुप्तोक्त कहा है।

ब्रह्मगुप्ताचार्य ने ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त के स्फुट गत्युक्तराध्याय में कहा है कि पौलिश-रोमक-वसिष्ठ-सूर्य तथा ब्रह्म सिद्धान्त में जो नक्षत्रानयन कहे गये हैं वे आर्यभट कथित आनयन नहीं हैं। अतः उन सभी आचार्यों की उक्ति उचित है तथा सूक्ष्मनक्षत्रानयन उन्हीं के अनुसार करना चाहिये। यथा—

“पौलिशरोमकवासिष्ठसौरपैतामहेषु प्रोक्तम्।

तन्नक्षत्रानयनं नार्यभटोक्तं तदुक्तिरतः ॥४६॥”

आगे के श्लोक में भास्करोक्त तथा वटेश्वरोक्त ही कहा है। यथा—

“अध्यर्धानि भवन्ति षड्नक्षत्राण्युद्भूषडर्धानि।

पञ्चदश समक्षेत्राण्यभिजिद् भोगो भवत्येकः ॥४७॥

केशादित्य विशाखा प्रोष्ठपदार्यम्णवैश्वदेवानि।

षड् षड् ज्येष्ठा भरणी स्वात्याद्रावारुणाश्लेषाः ॥४८॥

पञ्चदशात्रानुक्तान्येकोऽभिजिदुक्त ऋक्षभोऽन्यः।

सस्मान्नक्षत्रं दुरधिगमं मन्दबुद्धीनाम् ॥४९॥

अध्यर्धार्धसमक्षेत्राणं मध्यगति लिप्तिकाः शशिनः।  
 अध्यर्धार्धैकगुणा भभोगलिप्तास्तदैक्योनाः ॥५०॥  
 मण्डललिप्ताः शेषोऽभिजितो भोगः शशाङ्कभगणा वा।  
 त्रिघनगुणाः संशोध्याः कल्पदिनेभ्यो यदवशेषम् ॥५१॥  
 तदभगणैर्दिनभोगोऽभिजितो भोगो भभोगलिप्तोनाः।  
 भानिग्रहभुक्तकला गतगम्या गतिहता दिवसाः ॥५२॥”

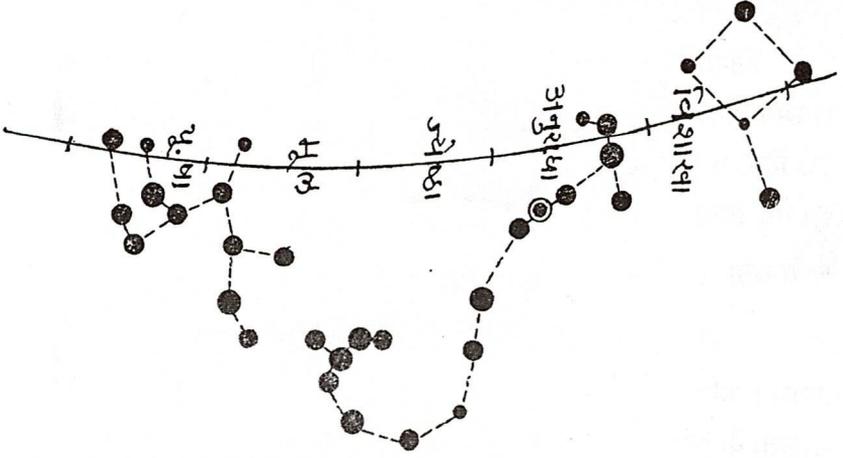
जबकि यूरोपीय खगोलशास्त्र में सभी नक्षत्रों का विस्तार समान माना गया है, अतः यह प्राचीन मत से विरोधी है। ऐसा क्यों हुआ, इसका कोई ठोस कारण जानने को नहीं मिलता।

इसमें गणित की सुविधा के अतिरिक्त और कोई कारण दिखाई नहीं देता। सत्यदेव शर्मा की सूर्य सिद्धान्त पुस्तक की प्रस्तावना में (XX) पेज पर भी यह चीज दी गई है।

बाद में संहिताओं में अनेकत्र चन्द्रमा और नक्षत्रों के परस्पर सम्बन्ध की एक वैवाहिक बन्धन के रूप में कल्पना की गई है। काठक तथा तैत्तिरीय संहिताओं में स्पष्ट रूप में कहा है कि सोम सभी नक्षत्रों के साथ विवाहित होने पर भी केवल 'रोहिणी' के साथ रहने से अन्य नक्षत्रों के रुष्ट हो जाने से वे सभी के साथ बराबर अवधियों तक रहने लगे। इससे यह भी अर्थ लगाया जा सकता है कि नक्षत्रों का विस्तार तब से बराबर माना जाता था। दोनों ही इन संहिताओं में वर्णित इस कथा में नक्षत्रों की संख्या 33 (तैत्ति.)

फलितार्थ इतना ही है, कि सम, सार्ध, अर्ध और शेष - ये विभाग करके ही नक्षत्रों का सूर्य, चन्द्र और ग्रहों के साथ के योग आयोजित होने चाहिए। इस मामले में विद्वानों को विचार विमर्श करना चाहिए।

इस सन्दर्भ में छोटुभाई सुथार अपनी पुस्तक ब्रह्माण्डदर्शन के पेज नं. १८० पर विभागात्मक और तारात्मक, दो प्रकार की नक्षत्र व्यवस्था दिखाते हैं। इससे स्पष्ट होता है, कि प्राचीन काल तारात्मक नक्षत्रों का ही था।



पंचांग में दिए नक्षत्र विभागात्मक नक्षत्र हैं। ये सब रविमार्ग का विभाग दर्शाते हैं। इन विभागों के पास आए तारा-झुमका वाले नक्षत्रों को तारात्मक नक्षत्र कहा है। आकाश दर्शन या तारा परिचय करते समय इन तारात्मक नक्षत्रों का उल्लेख किया जाता है। इसके साथ तारात्मक और विभागात्मक नक्षत्रों की समझ देने वाली आकृति दी गई है जिससे इन दोनों का भेद स्पष्ट हो जाएगा। पाठक देखेंगे कि विभागात्मक नक्षत्र एक-सरीखे अन्तर में आए हुए हैं, जबकि तारात्मक नक्षत्र इस प्रकार नहीं हैं। सामान्य व्यक्ति तारात्मक नक्षत्र की मदद से चन्द्र कौनसे नक्षत्र में है, यह बता सकता है।

इसके उपरान्त इतना तय है, कि समक्षेत्री, सार्धक्षेत्री, अर्धक्षेत्री - ये सिद्धान्त हैं, इनमें बदलाव बिलकुल नहीं होगा। हाँ ! पहले बताए अनुसार गणितीय भूमिका में फिर भी प्रत्यक्ष के साथ मेल करने हेतु संस्कार किया जा सकता है।

## नक्षत्र का चन्द्र के योग के साथ संस्कार

जिनमतानुसार नक्षत्र मास २७.३१३ दिन = २७ दिन, ७ घण्टे ३१ मिनट लगभग होता है, और आधुनिक खगोलशास्त्र के अनुसार २७.३२१६६१ दिन = २७ दिन, ७ घण्टे ४३ मिनट दिखाया है। मतलब एक नक्षत्र मास पर १२ मिनट का भेद आता है।

**सम्भावना** (१) वर्तमान खगोलशास्त्र का प्रतिपादन स्थूल हो सकता है,

(२) जिनमत में दिखाया गया गणित स्थूल हो सकता है।

**उपाय :** यदि जिनमत में दिखाया गया गणित स्थूल मानें, तो (१) गणित की सरलता के लिए हर महीने **अभिजित का माप १२ मिनट** बढ़ाएँ, (२) १२ मिनट को २७ नक्षत्रों में विभाजित करें, तो प्रत्येक नक्षत्र को २६.६ सेकिण्ड मिलेंगे, किन्तु उसे समक्षेत्री, सार्धक्षेत्री और अर्धक्षेत्री में विभाजित करने पर समक्षेत्री में २६.६ सेकिण्ड, अर्धक्षेत्री में १३.३ सेकिण्ड और सार्धक्षेत्री में ३९.९ सेकिण्ड का संस्कार जोड़ना पड़े। यह विचारणा मात्र है, गीतार्थ महापुरुष इस पर विचार करके मार्गदर्शन दे सकते हैं ताकि समक्षेत्री, अर्धक्षेत्री और सार्धक्षेत्री का सिद्धान्त भी अनुसरित हो और वर्तमान के साथ एक महीने का गणित भी मेल खाए।

→ **संस्कार सहित और संस्कार बिना के सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र के १ वर्ष का गणित समझने हेतु पेज न. ८२ से १३१ पर आगे दिया गया है।**

### (३) सायन-निरयन बिन्दु की सत्यता :

सायन-निरयन पद्धति की सत्यासत्य की विचारणा करने से पूर्व जैन शास्त्रों में आने वाले सिद्धान्त याद कर लेते हैं। सूर्य और चन्द्र की मेरू का फेरा लगाने वाली (१) पूर्व-पश्चिम गति, और (२) उत्तर-दक्षिण गति - इन दो गतियों का उल्लेख इस विषय के सभी प्रतिपादक ग्रन्थों में प्राप्त होता है। सूर्य-चन्द्र की इन दो गतियों का क्रमशः कार्य (१) नक्षत्रों के साथ योग करना, और (२) उत्तरायण-दक्षिणायन का तथा ऋतुओं का निर्णय करने का है। यह सिद्धान्त (निश्चय) है, इसमें कभी भी परिवर्तन सम्भव नहीं है। किन्तु अब बात आती है गणित की (व्यवहार की)। सूर्य की इन दोनों गतियों का माप शास्त्रों में ३६६ दिन का माना है। यूरोपीय खगोलशास्त्र / प्रत्यक्ष आकाश इन दोनों गतियों के माप को ३६६ से अति-निकट का, किन्तु थोड़ा अलग मानता है। उनके मतानुसार (१) सूर्य-चन्द्र की पूर्व-पश्चिम गति ३६५.२५६३६४ दिन = ३६५ दिन, ६ घण्टे, ९ मिनट और ९.८४९६ सेकिण्ड है, (२) जबकि उत्तर-दक्षिण गति ३६५.२४२१९ दिन = ३६५ दिन, ५ घण्टे, ४८ मिनट और ४५.२१६ सेकिण्ड है। इन दोनों गतियों का माप में भी आनुपातिक सामान्य रूप से घट-बढ़ हो सकती है, वे ऐसा भी मानते हैं। बस ये दो भिन्न गतियाँ ही सायन और निरयन है। वैज्ञानिक परिभाषा में उसे Sun का Sidereal और Tropical वर्ष माना गया है। इन दोनों के बीच ०.०१४१७४ दिन = २० मिनट, २४.६३३६ सेकिण्ड का फर्क हर वर्ष रहता है। जिसे यूरोपीय खगोल की परिभाषा में लगभग ५०.२ विकला का फर्क कहा गया है। हालाँकि सर्वज्ञता के अभाव में ये दोनों माप यूरोपीय विद्वान भी सम्पूर्ण रूप से निश्चित नहीं कर पाए। भिन्न-भिन्न विद्वान इनका माप कुछ अलग मानते हैं, अतः सायन और निरयन वर्ष के बीच का अन्तर भी सतत बदलेगा। थोड़े वर्ष पूर्व इस माप ३३ विकला माना जाता था। पिछले कुछ वर्षों में यह माप संस्कारित होकर ४७ विकला से ५२ विकला के बीच माना जाता है। अभी इस माप को ५०.२ विकला तय किया गया है, फिर भी भिन्न-भिन्न विद्वान अयनांशों को अलग-अलग मानते

१. ऋतुओंके निर्णय सूर्य के उत्तरायण-दक्षिणायन से होता है ।

२. यही पुस्तकके page No. 106, Page No.131 को देखने से स्पष्ट बनेगा ।।

हैं, जिसकी जानकारी नीचे दिए गए अनुसार है :

(१) Topic (विषय):

Tropical and sidereal systems (निरयन तथा सायन पद्धति में)  
Tropical (western) system + -yanamsa = sidereal system  
निरयन (पाश्चात्य) पद्धति + अयनांश = सायन पद्धति।

तारीख २०/१२/२०१७ को सुबह ९ बजकर १५ मिनट पर विभिन्न विद्वानों द्वारा लिए गए अयनांश मूल्य की जानकारी इस प्रकार है :

Sr.	Name of Ayanamsa giver	Value	Additional Information if any
1.	Traditional Lahiri	24°06' 28.98"	Prof.N.C.Lahiri Commission was set up by Govt. of India to adopt one calender.
2.	True Lahiri/	24°05' 31.73"	Star named spica has been taken in chitrapaksha the middle of chitra asterism always.
3.	Pushya - Paksha	22°58' 23.57"	Sh. PVR Narasimha Rao, Aniitan, Now retted in Borton, U.S.A
4.	Raman	22°39' 43.26"	Dr. B.V. Raman, who revived vedic astrology in India and abroad.
5.	Krishanamoorthy	24°00' 41.28"	A great Scholar, Who developed his (KP) own new system in Astrology
6.	Jagannatha रिलश्रश	24°06' 24.53"	Lord jagnnath Temple Puri, In Which star named Spica has been taken in the middle of chitra asterism always but fixed solar

			rotation plane taken.
7.	Rohini - Paksha	23°22' 25.50"	Fixed star named Aldebaran has been taken in the middle of Rohini asterism always.
8.	Sri Surya Siddhanta	22°46' 48.67"	A great scholar, who developed planetary analytical model used by ancient Indian astrologer. Drik Siddhanta is planetary positions observed by modern planetarium.
9.	Deva - datta	23°43' 51.98"	-
10.	usha - sharhi	20°18' 30.74"	-
11.	Yukteshwar	22°43' 47.28"	-
12.	J.N Bharin	23°00' 47.28"	-
13.	chandra Hari	24°50' 00.15"	-
14.	Fagan	24°59' 29.07"	-
15.	Deluce	28°03' 38.26"	-
16.	Diwhal khul	28°36' 38.43"	-
17.	Aldebaranat 15° Taururoo'	25°00' 37.53"	-
18.	Gala	27°06' 14.21"	-
19.	Hipparchor	20°29' 55.64"	-
20.	Sassanian	20°14' 38.25"	-

प्राचीन वैदिक काल में ये दोनों माप ३६६ दिन के ही स्वीकार किए गए होंगे। हो सकता है, कि गणित की सरलता हेतु यह व्यवस्था हुई हो। सूर्य की दो प्रकार की गतियाँ जिनमत को मान्य ही हैं, इसलिए शायद ऐसा हुआ हो कि स्थूल गणित से यह माप ३६६ दिखाया हो और विद्वान महापुरुषों के पास इसका आमनाय पूर्वकाल में रहा होगा, लेकिन कदाचित् इस परम्परा के ज्ञान का वर्तमान में कोई जानकार ही न हो। दूसरी ओर आकाश का निरीक्षण करने से स्पष्ट दिखता ही है कि

पूर्व के काल की भाँति अभी सूर्य का उत्तरायण मकर संक्रान्ति में और दक्षिणायन कर्क संक्रान्ति में होता ही नहीं। हमारे जैसे लोग भी आकाश के निरीक्षण से या अपनी परछाई की दिशा से अभी उत्तरायण है या दक्षिणायन, इसका निर्णय कर सकते हैं। इसलिए ऐसा मानना होगा कि गणित की सरलता हेतु वैदिक या जैन शास्त्रों में ३६६ दिनों की व्यवस्था स्थूल रूप से दिखाई गई होगी। तो प्रश्न यह होता है, कि आकाश शास्त्रपाठ के अनुसार नहीं है या फिर हमारी समझ में कुछ कमी है? इस पर विचार करना है। शास्त्र कभी भी गलत हो ही नहीं सकते, पर कमी हमारी समझ में ही है। इसका समाधान देने से पहले कुछ बातें समझ लेते हैं।

(a) असत् कल्पना से x व्यक्ति (१) अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर की ओर सरकते-सरकते, तथा (२) वर्तुलाकार, दोनों तरीकों से घूमता है। वर्तुलाकार घूमते हुए १ से १० मिनट लगते हैं, अर्थात् जिस बिन्दु से घूमना प्रारम्भ किया, उसी बिन्दु पर पहुँचते हुए १० मिनट लगते हैं, किन्तु अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर घूमते हुए १ से ९ मिनट ही लगते हैं।

इस प्रकार	गोल घूमने में	अन्दर-बाहर घूमने में	भेद
1 <sup>st</sup> Round	१ से १० मिनट	१ से ९	१ मिनट का भेद
2 <sup>nd</sup> Round	११ से २० मिनट	१० से १८	२ मिनट का भेद
3 <sup>rd</sup> Round	२१ से ३० मिनट	१९ से २७	३ मिनट का भेद
4 <sup>th</sup> Round	३१ से ४० मिनट	२८ से ३६	४ मिनट का भेद
5 <sup>th</sup> Round	४१ से ५० मिनट	३७ से ४५	५ मिनट का भेद
6 <sup>th</sup> Round	५१ से ६० मिनट	४६ से ५४	६ मिनट का भेद
7 <sup>th</sup> Round	६१ से ७० मिनट	५५ से ६३	७ मिनट का भेद
8 <sup>th</sup> Round	७१ से ८० मिनट	६४ से ७२	८ मिनट का भेद
9 <sup>th</sup> Round	८१ से ९० मिनट	७३ से ८१	९ मिनट का भेद
10 <sup>th</sup> Round	-	८२ से ९०	१० मिनट का भेद
11 <sup>th</sup> Round	१ से १० मिनट	१ से ९	दोनों एकत्र हुए

इसी प्रकार सूर्य की भी दोनों गतियाँ भिन्न होने के कारण दोनों Round अलग-अलग समय पर पूर्ण होने के कारण अवकाशीय रचना हर वर्ष बदलती है, इस कारण सायन-निरयन दो भेद होते हैं। पहले बताया उसके अनुसार हर वर्ष यह भेद प्रायः ५०.२ विकला, लगभग २० मिनट के आस-पास होता है।

यहाँ यह बात याद रखनी है, कि दोनों गतियों के (सायन-निरयन) भेद के कारण वर्षों पूर्व २१/२२ दिसम्बर को ही सूर्य का उत्तरायण और मकर संक्रान्ति आती रही होगी, किन्तु अभी २१/२२ दिसम्बर को सूर्य का उत्तरायण शुरू हो ही जाता है। किन्तु कवि दलपतराम के समय में मकर संक्रान्ति १३ जनवरी को आती थी, फिर १४ जनवरी को आने लगी और पिछले दो-तीन वर्षों से १५ जनवरी को आने की शुरुआत हुई है। भविष्य के कुछ वर्ष बीतने के बाद क्रमशः १६, १७, १८ जनवरी को आने लगेगी। लगभग २५००० से २९००० वर्ष बाद यह बढ़ते-बढ़ते २१/२२ दिसम्बर वापिस आएगी। उस समय सायन-निरयन का भेद शून्य हो जाएगा।

ऋतुएँ सूर्य के नक्षत्र के साथ योग से नहीं, किन्तु सूर्य के उत्तरायण-दक्षिणायन से गिननी चाहिए, इसलिए चौमासा आगे-पीछे होने का प्रश्न ही नहीं रहता। उपरान्त, चन्द्रऋतु, कर्मऋतु और सूर्यऋतु में से वर्तमान में शास्त्रों में ऋतु की गिनती सूर्यऋतु के अनुसार ही होती है। ऐसा पाठ सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका में भी मिलता है।

सू. ५७ की टीका: छप्पि उऊपरियड्ढ। एसो संवच्छरो उआइच्चो।

अब, हिन्दूग्रन्थ जैसे वेदांग ज्योतिष या महाभारत में, और हमारे सूर्यप्रज्ञप्ति आदि ग्रन्थों में सूर्य के उत्तरायण-दक्षिणायन का जो समय मिलता है, उसका Chart नीचे दिए अनुसार है। इसका उल्लेख ध ओरायन पुस्तक के P. No. 31 पर है। देखिए पिछले पृष्ठ पर दिया गया Chart.

यहाँ याद रहे, कि यह Chart सभी नक्षत्रों को समक्षेत्री मानते हुए तैयार हुआ है, किन्तु इसे शास्त्रीय व्यवस्था के अनुसार सम, सार्ध और अर्धक्षेत्री मानकर

नीचे बताई गई तालिका नक्षत्रों में से गुजरने वाले रविमार्ग के चार महत्वपूर्ण बिन्दु, वसन्तसंपात, दक्षिणायन, शरदसंपात और उत्तरायण की अलग-अलग युग में स्थान बताती है:

चित्र क्रमांक	युग	वसन्तसंपात	दक्षिणायन	शरदसंपात	उत्तरायण
चित्र १	६००० वर्ष ई.पू.	पुनर्वसु	हस्त	पूर्वाषाढ़ा	उत्तरा भाद्रपदा
चित्र २	५००० वर्ष ई.पू.	आर्द्रा	उत्तरा फाल्गुनी	मूल	पूर्वा भाद्रपदा
चित्र ३	४००० वर्ष ई.पू.	मृग	पूर्वा फाल्गुनी	ज्येष्ठा	शततारका
चित्र ४	३२०० वर्ष ई.पू.	रोहिणी	मघा	अनुराधा	धनिष्ठा
चित्र ५	२८०० वर्ष ई.पू.	कृत्तिका	आश्लेषा	विशाखा	श्रवण
चित्र ६	१४०० वर्ष ई.पू.	भरणी	पुष्य	स्वाति	उत्तराषाढ़ा
चित्र ७	५०० वर्ष ई.स.	अश्विनी	पुनर्वसु	चित्रा	पूर्वाषाढ़ा
चित्र ८	२००० वर्ष ई.स.	रेवती	आर्द्रा	हस्त	मूल

बाँटें तो नक्षत्रों के उत्तरायण-दक्षिणायन के स्थान थोड़े आगे-पीछे होंगे। क्रम नम्बर ६ और ७ के बीच, अर्थात् ई. पू. २०० से ५०० के बीच के समयकाल में उत्तरायण-दक्षिणायन के जो बिन्दु दिखाए गए हैं, वे सूर्यप्रज्ञप्ति आदि ग्रन्थों के साथ १००% मेल खाते हैं। इससे सिद्ध होता है, कि सूर्यप्रज्ञप्ति आदि ग्रन्थों में जो उत्तरायण-दक्षिणायन के नक्षत्र बताए हैं, वे कोई एक निश्चित समय के नक्षत्र, चाहे (a) पांचवें आरे की शुरुआत के हो, या (b) सूर्यप्रज्ञप्ति ग्रन्थ की रचना के समय के हो, या (c) प्रभु के निर्वाण सम्वत् के हो, आदि। किन्तु त्रैकालिक ये ही नक्षत्र रहते हैं, ऐसी मान्यता कष, छेद, ताप आदि परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होती। भिन्न-भिन्न अयन बिन्दुओं का सम, सार्ध और अर्धक्षेत्री मान्यतानुसार गणित किया जाए, तो प्राचीन जैन खगोल/ज्योतिष ग्रन्थों में बताए अनुसार उत्तरायण-दक्षिणायन का अवकाश नीचे के समय के हिसाब से होगा:

१	वी.सं. २६५वां वर्ष	आज से २२७९ वर्ष पूर्व	४८.७ विकला भेद मानें तो
२	वी.सं. २३२वां वर्ष	आज से २३१२.५ वर्ष पूर्व	४८ विकला भेद मानें तो
३	वी.सं. २७९वां वर्ष	आज से २२६५.३ वर्ष पूर्व	४९ विकला भेद मानें तो
४	वी.सं. ३२४वां वर्ष	आज से २२२० वर्ष पूर्व	५० विकला भेद मानें तो
५	वी.सं. ३६८वां वर्ष	आज से २१७६ वर्ष पूर्व	५१ विकला भेद मानें तो
६	वी.सं. ४१०वां वर्ष	आज से २१३४ वर्ष पूर्व	५२ विकला भेद मानें तो
७	वी.सं. ४था वर्ष	आज से २५४० वर्ष पूर्व	४३.७ विकला भेद मानें तो

सूर्यप्रज्ञप्ति पर पू. भद्रबाहुस्वामी जी की निर्युक्ति थी, यानि कि सूर्यप्रज्ञप्ति का समय उससे भी अधिक प्राचीन है। पू. भद्रबाहुस्वामी वी. सं. १७०वें वर्ष में देवलोक हुए। अतः सूर्यप्रज्ञप्ति उससे पहले का है, इसलिए लगभग पांचवें आरे के प्रारम्भ के अवकाश का निरूपण उसमें होगा, ऐसा क्यों नहीं मान सकते ?

Jain Astronomy पुस्तक के पेज नं. ६ पर ऐसी जानकारी मिलती है, जो यहाँ दिखाई गई है :

So in the light of foregoing discussion. It seems plausible that the present recension of Jaina canon may in a broader sense be assigned to fifth/sixth century A.D. But the Jaina canon, as Pingree<sup>12</sup> also opines, contains much that surely belongs to a far older period than the early sixth century A.D. Sūrya Prajñapti, one of the principal sources of Jaina astronomy, is also believed to have been written a few years before Christian era.<sup>15</sup> According to Srinivasiengar, Sūrya Prajñapti and Jambūdvīpa Prajñapti belong to a period of about 500 B.C. and Sthānāṅga, Uttarādhyayana, Bhagavati and Anuyogadvāra to about 300 B.C.<sup>16</sup> According to some others,<sup>18</sup> Bhagavati, Uttarādhyayana and Anuyogadvāra belong to about first century B.C. : Samavāyāṅga to about fourth century B.C. and Prajñāpana to about second century B.C. According to H.P. Bhatt,<sup>17</sup> Sūrya Prajñapti belongs to 400 B.C. and Candra Prajñapti to 200 B.C. According to K.S. Raghavan,<sup>17</sup> Sūrya Prajñapti was probably written in about 528 B.C.

अब दोनों गतियाँ भिन्न हैं, और सम, सार्ध, अर्ध और शेष - इन्हीं विभागों में अधिक बाँटना है, तो सूर्यनक्षत्र विषय में यूरोपीय खगोल और शास्त्रीय गणित का मेल करने हेतु उसमें क्या संस्कार करें ?

उत्तर : ३६६ दिन में से नक्षत्र के साथ हुए सूर्य के योगों का कुल वर्ष ३६५.२५६ दिन (आधुनिक) घटाएँ।

- जो संख्या आए उसे सम, सार्ध और अर्ध के माप में विभाजित करके उस माप को सूर्य नक्षत्र के पीरियड में से घटाएँ।

उदाहरण :

- ३६६.०००००००० दिन शास्त्रों में दिखाया गया सूर्य वर्ष का व्यवहारिक माप
- ३६५.२५६३७६०३७ दिन आधुनिक खगोल के अनुसार सूर्य वर्ष का नक्षत्र के योगों के साथ का माप

---


$$= ०.७४३६२३९६३ \text{ दिन का अन्तर} = १७ \text{ घ. } ५० \text{ मि. } ४९.११०३६ \text{ से.}$$

इस भेद को सम, सार्ध, अर्ध और शेष इन चार विभागों में बाँटने से (१) समक्षेत्री नक्षत्र के १३ दि. ९ घ. ३६ मि. के माप में से लगभग ३९ मि. कम होते

हैं। (२) सार्धक्षेत्री नक्षत्र के २० दि. २ घ. २४ मि. के माप में से लगभग ५८ मि. कम होते हैं। (३) अर्धक्षेत्री नक्षत्र के ६ दि. १६ घ. ४८ मि. के माप में से लगभग १९ मि. कम होते हैं, और (४) शेष (अभिजित) नक्षत्र के ४ दि. ४ घ. ४८ मि. के माप में से लगभग १२ मि. कम होते हैं।

आज के समय में भी मुहूर्त हेतु नीचे दिए गए स्थानों पर नक्षत्र का उपयोग होता है, और यदि यह सूर्यप्रज्ञप्ति आदि आगमशास्त्रों में दिखाए गए नक्षत्र के समान माप के आधार पर लिया जाए तो ही यह शास्त्रोक्त कहा जा सकता है। प्रचलित किन्तु अशास्त्रीय परम्परा से नक्षत्र का मुहूर्त से सम्बन्धित उपयोग फलदायी न बनकर कदाचित् हानिकारक भी साबित हो सकता है।

**१. विद्यारम्भ :** इसमें अभ्यास का आरम्भ निश्चित नक्षत्र में करने से विशिष्ट फलदायी बनता है, वे नक्षत्र क्रमशः अश्विनी, मृगशीर्ष, पुष्य, ३ पूर्वा, हस्त, चित्रा, मूल, श्रवण, घनिष्ठा, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा और पुनर्वसु हैं। उसमें प्रथम ११ समक्षेत्री, बाद के ३ अर्धक्षेत्री और अन्तिम १ सार्धक्षेत्री, इस प्रकार कुल १५ नक्षत्र विद्यारम्भ के लिए हैं। अब प्रश्न होता है, कि लौकिक पंचांग के अनुसार उपरोक्त १५ नक्षत्र समक्षेत्री, अर्थात् प्रायः २४ घण्टे के हैं, जबकि शास्त्रीय गणितानुसार अमुक नक्षत्र प्रायः १२ घण्टे के, अमुक नक्षत्र प्रायः २४ घण्टे के और अमुक नक्षत्र प्रायः ३६ घण्टे के हैं। इसलिए लौकिक परम्परा वाले समक्षेत्री भी १) लोकोत्तर परम्परा के अर्धक्षेत्री नक्षत्रों में शुरू होने वाला अभ्यास शास्त्रीय परम्परा का लोप करवाने, अर्थात् फलवंचक होगा, क्योंकि वास्तविकता में नक्षत्र-चन्द्र का योग पूर्ण हो चुका है। २) लोकोत्तर परम्परा के सार्धक्षेत्री नक्षत्रों को समक्षेत्री मानके शुरू होने वाला अभ्यास ज्ञान का अन्तराय कर्म बाँधेगा, क्योंकि लौकिक परम्परा से नक्षत्र समाप्त होने से हमने अभ्यास का प्रारम्भ रोक दिया, जबकि तात्त्विक दृष्टि से अभी भी योग चालू है। विद्यारम्भ हेतु संयोग सानुकूल होने पर भी अभ्यास आरम्भ न किया जाए या रोका जाए तो ज्ञान का अन्तराय बाँधेगा ही न?

बस इसी प्रकार अनेक स्थानों पर नक्षत्र गणित में शास्त्रीय दृष्टिकोण का भंग

होता है, जो नीचे लिखे अनुसार है:

२. लोचमें, ३. दीक्षा में, ४. पदवी में, ५. प्रतिष्ठा में, अंजन में ६. विहार आदि में

- इसके उपरान्त प्रभु के कल्याणकों की आराधना में भी नक्षत्र महत्त्वपूर्ण है, उनके पाठ कल्पसूत्र आदि में से सहजता से प्राप्त होते हैं।

- कालधर्म के बाद की मरणोत्तर क्रिया में भी नक्षत्र का योगदान महत्त्वपूर्ण साबित होता है।

- भक्ष्याभक्ष्य विषय के आचरण में भी नक्षत्र का योगदान है।

जैसे, सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आए और आम का त्याग, ये दोनों जुड़ी हुई भूमिकाएँ हैं।

अब सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र का प्रारम्भ जैनशास्त्रों के अनुसार मिथुन राशि की ५ कला ५३ अंश से होता है, जबकि आधुनिक परम्परा के अनुसार आर्द्रा नक्षत्र का प्रारम्भ मिथुन राशि की ६ कला ४० अंश से होता है, अर्थात् लगभग ४७ अंश (डिग्री) का भेद आता है, यानि लगभग १ दिन का भेद पड़ता है। इस प्रकार वर्तमान में आर्द्रा नक्षत्र जिस समय बैठता है, वास्तव में आर्द्रा नक्षत्र उससे १ दिन पहले ही बैठ जाता है। और शास्त्रों के अनुसार आर्द्रा अर्धक्षेत्री होने के कारण लगभग ७ दिन पहले पूरा भी हो जाता है। अतः जहाँ सूर्य नक्षत्र की गणना हो वहाँ सभी जगह दिनों में भेद आता है, और जहाँ चन्द्र नक्षत्र की गणना हो वहाँ घण्टों में भेद आता है। इस प्रकार आराधना की शुद्धि हेतु जैन नक्षत्रगणितका स्वीकार करना अत्यन्त आवश्यक लगता है।

इस सन्दर्भ में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु इच्छुक व्यक्ति हमारा सम्पर्क कर सकते हैं। फिर से बता दें, कि यह सब मात्र सत्य के करीब पहुँचने के लिए विचारणा स्वरूप है, निर्णय स्वरूप नहीं। इस प्रकार जैनागमों के शास्त्रपाठ और वर्तमान खगोल, दोनों का समन्वय सध जाता है। इस मामले में गीतार्थ महापुरुषों को खूब गम्भीरता से विचार करना चाहिए। छद्मस्थ अवस्था के कारण कुछ भी जिनाज्ञा विरुद्ध लिखा गया हो, तो इस हेतु मिच्छामि दुक्कडम्। गीतार्थ संविग्र महापुरुष इस सन्दर्भ में ध्यान आकर्षित करके मुझे उपकृत करें, ऐसी नम्र विनती।

शास्त्रपाठ के अनुसार एक वर्ष का चन्द्र-सूर्य का नक्षत्र का गणित (संस्कार रहित)

नोट: अन्त समय में सूर्योदय प्लस करने से योग्य समय मिलेगा, तारीख वार समझने के लिये है। इ.स. १९०० का यह पंचांग नहीं है।

No.	Date	Weekday	Moon Nakashatr a 1	End Time	Moon Nakashatr a 2	End Time	Sun Nakashatr a	End Time	Remark
1	01-01-1900	Monday	ABHIJIT	07:31:20.280					सूर्य दक्षिणायन शरु- 00:00:00.0000000
2	02-01-1900	Tuesday	SHRAVAN	07:31:20.280					
3	03-01-1900	Wednesda y	DHANISHT HA	07:31:20.280	SHATBHIS HA	19:31:20.280			
4	04-01-1900	Thursday	P. BHADRAP ADA	19:31:20.280					
5	05-01-1900	Friday							
6	06-01-1900	Saturday	U. BHADRAP ADA	07:31:20.280					
7	07-01-1900	Sunday	REVTI	07:31:20.280					
8	08-01-1900	Monday	ASHWINI	07:31:20.280	BHARNI	19:31:20.280			
9	09-01-1900	Tuesday	KRUTIKA	19:31:20.280			PUSHYA	19:12:00.000	
10	10-01-1900	Wednesda							
11	11-01-1900	Thursday	ROHINI	07:31:20.280					

12	12-01-1900	Friday	MRUGSHI RSH	07:31:20.280	ADRA	19:31:20.280		
13	13-01-1900	Saturday						
14	14-01-1900	Sunday	PUNARVA SU	07:31:20.280				
15	15-01-1900	Monday	PUSHYA	07:31:20.280	ASHLESHA	19:31:20.280		
16	16-01-1900	Tuesday	MAGHA	19:31:20.280			ASHLESHA	12:00:00.000
17	17-01-1900	Wednesda y	P.FALGUN I	19:31:20.280				
18	18-01-1900	Thursday						
19	19-01-1900	Friday	U.FALGUN I	07:31:20.280				
20	20-01-1900	Saturday	HASTA	07:31:20.280				
21	21-01-1900	Sunday	CHITRA	07:31:20.280	SWATI	19:31:20.280		
22	22-01-1900	Monday						
23	23-01-1900	Tuesday	VISHAKHA	07:31:20.280				
24	24-01-1900	Wednesda y	ANURADHI A	07:31:20.280	JYESHTHA	19:31:20.280		
25	25-01-1900	Thursday	MOOL	19:31:20.280				
26	26-01-1900	Friday	P. SHADHA	19:31:20.280				

27	27-01-1900	Saturday	U.		07:31:20.280	ABHIJIT	15:02:40.560			
28	28-01-1900	Sunday	SHADHA							
29	29-01-1900	Monday	SHRAVAN		15:02:40.560					
30	30-01-1900	Tuesday	DHANISHT		15:02:40.560			MAGHA	21:36:00.000	
31	31-01-1900	Wednesda Y	HA							
32	01-02-1900	Thursday	SHATBHIS HA		03:02:40.560					
33	02-02-1900	Friday	P. BHADRAP ADA		03:02:40.560					
34	03-02-1900	Saturday	U. BHADRAP ADA		15:02:40.560					
35	04-02-1900	Sunday	REVTI		15:02:40.560					
36	05-02-1900	Monday	ASHWINI		15:02:40.560					
37	06-02-1900	Tuesday	BHARNI		03:02:40.560					
38	07-02-1900	Wednesda	KRUTIKA		03:02:40.560					
39	08-02-1900	Thursday	ROHINI		15:02:40.560					
40	09-02-1900	Friday	MRUGSHI RSH		15:02:40.560					
41	10-02-1900	Saturday	ADRA		03:02:40.560					
			PUNARVA SU		15:02:40.560					

42	11-02-1900	Sunday	PUSHYA	15:02:40.560						
43	12-02-1900	Monday	ASHLESHA	03:02:40.560			P.FALGUN		07:12:00.000	
44	13-02-1900	Tuesday	MAGHA	03:02:40.560						
45	14-02-1900	Wednesda y	P.FALGUN	03:02:40.560						
46	15-02-1900	Thursday	U.FALGUN	15:02:40.560						
47	16-02-1900	Friday	HASTA	15:02:40.560						
48	17-02-1900	Saturday	CHITRA	15:02:40.560						
49	18-02-1900	Sunday	SWATI	03:02:40.560						
50	19-02-1900	Monday	VISHAKHA	15:02:40.560						
51	20-02-1900	Tuesday	ANURADH A	15:02:40.560						
52	21-02-1900	Wednesday	JYESHTHA	03:02:40.560						
53	22-02-1900	Thursday	MOOL	03:02:40.560						
54	23-02-1900	Friday	P. SHADHA	03:02:40.560						
55	24-02-1900	Saturday	U. SHADHA	15:02:40.560	ABHIJIT			22:34:00.840		
56	25-02-1900	Sunday	SHRAVAN	22:34:00.840						



72	13-03-1900	Tuesday	P.FALGUN I	10:34:00.840						
73	14-03-1900	Wednesday	U.FALGUN I	22:34:00.840						
74	15-03-1900	Thursday	HASTA	22:34:00.840						
75	16-03-1900	Friday	CHITRA	22:34:00.840						
76	17-03-1900	Saturday	SWATI	10:34:00.840			HASTA		19:12:00.000	
77	18-03-1900	Sunday	VISHAKHA	22:34:00.840						
78	19-03-1900	Monday	ANURADH A	22:34:00.840						
79	20-03-1900	Tuesday	JYESHTHA	10:34:00.840						
80	21-03-1900	Wednesday	MOOL	10:34:00.840						
81	22-03-1900	Thursday	P. SHADHA	10:34:00.840						
82	23-03-1900	Friday	U. SHADHA	22:34:00.840						
83	24-03-1900	Saturday	ABHIJIT	06:05:21.120						
84	25-03-1900	Sunday	SHRAVAN	06:05:21.120						
85	26-03-1900	Monday	DHANISHT HA	06:05:21.120			SHATBHIS HA	18:05:21.120		
86	27-03-1900	Tuesday	P. BHADRAP ADA	18:05:21.120						



102	12-04-1900	Thursday	HASTA	06:05:21.120				
103	13-04-1900	Friday	CHITRA	06:05:21.120	SWATI	18:05:21.120		
104	14-04-1900	Saturday						
105	15-04-1900	Sunday	VISHAKHA	06:05:21.120				
106	16-04-1900	Monday	ANURADH A	06:05:21.120	JYESHTHA	18:05:21.120		
107	17-04-1900	Tuesday	MOOL	18:05:21.120				
108	18-04-1900	Wednesda Y	P. SHADHA	18:05:21.120				
109	19-04-1900	Thursday						
110	20-04-1900	Friday	U.	06:05:21.120	ABHIJIT	13:36:41.400		
111	21-04-1900	Saturday	SHADHA SHRAVAN	13:36:41.400				
112	22-04-1900	Sunday	DHANISHT HA	13:36:41.400				
113	23-04-1900	Monday	SHATBHS HA	01:36:41.400				
114	24-04-1900	Tuesday	P. BHADRAP ADA	01:36:41.400				
115	25-04-1900	Wednesda Y	U. BHADRAP ADA	13:36:41.400				
116	26-04-1900	Thursday	REVTI	13:36:41.400				

117	27-04-1900	Friday	ASHWINI	13:36:41.400			VISHAKHA	00:00:00.000	
118	28-04-1900	Saturday	BHARNI	01:36:41.400					
119	29-04-1900	Sunday	KRUTIKA	01:36:41.400					
120	30-04-1900	Monday	ROHINI	13:36:41.400					
121	01-05-1900	Tuesday	MRUGSHI RSH	13:36:41.400					
122	02-05-1900	Wednesda	ADRA	01:36:41.400					
123	03-05-1900	Thursday	PUNARVA SU	13:36:41.400					
124	04-05-1900	Friday	PUSHYA	13:36:41.400					
125	05-05-1900	Saturday	ASHLESHA	01:36:41.400					
126	06-05-1900	Sunday	MAGHA	01:36:41.400					
127	07-05-1900	Monday	P.FALGUN I	01:36:41.400					
128	08-05-1900	Tuesday	U.FALGUN I	13:36:41.400					
129	09-05-1900	Wednesda	HASTA	13:36:41.400					
130	10-05-1900	Thursday	CHITRA	13:36:41.400			ANURADH A	09:36:00.000	
131	11-05-1900	Friday	SWATI	01:36:41.400					

132	12-05-1900	Saturday	VISHAKHA	13:36:41.400						
133	13-05-1900	Sunday	ANURADH A	13:36:41.400						
134	14-05-1900	Monday	JYESHTHA	01:36:41.400						
135	15-05-1900	Tuesday	MOOL	01:36:41.400						
136	16-05-1900	Wednesda y	P. SHADHA	01:36:41.400						
137	17-05-1900	Thursday	U. SHADHA	13:36:41.400	ABHIJIT	21:08:01.680	JYESHTHA	02:24:00.000		
138	18-05-1900	Friday	SHRAVAN	21:08:01.680						
139	19-05-1900	Saturday	DHANISHT HA	21:08:01.680						
140	20-05-1900	Sunday	SHATBHIS HA	09:08:01.680						
141	21-05-1900	Monday	P. BHADRAP ADA	09:08:01.680						
142	22-05-1900	Tuesday	U. BHADRAP ADA	21:08:01.680						
143	23-05-1900	Wednesda	REVTI	21:08:01.680						
144	24-05-1900	Thursday	ASHWINI	21:08:01.680						
145	25-05-1900	Friday	BHARNI	09:08:01.680						
146	26-05-1900	Saturday	KRUTIKA	09:08:01.680						

147	27-05-1900	Sunday	ROHINI	21:08:01.680					
148	28-05-1900	Monday	MRUGSHI RSH	21:08:01.680					
149	29-05-1900	Tuesday	ADRA	09:08:01.680					
150	30-05-1900	Wednesda y	PUNARVA SU	21:08:01.680	MOOL			12:00:00.000	
151	31-05-1900	Thursday	PUSHYA	21:08:01.680					
152	01-06-1900	Friday	ASHLESHA	09:08:01.680					
153	02-06-1900	Saturday	MAGHA	09:08:01.680					
154	03-06-1900	Sunday	P.FALGUN I	09:08:01.680					
155	04-06-1900	Monday	U.FALGUN I	21:08:01.680					
156	05-06-1900	Tuesday	HASTA	21:08:01.680					
157	06-06-1900	Wednesda	CHITRA	21:08:01.680					
158	07-06-1900	Thursday	SWATI	09:08:01.680					
159	08-06-1900	Friday	VISHAKHA	21:08:01.680					
160	09-06-1900	Saturday	ANURADH A	21:08:01.680					
161	10-06-1900	Sunday	JYESTHA	09:08:01.680					

162	11-06-1900	Monday	MOOL	09:08:01.680						
163	12-06-1900	Tuesday	P. SHADHA	09:08:01.680					P. SHADHA	21:36:00.000
164	13-06-1900	Wednesday	U. SHADHA	21:08:01.680						
165	14-06-1900	Thursday	ABHIJIT	04:39:21.960						
166	15-06-1900	Friday	SHRAVAN	04:39:21.960						
167	16-06-1900	Saturday	DHANISHT HA	04:39:21.960	SHATBHS HA				16:39:21.960	
168	17-06-1900	Sunday	P. BHADRAP ADA	16:39:21.960						
169	18-06-1900	Monday								
170	19-06-1900	Tuesday	U. BHADRAP ADA	04:39:21.960						
171	20-06-1900	Wednesday	REVTI	04:39:21.960						
172	21-06-1900	Thursday	ASHWINI	04:39:21.960	BHARNI				16:39:21.960	
173	22-06-1900	Friday	KRUTIKA	16:39:21.960						
174	23-06-1900	Saturday								
175	24-06-1900	Sunday	ROHINI	04:39:21.960						
176	25-06-1900	Monday	MIRUGSHI RSH	04:39:21.960	ADRA				16:39:21.960	



192	11-07-1900	Wednesday	U. SHADHA	04:39:21.960	ABHIJIT	12:10:42.240		
193	12-07-1900	Thursday	SHRAVAN	12:10:42.240				
194	13-07-1900	Friday	DHANISHT HA	12:10:42.240				
195	14-07-1900	Saturday	SHATBHIS HA	00:10:42.240				
196	15-07-1900	Sunday	P. BHADRAP ADA	00:10:42.240				
197	16-07-1900	Monday	U. BHADRAP ADA	12:10:42.240				
198	17-07-1900	Tuesday	REVTI	12:10:42.240				
199	18-07-1900	Wednesday	ASHWINI	12:10:42.240				
200	19-07-1900	Thursday	BHARNI	00:10:42.240				
201	20-07-1900	Friday	KRUTIKA	00:10:42.240		SHRAVAN 14:24:00.000		
202	21-07-1900	Saturday	ROHINI	12:10:42.240				
203	22-07-1900	Sunday	MRUGSHI RSH	12:10:42.240				
204	23-07-1900	Monday	ADRA	00:10:42.240				
205	24-07-1900	Tuesday	PUNARVA SU	12:10:42.240				
206	25-07-1900	Wednesday	PUSHYA	12:10:42.240				

207	26-07-1900	Thursday	ASHLESHA	00:10:42.240						
208	27-07-1900	Friday	MAGHA	00:10:42.240						
209	28-07-1900	Saturday	P.FALGUN	00:10:42.240						
210	29-07-1900	Sunday	U.FALGUN	12:10:42.240						
211	30-07-1900	Monday	HASTA	12:10:42.240						
212	31-07-1900	Tuesday	CHITRA	12:10:42.240						
213	01-08-1900	Wednesday	SWATI	00:10:42.240						
214	02-08-1900	Thursday	VISHAKHA	12:10:42.240						
215	03-08-1900	Friday	ANURADH A	12:10:42.240				DHANISHT HA	00:00:00.000	
216	04-08-1900	Saturday	JVESHTHA	00:10:42.240						
217	05-08-1900	Sunday	MOOL	00:10:42.240						
218	06-08-1900	Monday	P. SHADHA	00:10:42.240						
219	07-08-1900	Tuesday	U. SHADHA	12:10:42.240	ABHIJIT	19:42:02.520				
220	08-08-1900	Wednesday	SHRAVAN	19:42:02.520						

221	09-08-1900	Thursday	DHANISHT HA	19:42:02.520			SHATBHS HA	16:48:00.000	
222	10-08-1900	Friday	SHATBHS HA	07:42:02.520					
223	11-08-1900	Saturday	P. BHADRAP ADA	07:42:02.520					
224	12-08-1900	Sunday	U. BHADRAP ADA	19:42:02.520					
225	13-08-1900	Monday	REVTI	19:42:02.520					
226	14-08-1900	Tuesday	ASHWINI	19:42:02.520					
227	15-08-1900	Wednesda	BHARNI	07:42:02.520					
228	16-08-1900	Thursday	KRUTIKA	07:42:02.520					
229	17-08-1900	Friday	ROHINI	19:42:02.520					
230	18-08-1900	Saturday	MRUGSHI RSH	19:42:02.520					
231	19-08-1900	Sunday	ADRA	07:42:02.520					
232	20-08-1900	Monday	PUNARVA SU	19:42:02.520					
233	21-08-1900	Tuesday	PUSHYA	19:42:02.520					
234	22-08-1900	Wednesda	ASHLESHA	07:42:02.520					
235	23-08-1900	Thursday	MAGHA	07:42:02.520			P. BHADRAP ADA	02:24:00.000	
236	24-08-1900	Friday	P.FALGUN I	07:42:02.520					

237	25-08-1900	Saturday	U. FALGUN I	19:42:02.520					
238	26-08-1900	Sunday	HASTA	19:42:02.520					
239	27-08-1900	Monday	CHITRA	19:42:02.520					
240	28-08-1900	Tuesday	SWATI	07:42:02.520					
241	29-08-1900	Wednesda	VISHAKHA	19:42:02.520					
242	30-08-1900	Thursday	ANURADH A	19:42:02.520					
243	31-08-1900	Friday	JYESHTHA	07:42:02.520					
244	01-09-1900	Saturday	MOOL	07:42:02.520					
245	02-09-1900	Sunday	P. SHADHA	07:42:02.520					
246	03-09-1900	Monday	U. SHADHA	19:42:02.520					
247	04-09-1900	Tuesday	ABHIJIT	03:13:22.800					
248	05-09-1900	Wednesda	SHRAVAN	03:13:22.800					
249	06-09-1900	Thursday	DHANISHT HA	03:13:22.800	SHATBHIS HA	15:13:22.800			
250	07-09-1900	Friday	P. BHADRAP ADA	15:13:22.800					
251	08-09-1900	Saturday							

252	09-09-1900	Sunday	U. BHADRAP ADA	03:13:22.800					
253	10-09-1900	Monday	REVTI	03:13:22.800					
254	11-09-1900	Tuesday	ASHWINI	03:13:22.800	BHARNI		15:13:22.800		
255	12-09-1900	Wednesday	KRUTIKA	15:13:22.800				U. BHADRAP ADA	04:48:00.000
256	13-09-1900	Thursday							
257	14-09-1900	Friday	ROHINI	03:13:22.800					
258	15-09-1900	Saturday	MRUGSHI RSH	03:13:22.800	ADRA		15:13:22.800		
259	16-09-1900	Sunday							
260	17-09-1900	Monday	PUNARVA SU	03:13:22.800					
261	18-09-1900	Tuesday	PUSHYA	03:13:22.800	ASHLESHA		15:13:22.800		
262	19-09-1900	Wednesday	MAGHA	15:13:22.800					
263	20-09-1900	Thursday	P.FALGUN I	15:13:22.800					
264	21-09-1900	Friday							
265	22-09-1900	Saturday	U.FALGUN I	03:13:22.800					
266	23-09-1900	Sunday	HASTA	03:13:22.800					

267	24-09-1900	Monday	CHITRA	03:13:22.800	SWATI	15:13:22.800		
268	25-09-1900	Tuesday					REVTI	14:24:00.000
269	26-09-1900	Wednesda	VISHAKHA	03:13:22.800				
270	27-09-1900	Thursday	ANURADH A	03:13:22.800	JYESHTHA	15:13:22.800		
271	28-09-1900	Friday	MOOL	15:13:22.800				
272	29-09-1900	Saturday	P. SHADHA	15:13:22.800				
273	30-09-1900	Sunday						
274	01-10-1900	Monday	U.	03:13:22.800	ABHIJIT	10:44:43.080		
275	02-10-1900	Tuesday	SHRAVAN	10:44:43.080				
276	03-10-1900	Wednesda y	DHANISHT HA	10:44:43.080	SHATBHIS HA	22:44:43.080		
277	04-10-1900	Thursday	P. BHADRAP ADA	22:44:43.080				
278	05-10-1900	Friday						
279	06-10-1900	Saturday	U. BHADRAP ADA	10:44:43.080				
280	07-10-1900	Sunday	REVTI	10:44:43.080				
281	08-10-1900	Monday	ASHWINI	10:44:43.080	BHARNI	22:44:43.080		

282	09-10-1900	Tuesday	KRUTIKA	22:44:43.080			ASHWINI	00:00:00.000
283	10-10-1900	Wednesday						
284	11-10-1900	Thursday	ROHINI	10:44:43.080				
285	12-10-1900	Friday	MRUGSHI RSH	10:44:43.080	ADRA	22:44:43.080		
286	13-10-1900	Saturday						
287	14-10-1900	Sunday	PUNARVA SU	10:44:43.080				
288	15-10-1900	Monday	PUSHYA	10:44:43.080	ASHLESHA	22:44:43.080	BHARNI	16:48:00.000
289	16-10-1900	Tuesday	MAGHA	22:44:43.080				
290	17-10-1900	Wednesday	P.FALGUN I	22:44:43.080				
291	18-10-1900	Thursday						
292	19-10-1900	Friday	U.FALGUN I	10:44:43.080				
293	20-10-1900	Saturday	HASTA	10:44:43.080				
294	21-10-1900	Sunday	CHITRA	10:44:43.080	SWATI	22:44:43.080		
295	22-10-1900	Monday						
296	23-10-1900	Tuesday	VISHAKHA	10:44:43.080				

297	24-10-1900	Wednesday	ANURADH A	10:44:43.080	JYESHTHA	22:44:43.080		
298	25-10-1900	Thursday	MOOL	22:44:43.080				
299	26-10-1900	Friday	P. SHADHA	22:44:43.080				
300	27-10-1900	Saturday						
301	28-10-1900	Sunday	U. SHADHA	10:44:43.080	ABHIJIT	18:16:03.360		
302	29-10-1900	Monday	SHRAVAN	18:16:03.360			KRUTIKA	02:24:00.000
303	30-10-1900	Tuesday	DHANISHT HA	18:16:03.360				
304	31-10-1900	Wednesday	SHATBHS HA	06:16:03.360				
305	01-11-1900	Thursday	P. BHADRAP ADA	06:16:03.360				
306	02-11-1900	Friday	U. BHADRAP ADA	18:16:03.360				
307	03-11-1900	Saturday	REVTI	18:16:03.360				
308	04-11-1900	Sunday	ASHWINI	18:16:03.360				
309	05-11-1900	Monday	BHARNI	06:16:03.360				
310	06-11-1900	Tuesday	KRUTIKA	06:16:03.360				
311	07-11-1900	Wednesday	ROHINI	18:16:03.360				

312	08-11-1900	Thursday	MRUGSHI RSH	18:16:03.360					
313	09-11-1900	Friday	ADRA	06:16:03.360					
314	10-11-1900	Saturday	PUNARVA SU	18:16:03.360					
315	11-11-1900	Sunday	PUSHYA	18:16:03.360					
316	12-11-1900	Monday	ASHLESHA	06:16:03.360					
317	13-11-1900	Tuesday	MAGHA	06:16:03.360					
318	14-11-1900	Wednesday	P.FALGUN	06:16:03.360					
319	15-11-1900	Thursday	U.FALGUN	18:16:03.360					
320	16-11-1900	Friday	HASTA	18:16:03.360					
321	17-11-1900	Saturday	CHITRA	18:16:03.360					
322	18-11-1900	Sunday	SWATI	06:16:03.360			ROHINI	04:48:00.000	
323	19-11-1900	Monday	VISHAKHA	18:16:03.360					
324	20-11-1900	Tuesday	ANURADH A	18:16:03.360					
325	21-11-1900	Wednesday	JYESTHA	06:16:03.360					
326	22-11-1900	Thursday	MOOL	06:16:03.360					

327	23-11-1900	Friday	P. SHADHA	06:16:03.360						
328	24-11-1900	Saturday	U. SHADHA	18:16:03.360						
329	25-11-1900	Sunday	ABHIJIT	01:47:23.640						
330	26-11-1900	Monday	SHRAVAN	01:47:23.640						
331	27-11-1900	Tuesday	DHANISHT HA	01:47:23.640	SHATBHIS HA	13:47:23.640				
332	28-11-1900	Wednesda y	P. BHADRAP ADA	13:47:23.640						
333	29-11-1900	Thursday								
334	30-11-1900	Friday	U. BHADRAP ADA	01:47:23.640						
335	01-12-1900	Saturday	REVTI	01:47:23.640			MRUGSHI RSH	14:24:00.000		
336	02-12-1900	Sunday	ASHWINI	01:47:23.640	BHARNI	13:47:23.640				
337	03-12-1900	Monday	KRUTIKA	13:47:23.640						
338	04-12-1900	Tuesday								
339	05-12-1900	Wednesda	ROHINI	01:47:23.640						
340	06-12-1900	Thursday	MRUGSHI RSH	01:47:23.640	ADRA	13:47:23.640				
341	07-12-1900	Friday								

342	08-12-1900	Saturday	PUNARVA SU	01:47:23.640			ADRA	07:12:00.000	
343	09-12-1900	Sunday	PUSHYA	01:47:23.640	ASHLESHA	13:47:23.640			
344	10-12-1900	Monday	MAGHA	13:47:23.640					
345	11-12-1900	Tuesday	P.FALGUN I	13:47:23.640					
346	12-12-1900	Wednesda							
347	13-12-1900	Thursday	U.FALGUN I	01:47:23.640					
348	14-12-1900	Friday	HASTA	01:47:23.640					
349	15-12-1900	Saturday	CHITRA	01:47:23.640	SWATI	13:47:23.640			
350	16-12-1900	Sunday							
351	17-12-1900	Monday	VISHAKHA	01:47:23.640					
352	18-12-1900	Tuesday	ANURADH A	01:47:23.640	JYESHTHA	13:47:23.640			
353	19-12-1900	Wednesda	MOOL	13:47:23.640					
354	20-12-1900	Thursday	P. SHADHA	13:47:23.640					
355	21-12-1900	Friday							
356	22-12-1900	Saturday	U. SHADHA	01:47:23.640	ABHIJIT	09:18:43.920			

357	23-12-1900	Sunday	SHRAVAN	09:18:43.920						
358	24-12-1900	Monday	DHANISHT HA	09:18:43.920	SHATBHS HA	21:18:43.920				
359	25-12-1900	Tuesday	P. BHADRAP ADA	21:18:43.920						
360	26-12-1900	Wednesda								
361	27-12-1900	Thursday	U. BHADRAP ADA	09:18:43.920						
362	28-12-1900	Friday	REVTI	09:18:43.920			PUNARVA SU	09:36:00.000		
363	29-12-1900	Saturday	ASHWINI	09:18:43.920	BHARNI	21:18:43.920				
364	30-12-1900	Sunday	KRUTIKA	21:18:43.920						
365	31-12-1900	Monday								
366	01-01-1901	Tuesday	ROHINI	09:18:43.920						सूर्य सायन वर्ष समाप्त 06:09:09.8490000, सूर्य दक्षिणायन शरु 05:48:45.2160000
367	02-01-1901	Wednesda Y	MRUGSHI RSH	09:18:43.920	ADRA	21:18:43.920				

शास्त्रपाठ के अनुसार एक वर्ष का चन्द्र-सूर्य का नक्षत्र का गणित (संस्कार रहित)

नोट: अन्त समय में यूरोपिय प्लस काल से योग्य समय मिलेगा, तारीख वार समझने के लिये है। इ.स. १९०० का यह पंचांग नहीं है।

No.	Date	Weekday	Moon Nakashatra a 1	EndTime	Moon Nakashatra 2	EndTime	Sun Nakashatra a	EndTime	Remark
1	01-01-1900	Monday	ABHIJIT	07:31:28.441					सूर्य दक्षिणायन शर 00:00:00.00000 00
2	02-01-1900	Tuesday	SHRAVAN	07:31:54.477					
3	03-01-1900	Wednesday	DHANISHTHA	07:32:20.513	SHATBHI SHA	19:32:33.532			
4	04-01-1900	Thursday	P. BHADRAP ADA	19:32:59.568					
5	05-01-1900	Friday							
6	06-01-1900	Saturday	U. BHADRAP ADA	07:33:38.623					
7	07-01-1900	Sunday	REVTI	07:34:04.659					
8	08-01-1900	Monday	ASHWINI	07:34:30.696	BHARNI	19:34:43.714			
9	09-01-1900	Tuesday	KRUTIKA	19:35:09.750			PUSHYA	18:46:37.773	
10	10-01-1900	Wednesday							
11	11-01-1900	Thursday	ROHINI	07:35:48.805					

12	12-01-1900	Friday	MRUGSHI RSH	07:36:14.841	ADRA	19:36:27.859		
13	13-01-1900	Saturday						
14	14-01-1900	Sunday	PUNARVA SU	07:37:06.914				
15	15-01-1900	Monday	PUSHYA	07:37:32.950	ASHLESH A	19:37:45.969		
16	16-01-1900	Tuesday	MAGHA	19:38:12.005			ASHLESHA	11:15:01.628
17	17-01-1900	Wednesday	P.FALGUN I	19:38:38.042				
18	18-01-1900	Thursday						
19	19-01-1900	Friday	U.FALGUN I	07:39:17.096				
20	20-01-1900	Saturday	HASTA	07:39:43.133				
21	21-01-1900	Sunday	CHITRA	07:40:09.169	SWATI	19:40:22.187		
22	22-01-1900	Monday						
23	23-01-1900	Tuesday	VISHAKHA	07:41:01.242				
24	24-01-1900	Wednesday	ANURADH A	07:41:27.278	JYESHTH A	19:41:40.297		
25	25-01-1900	Thursday	MOOL	19:42:06.333				
26	26-01-1900	Friday	P. SHADHA	19:42:32.369				



42	11-02-1900	Sunday	PUSHYA	15:20:44.375						
43	12-02-1900	Monday	ASHLESHA	03:20:57.393				P.FALGUN	05:08:37.048	
44	13-02-1900	Tuesday	MAGHA	03:21:23.429				I		
45	14-02-1900	Wednesday	P.FALGUN	03:21:49.466						
46	15-02-1900	Thursday	U.FALGUN	15:22:28.520						
47	16-02-1900	Friday	HASTA	15:22:54.557						
48	17-02-1900	Saturday	CHITRA	15:23:20.593						
49	18-02-1900	Sunday	SWATI	03:23:33.611						
50	19-02-1900	Monday	VISHAKHA	15:24:12.666						
51	20-02-1900	Tuesday	ANURADH A	15:24:38.702						
52	21-02-1900	Wednesday	JYESHTHA	03:24:51.721						
53	22-02-1900	Thursday	MOOL	03:25:17.757						
54	23-02-1900	Friday	P. SHADHA	03:25:43.793						
55	24-02-1900	Saturday	U. SHADHA	15:26:22.848	ABHIJIT				22:57:51.289	
56	25-02-1900	Sunday	SHRAVAN	22:58:17.325						

57	26-02-1900	Monday	DHANISHT HA	22:58:43.361						
58	27-02-1900	Tuesday	SHATBHS HA	10:58:56.380						
59	28-02-1900	Wednesday	P. BHADRAP ADA	10:59:22.416						
60	01-03-1900	Thursday	U. BHADRAP ADA	23:00:01.471						
61	02-03-1900	Friday	REVTI	23:00:27.507						
62	03-03-1900	Saturday	ASHWINI	23:00:53.544						
63	04-03-1900	Sunday	BHARNI	11:01:06.562					U.FALGUN	06:33:48.613
64	05-03-1900	Monday	KRUTIKA	11:01:32.598					I	
65	06-03-1900	Tuesday	ROHINI	23:02:11.653						
66	07-03-1900	Wednesday	MRUGSHI RSH	23:02:37.689						
67	08-03-1900	Thursday	ADRA	11:02:50.707						
68	09-03-1900	Friday	PUNARVA SU	23:03:29.762						
69	10-03-1900	Saturday	PUSHYA	23:03:55.799						
70	11-03-1900	Sunday	ASHLESHA	11:04:08.817						
71	12-03-1900	Monday	MAGHA	11:04:34.853						

72	13-03-1900	Tuesday	P.FALGUN I	11:05:00.890						
73	14-03-1900	Wednesday	U.FALGUN I	23:05:39.944						
74	15-03-1900	Thursday	HASTA	23:06:05.981						
75	16-03-1900	Friday	CHITRA	23:06:32.017						
76	17-03-1900	Saturday	SWATI	11:06:45.035			HASTA		15:30:36.324	
77	18-03-1900	Sunday	VISHAKHA	23:07:24.090						
78	19-03-1900	Monday	ANURADH A	23:07:50.126						
79	20-03-1900	Tuesday	JYESHTHA	11:08:03.145						
80	21-03-1900	Wednesday	MOOL	11:08:29.181						
81	22-03-1900	Thursday	P. SHADHA	11:08:55.217						
82	23-03-1900	Friday	U. SHADHA	23:09:34.272						
83	24-03-1900	Saturday	ABHIJIT	06:41:02.713						
84	25-03-1900	Sunday	SHRAVAN	06:41:28.749						
85	26-03-1900	Monday	DHANISHT HA	06:41:54.785	SHATBHI SHA	18:42:07.804				
86	27-03-1900	Tuesday	P. BHADRAP ADA	18:42:33.840						



102	12-04-1900	Thursday	HASTA	06:49:17.405					
103	13-04-1900	Friday	CHITRA	06:49:43.441	SWATI	18:49:56.459			
104	14-04-1900	Saturday							
105	15-04-1900	Sunday	VISHAKHA	06:50:35.514					
106	16-04-1900	Monday	ANURADH A	06:51:01.550	JYESHTH A	18:51:14.569			
107	17-04-1900	Tuesday	MOOL	18:51:40.605					
108	18-04-1900	Wednesday	P. SHADHA	18:52:06.641					
109	19-04-1900	Thursday							
110	20-04-1900	Friday	U. SHADHA	06:52:45.696	ABHIJIT	14:24:14.137			
111	21-04-1900	Saturday	SHRAVAN	14:24:40.173					
112	22-04-1900	Sunday	DHANISHT HA	14:25:06.209					
113	23-04-1900	Monday	SHATBHIS HA	02:25:19.228					
114	24-04-1900	Tuesday	P. BHADRAP ADA	02:25:45.264					
115	25-04-1900	Wednesday	U. BHADRAP ADA	14:26:24.319					
116	26-04-1900	Thursday	REVTI	14:26:50.355			VISHAKHA	18:20:59.454	

117	27-04-1900	Friday	ASHWINI	14:27:16.392					
118	28-04-1900	Saturday	BHARNI	02:27:29.410					
119	29-04-1900	Sunday	KRUTIKA	02:27:55.446					
120	30-04-1900	Monday	ROHINI	14:28:34.501					
121	01-05-1900	Tuesday	MRUGSHI RSH	14:29:00.537					
122	02-05-1900	Wednesday	ADRA	02:29:13.555					
123	03-05-1900	Thursday	PUNARVA SU	14:29:52.610					
124	04-05-1900	Friday	PUSHYA	14:30:18.647					
125	05-05-1900	Saturday	ASHLESHA	02:30:31.665					
126	06-05-1900	Sunday	MAGHA	02:30:57.701					
127	07-05-1900	Monday	P.FALGUN I	02:31:23.738					
128	08-05-1900	Tuesday	U.FALGUN I	14:32:02.792					
129	09-05-1900	Wednesday	HASTA	14:32:28.829					
130	10-05-1900	Thursday	CHITRA	14:32:54.865				ANURADH A	03:17:47.164
131	11-05-1900	Friday	SWATI	02:33:07.883					



147	27-05-1900	Sunday	ROHINI	22:11:45.925					
148	28-05-1900	Monday	MRUGSHI RSH	22:12:11.961					
149	29-05-1900	Tuesday	ADRA	10:12:24.979					
150	30-05-1900	Wednesday	PUNARVA SU	22:13:04.034	MOOL			04:42:58.729	
151	31-05-1900	Thursday	PUSHYA	22:13:30.071					
152	01-06-1900	Friday	ASHLESHA	10:13:43.089					
153	02-06-1900	Saturday	MAGHA	10:14:09.125					
154	03-06-1900	Sunday	P.FALGUN I	10:14:35.162					
155	04-06-1900	Monday	U.FALGUN I	22:15:14.216					
156	05-06-1900	Tuesday	HASTA	22:15:40.253					
157	06-06-1900	Wednesday	CHITRA	22:16:06.289					
158	07-06-1900	Thursday	SWATI	10:16:19.307					
159	08-06-1900	Friday	VISHAKHA	22:16:58.362					
160	09-06-1900	Saturday	ANURADH A	22:17:24.398					
161	10-06-1900	Sunday	JYESTHA	10:17:37.417					

162	11-06-1900	Monday	MOOL	10:18:03.453					
163	12-06-1900	Tuesday	P. SHADHA	10:18:29.489			P. SHADHA	13:39:46.439	
164	13-06-1900	Wednesday	U. SHADHA	22:19:08.544					
165	14-06-1900	Thursday	ABHIJIT	05:50:36.985					
166	15-06-1900	Friday	SHRAVAN	05:51:03.021					
167	16-06-1900	Saturday	DHANISHT HA	05:51:29.057	SHATBHI SHA	17:51:42.076			
168	17-06-1900	Sunday	P. BHADRAP ADA	17:52:08.112					
169	18-06-1900	Monday							
170	19-06-1900	Tuesday	U. BHADRAP ADA	05:52:47.167					
171	20-06-1900	Wednesday	REVTI	05:53:13.203					
172	21-06-1900	Thursday	ASHWINI	05:53:39.240	BHARNI	17:53:52.258			
173	22-06-1900	Friday	KRUTIKA	17:54:18.294					
174	23-06-1900	Saturday							
175	24-06-1900	Sunday	ROHINI	05:54:57.349					
176	25-06-1900	Monday	MRUGSHI RSH	05:55:23.385	ADRA	17:55:36.403			



192	11-07-1900	Wednesday	U. SHADHA	06:02:19.968	ABHIJIT	13:33:48.409		
193	12-07-1900	Thursday	SHRAVAN	13:34:14.445				
194	13-07-1900	Friday	DHANISHT HA	13:34:40.481				
195	14-07-1900	Saturday	SHATBHS HA	01:34:53.500				
196	15-07-1900	Sunday	P. BHADRAP ADA	01:35:19.536				
197	16-07-1900	Monday	U. BHADRAP ADA	13:35:58.591				
198	17-07-1900	Tuesday	REVTI	13:36:24.627				
199	18-07-1900	Wednesday	ASHWINI	13:36:50.664				
200	19-07-1900	Thursday	BHARNI	01:37:03.682				
201	20-07-1900	Friday	KRUTIKA	01:37:29.718				
202	21-07-1900	Saturday	ROHINI	13:38:08.773			SHRAVAN	04:37:28.429
203	22-07-1900	Sunday	MRUGSHI RSH	13:38:34.809				
204	23-07-1900	Monday	ADRA	01:38:47.827				
205	24-07-1900	Tuesday	PUNARVA SU	13:39:26.882				
206	25-07-1900	Wednesday	PUSHYA	13:39:52.919				

207	26-07-1900	Thursday	ASHLESHA	01:40:05.937								
208	27-07-1900	Friday	MAGHA	01:40:31.973								
209	28-07-1900	Saturday	P.FALGUN	01:40:58.010								
210	29-07-1900	Sunday	U.FALGUN	13:41:37.064								
211	30-07-1900	Monday	HASTA	13:42:03.101								
212	31-07-1900	Tuesday	CHITRA	13:42:29.137								
213	01-08-1900	Wednesday	SWATI	01:42:42.155								
214	02-08-1900	Thursday	VISHAKHA	13:43:21.210						DHANISHT HA	13:34:16.139	
215	03-08-1900	Friday	ANURADH A	13:43:47.246								
216	04-08-1900	Saturday	JYESHTHA	01:44:00.265								
217	05-08-1900	Sunday	MOOL	01:44:26.301								
218	06-08-1900	Monday	P. SHADHA	01:44:52.337								
219	07-08-1900	Tuesday	U. SHADHA	13:45:31.392	ABHIJIT	21:16:59.833						
220	08-08-1900	Wednesday	SHRAVAN	21:17:25.869								

221	09-08-1900	Thursday	DHANISHT HA	21:17:51.905			SHATBHS HA	06:02:39.994	
222	10-08-1900	Friday	SHATBHS HA	09:18:04.924					
223	11-08-1900	Saturday	P. BHADRAP ADA	09:18:30.960					
224	12-08-1900	Sunday	U. BHADRAP ADA	21:19:10.015					
225	13-08-1900	Monday	REVTI	21:19:36.051					
226	14-08-1900	Tuesday	ASHWINI	21:20:02.088					
227	15-08-1900	Wednesday	BHARNI	09:20:15.106					
228	16-08-1900	Thursday	KRUTIKA	09:20:41.142					
229	17-08-1900	Friday	ROHINI	21:21:20.197					
230	18-08-1900	Saturday	MRUGSHI RSH	21:21:46.233					
231	19-08-1900	Sunday	ADRA	09:21:59.251					
232	20-08-1900	Monday	PUNARVA SU	21:22:38.306					
233	21-08-1900	Tuesday	PUSHYA	21:23:04.343					
234	22-08-1900	Wednesday	ASHLESHA	09:23:17.361			P. BHADRAP ADA	14:59:27.704	
235	23-08-1900	Thursday	MAGHA	09:23:43.397					
236	24-08-1900	Friday	P.FALGUN I	09:24:09.434					

237	25-08-1900	Saturday	U.FALGUN I	21:24:48.488					
238	26-08-1900	Sunday	HASTA	21:25:14.525					
239	27-08-1900	Monday	CHITRA	21:25:40.561					
240	28-08-1900	Tuesday	SWATI	09:25:53.579					
241	29-08-1900	Wednesday	VISHAKHA	21:26:32.634					
242	30-08-1900	Thursday	ANURADH A	21:26:58.670					
243	31-08-1900	Friday	JYESTHA	09:27:11.689					
244	01-09-1900	Saturday	MOOL	09:27:37.725					
245	02-09-1900	Sunday	P. SHADHA	09:28:03.761					
246	03-09-1900	Monday	U. SHADHA	21:28:42.816					
247	04-09-1900	Tuesday	ABHIJIT	05:00:11.257					
248	05-09-1900	Wednesday	SHRAVAN	05:00:37.293					
249	06-09-1900	Thursday	DHANISHT HA	05:01:03.329	SHATBHI SHA	17:01:16.348			
250	07-09-1900	Friday	P. BHADRAP ADA	17:01:42.384					
251	08-09-1900	Saturday							

252	09-09-1900	Sunday	U. BHADRAP ADA	05:02:21.439							
253	10-09-1900	Monday	REVTI	05:02:47.475							
254	11-09-1900	Tuesday	ASHWINI	05:03:13.512	BHARNI	17:03:26.530	U. BHADRAP ADA	16:24:39.269			
255	12-09-1900	Wednesday	KRUTIKA	17:03:52.566							
256	13-09-1900	Thursday									
257	14-09-1900	Friday	ROHINI	05:04:31.621							
258	15-09-1900	Saturday	MIRUGSHI RSH	05:04:57.657	ADRA	17:05:10.675					
259	16-09-1900	Sunday									
260	17-09-1900	Monday	PUNARVA SU	05:05:49.730							
261	18-09-1900	Tuesday	PUSHYA	05:06:15.767	ASHLESH A	17:06:28.785					
262	19-09-1900	Wednesday	MAGHA	17:06:54.821							
263	20-09-1900	Thursday	P.FALGUN I	17:07:20.858							
264	21-09-1900	Friday									
265	22-09-1900	Saturday	U.FALGUN I	05:07:59.912							
266	23-09-1900	Sunday	HASTA	05:08:25.949							

267	24-09-1900	Monday	CHITRA	05:08:51.985	SWATI	17:09:05.003		
268	25-09-1900	Tuesday					REVTI	01:21:26.979
269	26-09-1900	Wednesday	VISHAKHA	05:09:44.058				
270	27-09-1900	Thursday	ANURADH A	05:10:10.094	JYESHTH A	17:10:23.113		
271	28-09-1900	Friday	MOOL	17:10:49.149				
272	29-09-1900	Saturday	P. SHADHA	17:11:15.185				
273	30-09-1900	Sunday						
274	01-10-1900	Monday	U. SHADHA	05:11:54.240	ABHIJIT	12:43:22.681		
275	02-10-1900	Tuesday	SHRAVAN	12:43:48.717				
276	03-10-1900	Wednesday	DHANISHT HA	12:44:14.753				
277	04-10-1900	Thursday	SHATBHS HA	00:44:27.772				
278	05-10-1900	Friday	P. BHADRAP ADA	00:44:53.808				
279	06-10-1900	Saturday	U. BHADRAP ADA	12:45:32.863				
280	07-10-1900	Sunday	REVTI	12:45:58.899				
281	08-10-1900	Monday	ASHWINI	12:46:24.936			ASHWINI	10:18:14.689



297	24-10-1900	Wednesday	ANURADH A	12:53:21.518					
298	25-10-1900	Thursday	JYESTHA	00:53:34.537					
299	26-10-1900	Friday	MOOL	00:54:00.573					
300	27-10-1900	Saturday	P. SHADHA	00:54:26.609					
301	28-10-1900	Sunday	U. SHADHA	12:55:05.664	ABHIJIT	20:26:34.105	KRUTIKA	11:43:26.254	
302	29-10-1900	Monday	SHRAVAN	20:27:00.141					
303	30-10-1900	Tuesday	DHANISHT HA	20:27:26.177					
304	31-10-1900	Wednesday	SHATBHS HA	08:27:39.196					
305	01-11-1900	Thursday	P. BHADRAP ADA	08:28:05.232					
306	02-11-1900	Friday	U. BHADRAP ADA	20:28:44.287					
307	03-11-1900	Saturday	REVTI	20:29:10.323					
308	04-11-1900	Sunday	ASHWINI	20:29:36.360					
309	05-11-1900	Monday	BHARNI	08:29:49.378					
310	06-11-1900	Tuesday	KRUTIKA	08:30:15.414					
311	07-11-1900	Wednesday	ROHINI	20:30:54.469					

312	08-11-1900	Thursday	MRUGSHI RSH	20:31:20.505					
313	09-11-1900	Friday	ADRA	08:31:33.523					
314	10-11-1900	Saturday	PUNARVA SU	20:32:12.578					
315	11-11-1900	Sunday	PUSHYA	20:32:38.615					
316	12-11-1900	Monday	ASHLESHA	08:32:51.633					
317	13-11-1900	Tuesday	MAGHA	08:33:17.669					
318	14-11-1900	Wednesday	P.FALGUN I	08:33:43.706					
319	15-11-1900	Thursday	U.FALGUN I	20:34:22.760					
320	16-11-1900	Friday	HASTA	20:34:48.797					
321	17-11-1900	Saturday	CHITRA	20:35:14.833				ROHINI	13:08:37.819
322	18-11-1900	Sunday	SWATI	08:35:27.851					
323	19-11-1900	Monday	VISHAKHA	20:36:06.906					
324	20-11-1900	Tuesday	ANURADHI A	20:36:32.942					
325	21-11-1900	Wednesday	JYESTHA	08:36:45.961					
326	22-11-1900	Thursday	MOOL	08:37:11.997					

327	23-11-1900	Friday	P. SHADHA	08:37:38.033					
328	24-11-1900	Saturday	U. SHADHA	20:38:17.088					
329	25-11-1900	Sunday	ABHIJIT	04:09:45.529					
330	26-11-1900	Monday	SHRAVAN	04:10:11.565					
331	27-11-1900	Tuesday	DHANISHT HA	04:10:37.601	SHATBHI SHA	16:10:50.620			
332	28-11-1900	Wednesday	P. BHADRAP ADA	16:11:16.656					
333	29-11-1900	Thursday							
334	30-11-1900	Friday	U. BHADRAP ADA	04:11:55.711				MRUGSHI RSH	22:05:25.530
335	01-12-1900	Saturday	REVTI	04:12:21.747					
336	02-12-1900	Sunday	ASHWINI	04:12:47.784	BHARNI	16:13:00.802			
337	03-12-1900	Monday	KRUTIKA	16:13:26.838					
338	04-12-1900	Tuesday							
339	05-12-1900	Wednesday	ROHINI	04:14:05.893					
340	06-12-1900	Thursday	MRUGSHI RSH	04:14:31.929	ADRA	16:14:44.947			
341	07-12-1900	Friday						ADRA	14:33:49.385

342	08-12-1900	Saturday	PUNARVA SU	04:15:24.002					
343	09-12-1900	Sunday	PUSHYA	04:15:50.039	ASHLESH A	16:16:03.057			
344	10-12-1900	Monday	MAGHA	16:16:29.093					
345	11-12-1900	Tuesday	P.FALGUN I	16:16:55.130					
346	12-12-1900	Wednesday							
347	13-12-1900	Thursday	U.FALGUN I	04:17:34.184					
348	14-12-1900	Friday	HASTA	04:18:00.221					
349	15-12-1900	Saturday	CHITRA	04:18:26.257	SWATI	16:18:39.275			
350	16-12-1900	Sunday							
351	17-12-1900	Monday	VISHAKHA	04:19:18.330					
352	18-12-1900	Tuesday	ANURADH A	04:19:44.366	JYESHTH A	16:19:57.385			
353	19-12-1900	Wednesday	MOOL	16:20:23.421					
354	20-12-1900	Thursday	P. SHADHA	16:20:49.457					
355	21-12-1900	Friday							
356	22-12-1900	Saturday	U. SHADHA	04:21:28.512	ABHIJIT	11:52:56.953			





खगोल से सम्बन्धित अतिप्राचीन ग्रन्थ 'वेदांग ज्योतिष'की टीका की रचना करते हुए शामशास्त्री जी कहते हैं:

**'सूर्यप्रज्ञप्ति सुभाषितैस्समुच्चयैरम्लानमाला कृतां  
धृत्वा मूर्ध्नि कृतो मयाऽस्य विवृतौ यत्नस्सतां सम्मुदे ॥ १४ ॥'**

सूर्यप्रज्ञप्ति के सुभाषितों के संग्रह द्वारा विकसित माला को मस्तक पर धारण करके सज्जनों के आनन्द हेतु मेरे द्वारा इसकी (वेदांग ज्योतिष की) टीका में यत्न किया गया है।

बस ऐसे आदरणीय सूर्यप्रज्ञप्ति आदि गणितानुयोग के ग्रन्थों में आने वाली नक्षत्र विषय से सम्बन्धित जानकारी का समन्वय अर्थात्

### **नक्षत्र मीमांसा**

